



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग H—खण्ड 3—उण-खण्ड (i)

PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 597]

नई दिल्ली, बृहस्पतिवार, अक्टूबर 15, 2009/आश्विन 23, 1931

No. 597]

NEW DELHI, THURSDAY, OCTOBER 15, 2009/ASVINA 23, 1931

रक्षोपाय महानिदेशक का कार्यालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 15 अक्टूबर, 2009

प्रारंभिक जाँच परिणाम

विषय : भारत में कास्टिक सोडा के आयातों से संबंधित रक्षोपाय शुल्क संबंधी जाँच।

सा.का.नि. 754(अ).—सीमा-शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 और उसके अंतर्गत बनाए गए सीमाशुल्क (रक्षोपाय शुल्क की पहचान एवं आकलन) नियम, 1997 को ध्यान में रखते हुए :

प्रक्रिया

1. भारत में कास्टिक सोडा के आयातों पर रक्षोपाय शुल्क के अधिरोपण हेतु अल्कली मैन्यूफैक्चरर्स एसोसिएशन ऑफ इण्डिया (एएमएआई) द्वारा सीमा-शुल्क टैरिफ (रक्षोपाय शुल्क की पहचान एवं आकलन) नियम, 1997 (जिसे एतद्पश्चात् रक्षोपाय नियमावली कहा गया है) के नियम 5 के अंतर्गत यह आरोप लगाते हुए एक आवेदन प्रस्तुत किया गया था कि कास्टिक सोडा के वर्धित आयातों के कारण भारत में कास्टिक सोडा के घरेलू उत्पादकों को गंभीर क्षति हो रही है एवं/अथवा होने का खतरा है। इस बात से संतुष्ट होकर कि नियम 5 के अंतर्गत अपेक्षाओं को पूरा कर लिया गया है, कास्टिक सोडा के आयातों के बारे में दिनांक 20 अगस्त, 2009 की जांच शुरूआत अधिसूचना, जिसे उसी दिन भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित किया गया था, द्वारा रक्षोपाय जांच शुरू की गई थी।

2. सूचना की एक प्रति प्रमुख निर्यातिक देशों की सरकारों को नई दिल्ली स्थित उनके दूतावासों के माध्यम से भिजवाई गई थी। जांच शुरूआत सूचना की एक-एक प्रति सभी ज्ञात हितबद्ध पक्षकारों, जिनकी सूची निम्नानुसार है, को भी भिजवाई गई थी :—

3. घरेलू उत्पादक

क्र. सं.	इकाई का नाम	फैक्ट्री का पता
1	आदित्य बिरला कैमिकल्स (इंडिया) लि. (पूर्ववर्ती विहार	घनश्याम कुंज, गढ़वा रोड, डाकघर-रेहला-822124 जिला-पलामू, (झारखंड)

	कास्टिक एंड कैमिकल्स लि.)	दूरभाष.: 06584-262211 / 21 / 262488 फैक्स: 06584-262205 ई-मेल: shyam.gupta@adityabirla.com ajay.todi@adityabirla.com
2	आदित्य बिरला नूवो लि.	इंडियन रेयॉन कम्पार्चुअल, वेरावल - 362 266 (गुजरात) दूरभाष: 02876-245711 (ईपीबीएएक्स) फैक्स: 02876-243220/243558 E-mail: irilveraval@adityabirla.com ajay.todi@adityabirla.com
3	अतुल लि.	डाकघर- अतुल- 396020 जिला-वलसाड (गुजरात) दूरभाष: 02632-233261 - 65 फैक्स: 02632-233619 / 375 ई-मेल: vasudev_koppaka@atul.co.in ; pradip_pisharody@atul.co.in
4	सेंचुरी रेयॉन (सेंचुरी टेक्सटाइल्स एंड इंड. लि. का एक प्रभाग)	मुर्बाद रोड, पो.बै. नं. 22, शहाद- 421 103 जिला-थाणे, महाराष्ट्र दूरभाष: 0251-2733670 / 79 फैक्स: 0251-2730064 ई-मेल: cenray@cenrayon.com saluthra@cenrayon.com
5	कैमफैब अल्कलीज लि.	ज्ञानानंद प्लसे, कालापेट पुडुचेरी- 605 014 दूरभाष: 0413-2655111 फैक्स: 0413-2655125 ई-मेल: chemfabalkalis@drroaholdings.com
6	कैमप्लास्ट सन्मार.लि. (कास्टिक क्लोर डिविजन)	फैक्ट्री-I, प्लांट-III, मेट्टूर डैम-636 402 जिला-सेलम (तमिलनाडु) दूरभाष: 04298-230381 - 85 फैक्स: 04298-230394 ई-मेल: spl@sanmargroup.com फैक्ट्री-II मेलावन्जोर, गाँव कराइकल, संघराज्य क्षेत्र पुडुचेरी- 611 002 दूरभाष: 04365-256475 / 76 फैक्स: 04365-256473 ई-मेल: vr13@sanmargroup.com

7	डीसीएम श्रीराम कॉम्पोलिडेटेड लि. (कोटा एवं झगड़िया)	1. श्रीराम विनायल एंड कैमिकल्स इंडस्ट्रीज, श्रीराम नगर, कोटा-324 004 (राजस्थान) दूरभाष: 0744-2480991-98, 0744-2480011-17 / 2480907-08 फैक्स: 0744-2481131 ई-मेल: tejkrishen@dscl.com 2. श्रीराम अल्कली एंड कैमिकल्स, 749, जीआईडीसी इंडस्ट्रियल एस्टेट, झगड़िया-393 110 जिला-भरुच (गुजरात) दूरभाष: 02645-226021-23 / 224026-27 फैक्स: 02645-226037 ई-मेल: scmittal@dscl.com
8	डीसीडब्ल्यू लि.	डाकघर शाहुपुरम-628 229, थुथुकुड़ी जिला, तमिलनाडु दूरभाष: 04639-280231 / 439 / 014 / 281288 फैक्स: 04639-280611 ई-मेल: dcwshpm@sancharnet.in ;
9	दुर्गापुर कैमिकल्स लि.	हैनिमन सरणी, जिला बर्धवान, दुर्गापुर-713 215 प. बंगाल दूरभाष: 0343-2556668 / 2555762 फैक्स: 0343-2556667 ई-मेल: dcldgp@sancharnet.in akupadhyay@durgachem.com
10	जीएचसीएल लि.	गाँव सूत्रपद, तालुका वेरावल, जिला जूनागढ़- 362265 (गुजरात) दूरभाष: 02876-283401-3/283409-10/283551-3/ 280206 फैक्स: 02876-283483 / 283480 ई-मेल : tej@ghcl.co.in
11	ग्रेसिम इंड. लि. कैमिकल डिविजन	डाकघर विरलाग्राम, नागदा-456 331 (मध्य प्रदेश) दूरभाष: 07366-246760-66 फैक्स: 07366-246176 / 246097 ई-मेल: ajay.todi@adityabirla.com ; Kailash.jhanwar@adityabirla.com

12	ગુજરાત અલ્કલીજ ઇંડ કૈમિકલ લિ.	(1) બંડૌદા યૂનિટ ડાકઘર પેટ્રોકૈમિકલ્સ-391 346 જિલા-બંડૌદા (ગુજરાત) દૂરભાષ: 0265-2232681 / 701 / 183 / 2230085 / 3061200 / 6540463 ફૈક્સ: 0265-2232130 / 2230032 ઈ-મેલ: general@gacl.co.in marketing@gacl.co.in (1) દાહેજ યૂનિટ ડાકઘર દાહેજ, તાલુકા વિગ્રા, જિલા ભરૂચ-392130 (ગુજરાત) દૂરભાષ: 02641-256315 - 17 ફૈક્સ::02641-256220 ઈ-મેલ: mktdahej@gacl.co.in
13	ગુજરાત ફ્લોરો કૈમિકલ્સ લિ.	12/એ, જીઆઈડીસી, દાહેજ ઔદ્યોગિક ક્ષેત્ર, વિગ્રા તાલુકા, જિલા-ભરૂચ- 392 130 (ગુજરાત) દૂરભાષ: 02641-308062 ફૈક્સ: 02641-308012 ઈ-મેલ: jsbedi@gfl.co.in
14	હિન્દુસ્તાન હૈવી કૈમિકલ્સ (પ્રો. કેશવરામ ઇંડ. લિ.)	19, બૈરકપુર ટ્રંક રોડ, ખારદાહ, ડાકઘર બલરામ ધર્મ સોપાન, કોલકાતા-700116 દૂરભાષ: 033-25532879/5183, 25839545 / 77 ફૈક્સ: 033-25533860, 25839218 ઈ-મેલ: hhcl_fac@vsnl.net hcc_ho@vsnl.net factory@hhckil.com
15	હિન્દુસ્તાન ઓર્ગનિક્સ કૈમિકલ્સ લિ.	હરચંદરાય હાઉસ, 81, મહરિં કર્વે રોડ, મુંબઈ- 400002 દૂરભાષ: 022-22014269 - 71 ફૈક્સ: 022-22059533 ઈ-મેલ: ravimadangeri@hoclindia.com
16	હિન્દુસ્તાન પેપર કોર્પો. લિ.	ફૈક્ટરી-I નગાંવ પેપર મિલ, ડાકઘર કાગજનગર, જિલા મોરિગાંવ-782 413 (অসম) દૂરભાષ: 03678-245900 – 10.

		<p>फैक्स: 03678-245911 – 13 ई-मेल: himanish@hindpaper.in adhi@hindpaper.in</p> <p>फैक्ट्री-II कछार पेपर मिल, डाकघर पंचग्राम- 788 802 जिला हैलाकंडी (असम) दूरभाष: 03845-273080 / 273086 / 273214-6 फैक्स: 03845-273130 ई-मेल: kacharya@hindpaper.in</p>
17	एचजेआई- ओरिएण्ट पेपर मिल्स का प्रभाग (प्रो. ओरिएण्ट पेपर एंड इंड. लि.)	<p>डाकघर अमलाई पेपर मिल्स, जिला-अनूपपुर- 484 117 (मध्य प्रदेश) दूरभाष: 07652-286563 / 178 / 179 फैक्स: 07652-286290 ई-मेल: hjigmmco@sancharnet.in hukum_113@rediffmail.com</p>
18	जयश्री कैमिकल्स लि.	<p>डाकघर जयश्री, जिला गंजम-761 025 (उडीसा) दूरभाष: 06811-254319 / 20 / 36 / 254170 फैक्स: 06811-254384 ई-मेल: jclgm@jayshreechemicals.com</p>
19	कनोरिया कैमिकल्स एंड इंड. लि.	<p>क्लोस-अल्कली (वर्क्स)- रेनुकूट डाकघर रेनुकूट-231 217, जिला-सोनभद्र (उ. प्र.) दूरभाष: 05446-252044 / 55 / 75 फैक्स: 05446-252088 ई-मेल: renukoot@kanoriachem.com</p>
20	लॉर्ड्स क्लोरो अल्कली लि.	<p>एसपी-460, मत्स्य औद्योगिक क्षेत्र, अलवर-301 030 (राजस्थान) दूरभाष: 0144-3202817 / 19 / 2881056 फैक्स: 0144-2881360 ई-मेल: jagtar.singh@lordschloro.com</p>
21	मेघमणि फाइबर कैम लि.	<p>सीएच 1 तथा 2, जीआईडीसी दाहेज, डाकघर दाहेज-392 130 जिला भरुच, गुजरात दूरभाष: 02642-238025 फैक्स: 02642-238026 ई-मेल: mhania@meghmani.com</p>

		dhruv.joshi@meghmani.com
22	निर्मा लि.	कैमिकल कॉम्प्लैक्स, गाँव कालातलाव, तालुका एवं जिला भावनगर-364 313 दूरभाष: 0278-2885301 - 4 फैक्स: 0278-2885309 - 19 ई-मेल: nirma_kalatalav@nirma.co.in
23	एनआरसी लि.	मोहोन- 421 102 कल्याण के निकट, जिला-थाणे (महाराष्ट्र) दूरभाष: 0251-2270312-5 (9251 मुंबई से) फैक्स: 0251-2270316 (9251 मुंबई से) ई-मेल: nrcworks@vsnl.com ; nrcworks@bom7.vsnl.net.in ; dbsjindani@hotmail.com
24	पंजाब अल्कलीज एंड कैमिकल्स लि.	नंगल-ऊना रोड, नयानंगल- 140 126 जिला-रोपड़, पंजाब दूरभाष: 01887-220750-53 फैक्स: 01887-220742 ई-मेल: pacengl@sify.com
25	रिलायंस इंड. लि.	डाकघर दाहेज, तालुका विग्रा, जिला भरुच- 392130 (गुजरात) दूरभाष: 02641-282301 फैक्स: 02641-283081 ई-मेल: chappidi.babu@ril.com jyotindra.m.shah@ril.com
26	सौराष्ट्र कैमिकल्स लि.	डाकघर बिरलासागर, पोरबंदर-360 576 (गुजरात) दूरभाष: 0286-2242479-81 (3 lines) 0286-2205242 (Sales Deptt.) फैक्स: 0286-2245431 ई-मेल: gmmrkt@saukemindia.com sales@saukemindia.com
27	एसआईईएल कैमिकल कॉम्प्लैक्स (मवाना शुगर्स लि. की एक यूनिट-पूर्ववर्ती सीएल लि.)	चरत्रमपुर, गाँव खड़ौली, सरदारगढ़, डाकघर राजपुरा, जिला- पटियाला, पंजाब-140 401 दूरभाष: 01762-228540 - 48 फैक्स: 01762-225403 ई-मेल: info@sielchemical.com

28	सोलरिस कैम्पेक इंड. लि. (क्लोस-अल्कली तथा फॉस्फेट व्यवसाय)	यूनिट : कारवार, बिनागा कारवार- 581307. जिला उत्तर कन्नड, कर्नाटक दूरभाष: 08382-230535 / 230638 फैक्स: 08382-230468 ई-मेल: umesh.shenoy@solarischemtech.com
29	श्री रायलसीमा अल्कलीज एंड एलाइड कैमिकल्स लि.	गोडिपारला, कुर्नूल- 518 004 (आंध्र प्रदेश) दूरभाष: 08518-280006-8, 280053 फैक्स: 08518-280098 ई-मेल: sraacmktg@tgvmail.net sraacengg@yahoo.co.in sraaclab@rediffmail.com
30	तमिलनाडु पेट्रो प्रोडक्ट्स लि. (भारी रसायन प्रभाग) (पूर्ववर्ती : एसपीआईसी लि.)	मनाली एक्सप्रेस हाईवे, मनाली चेन्नई- 600 068 तमिलनाडु दूरभाष: 044-25941870 फैक्स: 044-25941332 ई-मेल: tplisd@sancharnet.in ravindran@tnpetro.com
31	टाटा कैमिकल्स लि.	मीठापुर- 361 345, जिला ओखामंडल, जामनगर (गुजरात) दूरभाष: 02892-665991-98 फैक्स: 02892-223361
32	दि ऑंड्रा शुगर्स लि. (कवुर/सगोंडा)	सगोंडा- 534 318 जिला प. गोदावी (आंध्र प्रदेश) दूरभाष: 08811-253418 / 28 फैक्स: 08813-231218 ई-मेल: info.kvr@theandhrasugars.com
33	द त्रावणकोर कोचीन कैमिकल्स लि.	पो. बैग सं. 4004, उद्योग मण्डल, पो.ओ. कोच्चि- 683 501 (केरल) दूरभाष.: 0484-2545011-20 / 2545583 फैक्स: 0484-2546564, 2545583 ई-मेल salestcc@vsnl.net marketing@tcckerala.com mail@tcckerala.com
34	तूतीकोरिन अल्कली कैमिकल्स एंड फर्टिलाइजर्स लि.	हार्बर कंस्ट्रक्शन रोड एसपीआईसी नगर तूतीकोरिन- 628 005 दूरभाष. 0461-2355612 - 13 / 2355615 - 16 फैक्स: 0461-2355376

		ई-मेल : ttn_ank@sancharnet.in headworks@tacfert.com
35	यूनाइटेड फॉस्फोरस लि.	750 जीआईडीसी, पो. बॉ. सं. 9, झगड़िया- 393 110 जिला-भरुच, गुजरात दूरभाष. 02645-226011 - 15 फैक्स: 02645-226017

4. आयातक

- क. अभय कैमिकल्स लि., 150 गायत्री चैम्बर्स, आर सी दत्त रोड, अल्कापुरी, बड़ौदा-390005, गुजरात
- ख. अल्ब्राइट विल्सन कैमिकल्स लि., फिनिक्स हाउस, “ए” विंग, चौथा तल, 462 सेनापति बापत मार्ग, लोअर पैरल (प.) मुंबई-400013
- ग. अरविन्द मिल्स लि., नरौदा रोड, अहमदाबाद-380025, गुजरात
- घ. बिरला सेल्यूलोज लि., बिरला धाम, खारच, कोसाम्बा, आरएस 374120, जिला- भरुच, गुजरात
- ड. सेंट्रल पल्प मिल्स लि., नेहरू हाउस, 4, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110002
- च. दीपक नाइट्रोइट लि., 4/12, जीआईडीसी कैमिकल्स कॉम्प्लैक्स, नंदेसारी-391340, गुजरात
- छ. गोदरेज सोप्स लि., ईस्टर्न एक्सप्रेस हाईवे, विक्रोली (पू.), मुंबई-400049
- ज. गुजरात नर्मदा फर्टिलाइजर एंड कैमिकल्स लि., पी.ओ. नर्मदा नगर-392015, भरुच, गुजरात
- झ. गुजरात स्टेट फर्टिलाइजर एंड कैमिकल्स लि., पी.ओ.-फर्टिलाइजर नगर, बड़ोदरा, गुजरात
इंडियन फार्मर फर्टिलाइजर कोप. लि., पी.ओ.-कस्तूरीनगर-382483
- ट. इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लि., गुजरात रिफायनरी, पी.ओ.-जवाहर नगर, बड़ोदरा, गुजरात
- ठ. जयसिंध डाइकैम लि., 301, सुमेर केन्द्र, पाण्डुरंग बढ़कर मार्ग, वरली, मुंबई-400018
- ड. लिंक फार्मा लि., बी-2, छठा तल, रामकृष्ण चैम्बर्स प्रोडक्टिविटी रोड, अल्कापुरी, बड़ौदा-390005, गुजरात
- ढ. मेघमणि ऑर्गेनिक्स लि., 188/184, फेज-II, जीआईडीसी इंडस्ट्रियल एस्टेट, वाता, अहमदाबाद-382445, गुजरात

- ण. नर्मदा कैमेच्योर पेट्रोकैमिकल्स लि., दूसरा तल, स्काइलाइन बिल्डिंग, भरुच रेलवे स्टेशन के पास, भरुच, गुजरात .
- त. निरमा लि., निरमा भवन, आश्रम रोड, अहमदाबाद, गुजरात
- थ. पैब कैमिकल्स (प्रा.) लि., सूर्य किरण कॉम्प्लैक्स, पहला तल, ओल्ड पेट्रो रोड, पो. वैग सं. 4059, बड़ौदा-390005, गुजरात
- द. रामान्धूज प्रिंट्स एंड पेपर्स लि., ग्राम बड़बोधन-395005, तालुक कोलपार, जिला-सूरत, गुजरात
- ध. रुबामिन लि., सिनर्जी हाउस, सुभानपुरा बड़ौदा-390023, गुजरात
- न. सबैरो ऑर्गेनिक्स लि., ए-302, फिनिक्स हाउस, तीसरा तल, 462, सेनापति बापत मार्ग, वरली (पू.), मुंबई-400013
- प. टौरेंट गुजरात बायोटैक लि., श्री राम चैम्बर सर्किट हाउस के सामने, आर सी दत्त रोड, बड़ौदा-390005, गुजरात
- फ. ट्रांसपैक सायलॉक्स इंडस्ट्रीज लि., कालाही एटलांड्रा रोड, बड़ोदरा-390012, गुजरात
- ब. नेशनल अल्यूमीनियम कं. लि., नाल्को भवन, ई-37, साइट बी, सूरजपुर औद्योगिक क्षेत्र, गौतमबुद्ध नगर, उ.प्र.
- ब. सायनाइड्स एंड कैमिकल्स कं., प्रोप. हिन्दुस्तान डेवलपमेंट कॉर. लि. कॉर्प लि., 65, फ्री प्रेस हाउस, नरीमन प्लाइंट, मुंबई-400021
- भ. डेमोसा कैमिकल्स लि., 105, ए मित्तल टॉवर्स, 210, नरीमन प्लाइंट, मुंबई-400021
- म. हित्यु इंड. लि., प्लॉट सं. 306/2, फेज-II, जीआईडीसी, वापी, गुजरात
- य. श्रीरामचन्द्र स्ट्रॉ प्रोडक्ट्स लि., ग्राम-विजयपुर, तहसील-वेल्लारी, मुरादाबाद, उ. प्र.
- र. लिब्रा फोम्स एस बी डिस्ट्रीब्यूटर्स लि. का प्रभाग, ई-37, साइट-बी, सूरजपुर औद्योगिक क्षेत्र, गौतमबुद्ध नगर, उ.प्र.
- ल. अदानी विल्मर लि., नेवीनल टायन्ड, मुंद्रा-कच्छ, गुजरात
- व. अदानी एक्सपोटर्स लि., अदानी हाउस, श्रीमली सोसायटी, मावरंगपुर, अहमदाबाद, गुजरात
- श. दौराला ऑर्गेनिक्स लि., हिमालय हाउस, कस्तूरबा गाँधी रोड, नई दिल्ली
- ष. विलाग इंड. प्रा. लि., प्लॉट सं. 306/3, फेज-II, जीआईडीसी, वापी, गुजरात
- ह. श्रीरामचन्द्र स्ट्रॉ प्रोडक्ट्स लि., ग्राम-विजयपुर, तहसील-वेल्लारी, मुरादाबाद, उ. प्र.
- क्ष. लिब्रा फोम्स एस बी डिस्ट्रीब्यूटर्स लि. का प्रभाग, ई-37, साइट-बी, सूरजपुर औद्योगिक क्षेत्र, गौतमबुद्ध नगर, उ.प्र.
- त्र. दौराला ऑर्गेनिक्स लि., हिमालय हाउस, कस्तूरबा गाँधी रोड, नई दिल्ली, पी/एल नायापल्ली, भुवनेश्वर-751013, उड़ीसा

- ज. हरीश कुमार एंड कं., 23, अनंत बिल्डिंग, 21, एस गाँधी मार्ग, मुंबई-400002, सी जे शाह एंड कं., 105, बजाज भवन, नरीमन प्वाइंट, मुंबई-21
कक. हिन्दुस्तान लिवर लि., हिन्दुस्तान लिवर हाउस, 165/166, बैकबे रिक्लेमेशन, मुंबई-400020
कख. हिन्दुस्तान लिंक एंड रेजिन्स लि., बिलखिया हाउस, मुक्तानंद मार्ग, छाला, वापी, गुजरात

निर्यातक

- क. असाहीमास कैमिकल्स पीटी, 9वाँ तल, समिटमास I, जेआई, जेंद, सूदीरमन के.ए.वी., 61-62, जकार्ता, 12190, इंडोनेशिया
ख. पीटी पैनिक केरतास, जिवि किमिया टीबीके, प्रधान कार्यालय बिल्डिंग ए, जेआई, राया सुराबाया-मोजोकर्तो के.ए.म. 44, मोजोकर्तो 61301, जावा तिमोर, इंडोनेशिया
ग. पीटी सल्फाइंडो आदियुसाहा पीटी. सल्फाइंडो आदियुसाहा, 14वाँ तल, रातु प्लाजा, ऑफिस टॉवर, जेआई जिंद, सुदीरमन, के.ए.वी 9, जकार्ता जकार्ता, 102702, इंडोनेशिया
घ. पीटी इंदाह कियात पल्प एंड पेपर टीबीके, बी-॥ प्लाजा, मिनारा ॥, लांताई 7, जेआई, एमएच, तामरिन, नं. 51, जकार्ता-10350, इंडोनेशिया
ड. फार्मासा प्लास्टिक्स कॉर्पो. 201, तुंगहुआ नॉर्थ रोड, ताइपेई, ताइवान
च. डॉव कैमिकल डॉव हेलास एस ए लेवरियोन साइट टॉरिकोन लेवरियोन टीके 19500, ग्रीस
छ. सॉल्वे फ्लूओर जीएमबीएच ब्रुएनिंगस्ट्रास 50 जिप कोड-डी-65926, फ्रैंकफर्ट एम मेन जर्मनी
ज. बेयर एजी बेयर मेटिरियल्स साइंस, एजी कम्यूनिकेशंस, बिल्डिंग के-12, कासस विल्हैम-एल्ली-51368, लिवर कसेन जर्मनी
झ. बीएएसएफ एजी जेडओआई-डी-100 डी-67056, लुडविग्सहेफेन, जर्मनी एनीकैम एसपीए पियाजेल मैटे 100144, रोम, इटली
ट. कतर विनायल कं., क्यूएससी, पो.बॉ. सं. 24440, दोहा, कतर
ठ. हन्हुआ कैमिकल कॉर्पो. 100-797, हन्हुआ बिल्डिंग, 1, जुंग-कु, सिओल, कोरिया गण.
ड. डीसी कैमिकल्स लि., ओरिएण्टल कैमिकल बिल्डिंग, 50, सोगोंग-डाँग जुंग-गु सिओल, कोरिया गण.
ढ. शंघाई क्लोर अल्कली कैमिकल्स वू रोड, सं. 4747, शंघाई सिटी-200122, चीन जन. गण.

- ण. सिनोपैक किली पेट्रोकैमिकल कं. लि., किलुआफिस बिल्डिंग, हाइटेक एंड इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट जोन, जिबो, शेन्डाँग, चीन जन. गण.
- त. वुहान गोल्डन फॉर्म्यून टेक्नोलॉजी एंड ट्रेड कं. लि., इंटरनेशनल इंटरप्राइज सेंटर, सं. 2#, गुआनशान रोड, वुहान, हुबई, चीन
- थ. तियान्जिन केयि कैमिकल फैक्टरी, सं. ई-7-205, विन्हाई फाइनेंस जोन, सं. 20, गुआंगचांग ईस्ट रोड, टेडा-तियान्जिन, चीन
- द. तियान्जिन जेबियर इंटरनेशनल कं. लि., 21सी, वायटिंग गुआन, सं. 22, छठा अक्षाँश मार्ग, हेडोंग जिला तियान्जिन, चीन

5. निर्यातक राष्ट्र

- i. यूरोपीय संघ
- ii. जर्मनी
- iii. ग्रीस
- iv. इंडोनेशिया
- v. चीन जन. गण.
- vi. कतर
- vii. कोरिया जन. गण.
- viii. सऊदी अरब
- ix. ताइवान
- x. थाइलैंड
- xi. अमेरिका

6. सभी ज्ञात घरेलू उत्पादकों/आयातकों तथा निर्यातकों को प्रश्नावलियाँ भी प्रेषित की गयी थीं और उनसे 30 दिन के भीतर अपने उत्तर प्रस्तुत करने के लिए कहा गया था।

7. निम्नलिखित पक्षकारों से उन्हें हितबद्ध पक्षकार माने जाने संबंधी अनुरोध प्राप्त हुए और ये सभी अनुरोध स्वीकार कर लिए गए :

- i. मै. द्रायकॉन एनर्जी लि., अमेरिका
- ii. मै. बेसिक कैमिकल्स सोल्यूशंस फार ईस्ट प्रा. लि., सिंगापुर
- iii. मै. हान्हुआ कार्पो., कोरिया गणराज्य
- iv. मै. विनाइथाइ पब्लिक कं. लि., थाइलैंड
- v. मै. वेदान्त अल्यूमीनियम लि.,
- vi. अल्यूमीनियम एसोसिएशन ऑफ इंडिया

8. निम्नलिखित पक्षकारों से उत्तर भेजने हेतु समय-सीमा बढ़ाने संबंधी अनुरोध प्राप्त हुए थे :

- i. मै. पीटी असाहीमास कैमिकल, इंडोनेशिया
- ii. इंडोनेशिया गणराज्य का व्यापार मंत्रालय
- iii. मै. विनाइथाइ पब्लिक कं. लि., थाइलैंड
- iv. मै. वेदान्त अल्यूमीनियम लि.,
- v. अल्यूमीनियम एसोसिएशन ऑफ इंडिया
- vi. मै. हिन्दुस्तान यूनिलिवर लि.
- vii. मै. पीटी सल्फाइंडो आदियुसाहा इंडोनेशिया

9. निर्धारित समयावधि के भीतर जाँच समाप्त करने के लिए समय सीमा को ध्यान में रखते हुए समय सीमा बढ़ाए जाने के अनुरोध स्वीकार किए गए और तदनुसार संबंधित पक्षकारों को सूचित किया गया ।

10. घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत सूचना का सत्यापन आवश्यक समझी गई सीमा तक घरेलू उत्पादकों के संयंत्रों और मौके पर जाकर किया गया था । इसके अलावा, लागत संबंधी आंकड़ों का सत्यापन और लागत लेखाकार द्वारा उसका प्रमाणन भी किया गया था । सत्यापन रिपोर्ट का अगोपनीय रूपांतरण सार्वजनिक फाइल में रखा गया है ।

11. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा लिखित अनुरोधों में या उत्तरों में व्यक्त किए गए समस्त विचारों की जाँच की गई थी और उन पर उचित निर्धारण करने में ध्यान दिया गया है । प्राप्त या अधिगृहीत की गई अगोपनीय सूचना को सार्वजनिक फाइल में रखा गया है ।

भारत में कास्टिक सोडा के घरेलू उत्पादकों के विचार

12. घरेलू उत्पादकों ने निम्नानुसार उल्लेख किया है :

13. यह याचिका भारतीय उत्पादक संघ द्वारा दायर की गई है जबकि आंकड़े उन घरेलू कंपनियों द्वारा दिए गए हैं जिनका सामूहिक उत्पादन अप्रैल, 2005 और जून, 2009 की अवधि में 32-36% के बीच था । डब्ल्यूटीओ के अनुसार चूंकि भारतीय उत्पादन में इन कंपनियों का हिस्सा प्रमुख है, अतः यह माना जाना चाहिए कि यह याचिका घरेलू उद्योग द्वारा अथवा उसकी ओर से दायर की गयी है तथा उसमें घरेलू उद्योग से संबंधित क्षति सूचना उल्लिखित है ।

14. इस याचिका के दायरे में केवल खारे घोल के रूप में कास्टिक सोडा ही शामिल है । ठोस रूप में कास्टिक सोडा को इसलिए शामिल नहीं किया गया है क्योंकि आयात की मात्रा में वृद्धि केवल खारे घोल के रूप में कास्टिक सोडा में ही हुई है । कास्टिक सोडा के आयातों

में हुई वृद्धि आकस्मिक, अप्रत्याशित और अत्यधिक है जिसके कारण इस प्रकार हैं : (i) वैश्विक मंदी जिसके कारण वैश्विक प्रमुख बाजारों में माँग में कमी आई, (ii) तत्पश्चात् अमेरिका तथा यूरोप में क्लोरीन की कीमतों में वृद्धि हुई जिसके परिणामस्वरूप क्लोरीन उत्पादन में और तत्पश्चात् कास्टिक उत्पादन में वृद्धि हुई ।

15. कास्टिक सोडा के आयात से घरेलू उद्योग को गंभीर क्षति हो रही है । इसके अतिरिक्त यदि तत्काल रक्षोपाय शुल्क लागू नहीं किया गया तो भारतीय उद्योग को और अधिक गंभीर क्षति होने का खतरा है । ईष्टतम से कम क्षमता उपयोग, माँग में वृद्धि के बावजूद क्षमता उपयोग में वृद्धि करने में घरेलू उद्योग की अक्षमता, बिक्री में ईष्टतम से कम वृद्धि बाजार हिस्से, लाभप्रदता, निवेश पर आय तथा घरेलू उद्योग के नकद प्रवाह में कमी के कारण घरेलू उद्योग को गंभीर क्षति होना होना स्वाभाविक है ।

16. वस्तुतः अन्य भारतीय उत्पादकों को अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में क्षति का सामना करना पड़ा है जैसा कि उनके क्षमता उपयोग के स्तरों से स्पष्ट है ।

17. घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में गिरावट इतनी अधिक रही है कि घरेलू उद्योग लाभ की स्थिति से सीधे अत्यधिक वित्तीय हानि की स्थिति में पहुँच गया है । इसके अतिरिक्त, क्लोरीन प्राप्ति में अत्यधिक सुधार के बावजूद लाभप्रदता में कमी आई है । यदि क्लोरीन प्राप्ति का स्तर अपेक्षाकृत कम हुआ होता (जैसा कि हाल तक की स्थिति थी) तो घरेलू उद्योग को हुए वित्तीय नुकसान का स्तर और भी अधिक होता ।

18. देश में मौजूद श्रम कानूनों और इस तथ्य कि उद्योग ने आयातों में अत्यधिक वृद्धि के बावजूद उत्पादन को कम न करने का निर्णय लिया, के मद्देनजर रोजगार तथा मजदूरी से क्षति प्रदर्शित नहीं होती ।

19. बढ़े हुए आयातों के कारण घरेलू उद्योग को गंभीर क्षति हो रही है । इसका कारणात्मक संबंध भारतीय उद्योग के बाजार हिस्से में कमी और एक ओर आयातों के बाजार हिस्से में वृद्धि तथा दूसरी ओर घरेलू उद्योग की कीमतों में तेजी से गिरावट के बीच स्पष्ट रूप से दिखाई देता है ।

20. मौजूदा मामले में निर्णायक परिस्थितियाँ मौजूद हैं यथा (i) घरेलू उद्योग कीमतों को स्थिर बनाए रखने में असमर्थ है जो इस सीमा तक गिर गई है कि घरेलू उद्योग को अत्यधिक वित्तीय हानि का सामना करना पड़ रहा है, (ii) कीमतों में गिरावट की प्रवृत्ति जारी है, (iii) उद्योग की भण्डारण क्षमता सीमित है और इसलिए आयात में वृद्धि से भण्डारण समस्याएँ

उत्पन्न होंगी, (iv) पण्य वस्तु उत्पाद होने के कारण उद्योग को न केवल आयातक ग्राहकों के लिए कीमतों में कटौती करनी पड़ी अपितु उन ग्राहकों के लिए भी कीमतें कम करनी पड़ी जिन्होंने आयात नहीं किया है, (v) इस उत्पाद के मामले में कीमत में हुई गिरावट अभूतपूर्व है। पिछले दो दशकों में उद्योग ने दो तिमाहियों के बीच कीमतों में 10,000 रु./मी. टन से अधिक की गिरावट कभी नहीं देखी थी। इन निर्णायक परिस्थितियों के महेनजर रक्षोपाय शुल्क तत्काल लागू किए जाने की आवश्यकता है।

21. उद्योग ने यथासमय प्रतिस्पर्धी बनने के लिए एक व्यवहार्य समायोजन योजना बनायी है।

22. घरेलू उद्योग को अपूरणीय नुकसान से बचाने के लिए तत्काल अनंतिम शुल्क लागू करने की आवश्यकता है।

निर्यातक राष्ट्रों के विचार

यूरोपीय संघ के विचार

23. रक्षोपाय शुल्क को एक अपवादात्मक साधन माना जाना चाहिए और रक्षोपाय लागू करने संबंधी मानदंड अत्यधिक ऊँचे होने चाहिए। रक्षोपाय संबंधी डब्ल्यूटीओ करार के अनुच्छेद 4.2(क) में सूचीबद्ध कारकों के अनुसार इस मामले में क्षति का संकेत नहीं मिलता है।

24. वर्ष 2005-06 से 2008-09 तक बढ़े हुए आयातों का घरेलू उद्योग में केवल 1% हिस्सा बनता है। पहली तिमाही पर तुलना के प्रयोजनार्थ विचार नहीं किया जा सकता है।

25. वर्ष 2005-06 से 2008-09 तक बिक्री के स्तर में 22% की वृद्धि और उत्पादन के स्तर में 25% की वृद्धि हुई है।

26. क्षमता उपयोग 85% से अधिक है। इसमें गिरावट केवल उत्पादन क्षमता में 40% की वृद्धि के कारण आई है।

27. जाँच शुरूआत संबंधी अधिसूचना में लाभ/हानि का विश्लेषण प्रतिनिधि नहीं है क्योंकि इसमें वर्ष 2008-09 के लिए वार्षिक आंकड़ों और मासिक आंकड़ों को मिला दिया गया है।

28. लाभ/हानि के आरेख में जुलाई तथा अगस्त, 2009 के आंकड़े शामिल थे जबकि याचिका में कोई सूचना नहीं दी गई थी और जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना दिनांक 20.08.2009 को जारी की गई थी।
29. उत्पादकता तथा रोजगार का विश्लेषण नहीं किया गया।
30. यह जाँच या तो एकमात्र आवेदक की स्थिति के आधार पर होनी चाहिए अथवा समग्र उद्योग के आधार पर।
31. कारणात्मक संबंध का विश्लेषण किया जाना चाहिए क्योंकि 10% आयात के कारण क्षति नहीं हो सकती है।
32. उत्पादन क्षमता में अत्यधिक वृद्धि जैसे अन्य कारकों के प्रभाव का विश्लेषण किया जाना चाहिए।
33. रक्षोपाय संबंधी जांच में जनहित परीक्षण अपेक्षित है और अनंतिम रक्षोपाय शुल्क लागू करने के लिए निर्णायक परिस्थितियों की जांच आवश्यक है।
34. ईयू देशों से आयातों पर पाटनरोधी शुल्क पहले ही लागू है और किसी भी दोहरे उपाय को शामिल नहीं किया जाना चाहिए।

कोरिया गणराज्य के विचार

35. आयात में वृद्धि आकस्मिक नहीं है बल्कि एक सतत प्रवृत्ति का परिणाम है। आंकड़ों में विकृति तथा अतिरंजना पैदा करने के उद्देश्य से जान-बूझकर जांच अवधि को विभाजित किया गया है। आयातों में हुई वृद्धि को हाल में हुआ नहीं माना जा सकता।
36. यदि वार्षिक अंतराल पर आंकड़ों का इस्तेमाल करते हुए उत्पादन की तुलना में आयात प्रदर्शित करने वाली तालिका दोबारा बनाई जाए तो उससे वृद्धि की प्रवृत्ति प्रदर्शित होगी।
37. अप्रैल, 2008 से “वी कर्व” के लिए गुणवत्ता संबंधी विश्लेषण अपेक्षित है। दिसम्बर, 2008 के बाद आयातों में आई आकस्मिक वृद्धि पूर्ववर्ती महीनों में आई गिरावट के बाद देखी गई जो रक्षोपाय शुल्क के लिए पर्याप्त नहीं है जैसा कि वर्ष 2003 में अर्जेंटीना-पीच रक्षोपाय शुल्क के मामले में निर्णय लिया गया था। फैनल ने वह निर्णय लिया है कि यह स्थिति में सुधार की दृष्टि से महत्वपूर्ण है न कि ऐसी वृद्धि की दृष्टि से जो अनुच्छेद 2.1 तथा अनुच्छेद

XIX : (क) के प्रयोजनार्थ महत्वपूर्ण हो। इस जाँच में जाँच की पूरी अवधि शामिल की जानी चाहिए न कि एक निश्चित अवधि पर ध्यान केन्द्रित किया जाना चाहिए।

38. सम्पूर्ण वित्त वर्ष 2009-10 के लिए पहली तिमाही के आयात आंकड़ों पर विचार नहीं किया जाना चाहिए।

39. क्षमता उपयोग में गिरावट हाल में हुआ परिवर्तन नहीं है बल्कि एक ऐसी प्रवृत्ति है जो वर्ष 2005 से जारी है।

40. रोजगार पर कोई वास्तविक प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ा है।

41. क्षमता तथा माँग की तुलना में तर्कसंगत साक्ष्य का अभाव है। माँग को एक अतिरिक्त विचलन के रूप में दर्शाया गया है लेकिन साक्ष्य के रूप में कोई समर्थनकारी दस्तावेज उपलब्ध नहीं है। क्षमता तथा माँग के बीच संबंध में तर्कसंगत साक्ष्य का अभाव है। माँग में वृद्धि की प्रत्याशा में क्षमता में वृद्धि हुई है।

42. बाजार प्रवृत्ति और यह तथ्य कि पाटनरोधी शुल्क के बावजूद भारत में आयातित उत्पाद के बाजार हिस्से में लगातार वृद्धि हो रही है, इस बात को दर्शाते हैं कि भारतीय बाजार में उनके बाजार हिस्से में वृद्धि हो रही है। इसका कारण यह है कि वे अपेक्षाकृत अधिक प्रतिस्पर्धी हैं अतः किसी रक्षोपाय शुल्क की आवश्यकता नहीं है।

विदेश व्यापार विभाग, थाइलैंड के विचार

43. जाँच शुरूआत की अधिसूचना रक्षोपाय समिति को 15 दिन के भीतर नहीं दी गई, अतः यह डब्ल्यूटीओ के अनुच्छेद 12.1(क) का उल्लंघन है। अतः प्रक्रिया संबंधी उल्लंघन के कारण जाँच को समाप्त कर दिया जाना चाहिए।

44. आवेदक प्रमुख उद्योग नहीं हैं क्योंकि भारत के कुल उत्पादन में उनका हिस्सा केवल 35% है। अतः तथाकथित गंभीर क्षति कुल भारतीय उत्पादन का एक प्रमुख हिस्सा नहीं है।

45. आवेदक को कोई क्षति नहीं हुई है क्योंकि अधिकाँश क्षति संकेतकों अर्थात् उत्पादन, बिक्री, उत्पादन क्षमता में सकारात्मक विकास प्रदर्शित होता है और बाजार हिस्सा या तो सकारात्मक रहा है अथवा स्थायी है।

46. गंभीर क्षति, यदि कोई हो, बढ़े हुए आयातों के कारण नहीं हुई है। यह क्षति अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संकट के समय घरेलू उत्पादन क्षमता में अत्यधिक निवेश के कारण हुई है।

निर्यातकों के विचार

विनाइथाई पब्लिक कं. लि., थाइलैंड

47. थाइलैंड से आयातों में वृद्धि हो रही है लेकिन घरेलू उद्योग की कीमतों पर आयातों का प्रभाव शून्य है क्योंकि विनाइथाई पब्लिक के कास्टिक सोडा की कीमत अंतर्राष्ट्रीय कीमत पर आधारित है। कास्टिक सोडा के बढ़े हुए आयात भारतीय खपत में वृद्धि के अनुरूप हैं। खपत में 4% की वृद्धि हुई जबकि उत्पादन में केवल 1.8% की वृद्धि हुई थी। इसीलिए आयात अपेक्षित था।

48. अक्टूबर 2000 से दिसम्बर 2008 तक घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग में गिरावट आर्थिक मंदी के कारण आई थी, जनवरी 2009 से क्षमता उपयोग में कमी बढ़े हुए आयातों के कारण आई और आयातों में यह वृद्धि इसलिए हुई क्योंकि घरेलू उद्योग ने अंतर्राष्ट्रीय कीमत के अनुरूप अपनी कीमत में कमी नहीं की थी। इसके अतिरिक्त याचिका में प्रदत्त सूचना के अनुसार क्षमता उपयोग का प्रतिशत अन्य भारतीय उत्पादकों की तुलना में याचिकाकर्ता के लिए और समग्र रूप में भारतीय उद्योग की तुलना में भी अधिक रहा है।

49. विनाइथाई पब्लिक के कास्टिक सोडा की कीमत अंतर्राष्ट्रीय कीमत पर आधारित है और यह कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री, कीमत अवमूल्यन तथा कीमत ह्रास के अनुसार नहीं है।

50. हमारे बाजार हिस्से में वृद्धि हो रही है क्योंकि हमारे उत्पादों की गुणवत्ता घरेलू उत्पाद से बेहतर है और हमारे उत्पाद न केवल खाद्य उत्पाद उद्योग बल्कि अन्य उद्योगों के लिए भी अनुकूल हैं। घरेलू उद्योग के उत्पादों का बाजार हिस्सा आयातों के बाजार हिस्से से अधिक है। भारतीय उद्योग की बिक्री मात्रा आयात बिक्री से अधिक है और भारतीय उत्पादकों का कुल बाजार हिस्सा 85.5-97.5% के बीच है।

51. घरेलू उद्योग यह स्वीकार करता है कि उनकी उत्पादकता में अत्यधिक सुधार हुआ है लेकिन उनकी लाभप्रदता में कमी आई है क्योंकि उस अवधि में उनकी कीमतें अंतर्राष्ट्रीय कीमतों से अधिक होने के कारण वे अपने उत्पाद नहीं बेच पाए।

52. अपनी मालसूची को नियंत्रित करने के लिए उचित योजना के अभाव में घरेलू उद्योग की मालसूची में वृद्धि हुई ।

53. याचिका संबंधी दस्तावेज में दी गई सूचना से यह प्रदर्शित होता है कि जून, 2005-जून, 2009 के बीच कर्मचारियों की संख्या में कमी आई है लेकिन यह अधिक नहीं है ।

54. उपर्युक्त से यह प्रदर्शित होता है कि आयातों से घरेलू उत्पादकों को क्षति नहीं हुई है और न ही गंभीर क्षति होने का खतरा है ।

मे. बेसिक कैमिकल सोल्यूशंस फार ईस्ट प्रा. लि.

55. भारत में आयात में वृद्धि का कारण यह है कि भारत में कास्टिक सोडा के प्रयोक्ताओं को कास्टिक सोडा की आपूर्ति में कमी और विशेष रूप से घोल के रूप में कास्टिक सोडा की आपूर्ति में कमी का सामना करना पड़ रहा है । कास्टिक सोडा क्लोरीन, ईडीसी, वीसीएम, एचसीएल तथा पीवीएस के क्लोर-अल्कली उत्पादन के दौरान क्लोरीन का सह-उत्पाद है । क्लोरीन के प्रति एक टन के उत्पादन के दौरान उत्पादित 1.1 मी. टन कास्टिक सोडा का सांद्रण केवल 30% होता है । अतः कास्टिक सोडा का उत्पादन क्लोरीन की उत्पादन मात्रा पर पूर्णतः निर्भर होता है । क्लोरीन का उत्पादन क्लोरीन की बिक्री पर निर्भर करता है । क्लोरीन का सर्वाधिक प्रयोग ईडीसी, वीसीएम तथा पीवीसी रेजिन्स के लिए किया जाता है । भारत के अधिकाँश क्लोर-अल्कली विनिर्माता ईडीसी, वीसीएम, पीवीसी का उत्पादन नहीं करते और इसीलिए उन्हें कास्टिक सोडा के उत्पादन में वृद्धि करने में समस्या का सामना करना पड़ता है क्योंकि वे अपने उत्पादन का दायरा ईडीसी, वीसीएम तथा पीवीसी तक नहीं बढ़ाते हैं । भारत में अधिकाँश क्लोर-अल्कली विनिर्माता केवल मर्चेंट क्लोरीन का उत्पादन करते हैं जिसके लिए भारत सहित पूरे विश्व में बाजार बहुत सीमित है । मर्चेंटक्लोरीन का इस्तेमाल जलशोधन आदि के क्षेत्र में किया जाता है ।

56. मर्चेंट क्लोरीन का भण्डारण अत्यधिक कठिन, महँगा और खतरनाक है । इसके परिणामस्वरूप कास्टिक सोडा का अधिक उत्पादन करने के लिए क्लोरीन के उत्पादन में वृद्धि नहीं की जा सकती ।

57. कास्टिक सोडा का प्रयोग क्षेत्र अत्यधिक व्यापक है और क्लोरीन की तुलना में भारत में इसका बहुत बड़ा बाजार है । कास्टिक सोडा का इस्तेमाल साबुन, ब्लीच, कागज, धातु परिष्करण आदि में किया जाता है । अतः किसी भी रक्षोपाय शुल्क के प्रभाव बहुत व्यापक होंगे जिससे भारत में कास्टिक सोडा के प्रयोक्ताओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा क्योंकि उन्हें कास्टिक सोडा की घरेलू आपूर्ति में कमी के कारण आयात जारी रखने होंगे ।

मै. ट्राइकोन एनर्जी लि., यूएसए

58. जाँच शुरूआत अधिसूचना में जाँच की अवधि स्पष्ट नहीं की गयी है और उसमें अलग-अलग समयावधियों के लिए अलग-अलग मानदंडों हेतु विभिन्न स्रोतों से आंकड़े दिए गए हैं। उदाहरण के लिए जाँच शुरूआत अधिसूचना की तालिका 2 में वर्ष 2005-06 से 2007-08 तक के लिए डीजीसीआईएस के आंकड़े, अप्रैल, 2008-जून, 2009 तक के लिए आईबीआईएस के आंकड़े तथा जुलाई, 2009 के लिए डीओवी के आंकड़े दिए गए हैं जबकि लाभप्रदता संबंधी आरेख में वर्ष 2005-06 से अगस्त, 09 तक की अवधि का मार्जिन दर्शाया गया है।

59. महानिदेशक ने कार्बन ब्लैक जाँच जिसे 5 फरवरी, 1998 से शुरू किया गया था, में जाँच की अवधि संबंधी मुद्दे पर विचार किया था और याचिकाकर्ता ने सितम्बर, 07 तक आंकड़े प्रस्तुत कर दिए थे। अतः जब याचिकाकर्ता ने हाल के घटनाक्रमों के नए साक्ष्य प्रस्तुत करने की चेष्टा की तो महानिदेशक ने आंकड़ों को स्वीकार नहीं किया क्योंकि, “इस संदर्भ अवधि में परिवर्तन करना उचित नहीं होगा क्योंकि विभिन्न हितबद्ध पार्टियाँ इस अवधि के दौरान उपलब्ध कराए गए तथ्यों के संदर्भ में उत्तर प्रस्तुत करती हैं.....” फ्लेक्सिबल स्लैबस्टॉक पॉलियॉल तथा प्रॉपीलीन ग्लायकॉल मामलों में भी महानिदेशक द्वारा इसी प्रकार का तर्क दिया गया था। अतः इस मामले में भी जाँच अवधि अधिक से अधिक अप्रैल-दिसम्बर, 08 तक और यदि संभव हो तो अप्रैल-सितम्बर, 08 तक सीमित होनी चाहिए।

60. वर्तमान मामले में जाँच अवधि को निर्धारित करना महत्वपूर्ण है अन्यथा याचिकाकर्ता संदर्भ अवधि के बाद के नए आंकड़े प्रस्तुत कर सकता है और हितबद्ध पार्टियों को तदनुसार सूचित किया जा सकता है।

आयातकों/अंतिम प्रयोक्ताओं के विचार

61. रक्षोपाय शुल्क का उद्देश्य घरेलू उत्पादकों को अनुचित लाभ प्रदान करना नहीं है तथापि घरेलू उत्पादक के एकाधिकार को सुनिश्चित करना है।

62. कास्टिक सोडे का आयात तरल स्वरूप के साथ-साथ ठोस/फ्लेक स्वरूप में किया जाता है। बीजक में कीमत हमेशा सूखे स्वरूप में मी. टन आधार पर उल्लिखित होती है। तरल आयातों के मामले में दो प्रकार के भार होते हैं-एलएमटी एवं डीएमटी। डीएमटी आधार पर भार, एलएमटी के भार से अनुमानतः आधा होता है। यह प्रतीत होता है कि आयातों की मात्रा को अधिक दर्शाने के लिए याचिकाकर्ता ने एलएमटी भार को डीएमटी भार में परिवर्तित

नहीं किया है। इसके अलावा आयातों की कम कीमत को दर्शाने के लिए उन्होंने परेषण कीमत को एलएमटी भार से विभाजित कर दिया है। अतः आयात आंकड़े भ्रामक हैं।

63. बहुत से आयात आंकड़ों को जानबूझ कर शामिल नहीं किया गया है।

64. याचिकाकर्ता, घरेलू उद्योग नहीं है क्योंकि घरेलू उत्पादन के 35% द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों के आधार पर ही आवेदन दायर किया जाता है। किसी भी व्यक्ति को, जब तक कि वह आंकड़े प्रस्तुत नहीं करता है, घरेलू उद्योग नहीं माना जा सकता है।

65. अर्जेंटीना के मामले में पैनल रिपोर्ट- ब्राजील से कुक्कुट पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क; रक्षोपाय कार्यवाहियों हेतु संगत नहीं है क्योंकि रक्षोपाय कानून में “प्रमुख हिस्से” परं विचार किया जाता है जबकि पाटनरोधी कानून में “प्रमुख मात्रा” पर। याचिकाकर्ताओं के पास सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम की धारा 8ख के तहत आवेदन प्रस्तुत करने का अधिकार नहीं है क्योंकि वे नियम के तहत घरेलू उद्योग नहीं हैं।

66. याचिका अपूर्ण है। समायोजन योजना मौजूद नहीं है तथा ज्ञात क्रेताओं के नाम जानबूझ कर प्रकट नहीं किए गए हैं।

67. आंकड़ों की पर्याप्तता तथा सटीकता की जांच नहीं की गई है (सीमाशुल्क टैरिफ (रक्षोपाय शुल्क का अभिज्ञान एवं मूल्यांकन) नियम, 1997 के नियम 5(3) के अनुसार)।

68. याचिकाकर्ता ने अनंतिम रक्षोपाय शुल्क लगाने का अनुरोध किया है। तथापि याचिकाकर्ता ने स्पष्ट शब्दों में उन “संवेदनशील स्थितियों” का उल्लेख नहीं किया है जिनके कारण अनंतिम रक्षोपाय शुल्क लागू किया जाना चाहिए। (सीमाशुल्क टैरिफ (रक्षोपाय शुल्क का अभिज्ञान तथा मूल्यांकन) नियम 1997 के नियम 9 तथा डब्ल्यूटीओ के अनुच्छेद 6 का संदर्भ दिया है) और अतः यह एकपक्षीय अनंतिम रक्षोत्पाद शुल्क का मामला नहीं है।

69. याचिकाकर्ता, लाभ अर्जित कर रहे हैं।

70. कास्टिक सोडा पर रक्षोपाय शुल्क सार्वजनिक हित में नहीं है। वर्ष 1999 में यूनाइटेड फॉस्फोरस द्वारा फॉस्फोरस के आयातों पर रक्षोपाय शुल्क हेतु प्रस्तुत किए गए आवेदन के मामले में, जिसकी जांच 15.09.1999 को शुरू की गई थी, महानिदेशक (रक्षोपाय) ने गंभीर क्षति का पता लगाने के बावजूद, सार्वजनिक हित का हवाला देते हुए रक्षोपाय शुल्क लागू करने की सिफारिश को अस्वीकार कर दिया था। महानिदेशक के अंतिम जांच परिणाम को माननीय दिल्ली उच्च न्यायालय में चुनौती दी गई थी और माननीय उच्च न्यायालय ने रिट

याचिका को खारिज कर दिया था। माननीय उच्चतम न्यायालय ने भी महानिदेशक (रक्षोपाय) के अंतिम जांच परिणामों में हस्तक्षेप करने से मना कर दिया था।

71. भारतीय एल्यूमीनियम एसोसिएशन को उपभोक्ताओं की सूची में शामिल नहीं किया गया था, जो भारत में कास्टिक सोडा का एक अत्यधिक प्रमुख घरेलू उपभोक्ता है। भारतीय एल्यूमीनियम एसो. ने एक अत्यंत एकपक्षीय निवेदन प्रस्तुत किया था और आंकड़े गलत प्रतीत होते हैं।

72. कोई गंभीर क्षति नहीं हुई है। लगभग सभी निर्यातक देशों से सभी आयात, पाटनरोधी शुल्क के अध्यधीन हैं और वे घरेलू उद्योग को हुई गंभीर क्षति का कारण नहीं हो सकते हैं।

73. जनवरी से जून, 2009 तक आयात में उछाल को अस्थायी उछाल के एकमात्र मामले के रूप में नहीं देखा जा सकता है। यह प्रवृत्ति पिछले पाँच वर्षों से बनी हुई है।

74. कास्टिक सोडा उद्योगों की संरचनात्मक तथा प्रचालनात्मक कमियाँ, घरेलू उद्योग की वर्तमान स्थिति का एक अत्यधिक बड़ा कारण है। क्षतिकारी प्रभाव, यदि कोई हो, घरेलू कारकों की वजह से है न कि आयातों के कारण। अतः डब्ल्यूटीओ प्रावधानों तथा एओए के अनुच्छेद 4.2(ख) के अनुसार यह रक्षोपाय शुल्क का मामला नहीं है।

75. रक्षोपाय शुल्क लागू नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि उत्पाद के आयात से भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति सृजित हुई है जो अन्यथा ऐसे विनिर्माताओं के प्रभाव में था जो एएमएआई के माध्यम से कीमत निर्धारण हेतु एक उत्पादन संघ के रूप में कार्य करते थे।

महानिदेशक के जांच परिणाम

76. मामले संबंधी रिकॉर्डों, घरेलू उत्पादकों, उपभोक्ताओं/आयातकों, निर्यातकों तथा निर्यातक राष्ट्रों द्वारा प्रस्तुत उत्तरों का विश्लेषण किया गया है। विभिन्न पार्टियों द्वारा किए गए निवेदनों तथा उनसे उठने वाले मुद्दों पर, निम्नलिखित जांच परिणामों में उचित स्थानों पर विचार किया गया है।

कास्टिक सोडा हेतु भारतीय बाजार : एक संक्षिप्त विवरण

77. उद्योग की प्रकृति : कास्टिक सोडा का विनिर्माण साधारण नमक के विद्युत अपघटन द्वारा किया जाता है। कास्टिक सोडा के उत्पादन के साथ-साथ, निर्धारित मात्रा में क्लोरीन

का भी उत्पादन होता है। कास्टिक सोडा एवं क्लोरीन दोनों की ही वाणिज्यिक उपयोगिताएँ हैं और उन्हें विभिन्न उद्योगों में प्रयुक्त किया जाता है। कास्टिक सोडा (सोडियम हाइड्रॉक्साइड) एक बहुप्रयोगी क्षार है। इसे मुख्यतः लुगदी एवं कागज, एल्यूमिना, साबुन एवं प्रक्षालकों, पेट्रोलियम उत्पादों के विनिर्माण तथा रसायनिक उत्पादन आदि में प्रयुक्त किया जाता है। अन्य अनुप्रयोगों में जल संसाधन, खाद्य, वस्त्र, धातु प्रसंस्करण, खनन, ग्लास विनिर्माण तथा अन्य शामिल हैं। कास्टिक सोडा, रसायनों की एक व्यापक रेंज के विनिर्माण हेतु भी एक आधारभूत फीडस्टॉक है। इसे प्रक्रियाओं में एक मध्यवर्ती तथा अभिकारक के रूप में प्रयुक्त किया जाता है जिससे विलायकों, प्लास्टिकों, कृत्रिम फाइबरों, ब्लीच, आसंजकों, कोटिंग्स, शाकनाशियों, रंजकों, स्याही तथा भेषज आदि का उत्पादन होता है। इसको, अम्लीय अपशिष्ट स्ट्रीमों को निष्प्रभावी बनाने तथा ऑफ-गैसों से अम्लीय संघटकों को हटाने के लिए भी प्रयुक्त किया जाता है। पेट्रोलियम तथा प्राकृतिक गैस उद्योगों में इसका प्रयोग हाइड्रोकार्बनों एवं ऑफ गैसों से अम्लीय तत्वों को हटाने के लिए किया जाता है। वस्त्र क्षेत्र में, इसका उपयोग कपास के रसायनिक संसाधन हेतु तथा कृत्रिम फाइबरों को रंगने के लिए किया जाता है। यदि कास्टिक सोडा अधिक मात्रा में मौजूद हो तो पर्याप्त स्थान उपलब्ध होने पर इसका भण्डारण किया जा सकता है।

78. क्लोरीन, रसायन उद्योग की एक आवश्यक निविष्टि है। सभी हैलोजनों में से, क्लोरीन प्रकृति में सबसे प्रचुर मात्रा में मौजूद होती है तथा सबसे सुकर रूप से इसका उत्पादन किया जा सकता है। 85% से अधिक भेषज उद्योग तथा रसायन उद्योग का आधे से अधिक हिस्सा क्लोरीन उद्योग पर निर्भर है। इन उत्पादों का प्रयोग अधिकाँश रूप से औद्योगिक तथा आर्थिक क्षेत्र में किया जाता है, जिनमें शामिल हैं :

- i. स्वारक्ष्य सुरक्षा
- ii. कृषि खाद्य
- iii. भवन निर्माण
- iv. वस्त्र
- v. परिवहन
- vi. खाली समय में किए जाने वाले कार्यकलाप
- vii. सौंदर्य प्रसाधन

79. क्लोरीन का भण्डारण करना तथा उसे एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाना, उसकी प्रकृति के कारण कठिन है अतः इसका उपयोग मुख्यतः ऐसे स्थानों में किया जाता है जहाँ इसका उत्पादन विभिन्न अनुप्रवाहगार्मी इकाइयों जैसे वीसीएम (विनाइल क्लोराइड, मोनोमर,

पीवीसी हेतु बिलिंग ब्लॉक) तथा प्लास्टिक पीवीसी (पॉलिविनाइल क्लोराइड) में किया जाता है। क्लोरीन का अंतर्राष्ट्रीय व्यापार नगण्य है।

80. चूँकि कास्टिक सोडा के उत्पादन को क्लोरीन के उत्पादन से अलग नहीं किया जा सकता है अतः उद्योग को क्लोर-अल्कली उद्योग के नाम से जाना जाता है। क्लोरीन तथा कास्टिक सोडा दोनों की माँग, आपूर्ति तथा कीमत संबंधी परिवर्तनों से उद्योग की स्थिति पर प्रभाव पड़ता है।

81. अंतर्राष्ट्रीय बाजार में भारतीय कास्टिक सोडा उद्योग : कास्टिक सोडा को बड़ी संख्या में उद्योगों में सामान्य उपयोगों में प्रयुक्त किया जाता है। कास्टिक सोडा उद्योग का विकास बहुत हद तक विनिर्माण क्षेत्र के समग्र विकास पर निर्भर है। भारत में कास्टिक सोडा की खपत 2 मिलि. डॉ. प्रति मी. टन की रेंज में है तथा भारत में संस्थापित उत्पादन क्षमता 2.5 मि. डॉ. प्रति मी. टन से अधिक है। यद्यपि भारत के पास अपनी घरेलू माँग को पूरा करने के लिए पर्याप्त क्षमता है, तथापि विगत में लगभग 7% घरेलू माँग की पूर्ति आयातों द्वारा की जाती थी। चीन, इंडोनेशिया, यूरोप, थाइलैंड, कतर तथा अमरीका भारत को निर्यात करने वाले प्रमुख राष्ट्र हैं। कास्टिक सोडा के निर्यात बाजार में भारत की स्थिति उल्लेखनीय नहीं है। भारतीय उत्पादक अपने उत्पादन के लगभग 1/2% का निर्यात करते रहे हैं।

82. भारत में संस्थापित उत्पादन क्षमता, उत्तरी अमेरिका की संस्थापित क्षमता का 20%, यूरोप का 22% तथा चीन का 22% है। भारत में बाजार के आकार में वृद्धि हो रही है और बढ़ती हुई माँग को पूरा करने के लिए संस्थापित क्षमता में भी उसी गति से वृद्धि हो रही है जिसके परिणामस्वरूप पिछले वर्षों में उत्पादन में क्रमिक वृद्धि हुई है। पिछले वर्षों में क्षमता एवं उत्पादन में क्रमिक वृद्धि के बावजूद भी, भारतीय कास्टिक सोडा का बाजार, वैश्विक कास्टिक सोडा बाजार के 5% से कम है।

रक्षोपाय जांच की आवश्यकता :

83. भारतीय क्षार विनिर्माता एसोसिएशन (एएमएआई) ने भारत में कास्टिक सोडा के बढ़ते आयातों के कारण हुई गंभीर क्षति/गंभीर क्षति के खतरे से कास्टिक सोडा के घरेलू उत्पादकों को सुरक्षा प्रदान करने के लिए भारत में कास्टिक सोडा के आयातों पर रक्षोपाय शुल्क लागू करने हेतु एक आवेदन प्रस्तुत किया है। उन्होंने यह निवेदन भी किया है कि बढ़ते आयात के कारण उनके उद्योग अव्यवहार्य हो गए हैं तथा उद्योग को घाटा हो रहा है। लाभप्रदता एवं बाजार हिस्से में घाटे से अपूरणीय क्षति हो रही है तथा घरेलू उद्योग को सुरक्षा प्रदान करने के लिए अनंतिम रक्षोपाय शुल्क लगाया जाना चाहिए। उनके द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यों से प्रथम दृष्ट्या गंभीर क्षति के खतरे/गंभीर क्षति का मामला प्रतीत होता है। अतः 20 अगस्त, 2009 को जाँच

शुरू की गई थी। जांच के दौरान आवेदकों ने संवेदनशील स्थितियों के संबंध में विस्तृत साक्ष्य प्रस्तुत किए और अनंतिम रक्षोपाय शुल्क लागू करने का अनुरोध किया।

क्या जांच पूर्ण किए बिना अनंतिम रक्षोपाय शुल्क लगाया जा सकता है ?

84. रक्षोपाय को तत्काल लागू करने के मुद्दे की जांच की गई थी। यह देखा गया है कि विश्व भर में अनेक मामलों में रक्षोपाय जांच शुरू करने के 30 दिनों के भीतर अनंतिम रक्षोपायों की सिफारिश की गई है/रक्षोपाय लागू किए गए हैं। कुछ मामलों में जांच शुरू करने की तारीख को ही अनंतिम रक्षोपायों की सिफारिश की गई है। दिनांक 29.07.1997 की अधिसूचना सं0. 35/97-एनटी/सी.शु. के सीमाशुल्क टैरिफ (रक्षोपाय शुल्क का अभिज्ञान एवं आकलन) नियम, 1997 के नियम 9 में यह निर्धारित किया गया है कि महानिदेशक जांच सूबंधी कार्यवाहियों को शीघ्रतापूर्वक आगे बढ़ाएंगे तथा संवेदनशील परिस्थितियों में वे गंभीर क्षति अथवा गंभीर क्षति के खतरे के संबंध में एक प्रारंभिक जांच परिणाम दर्ज करेंगे। जांचों को शासित करने वाले सिद्धांत सीमाशुल्क टैरिफ (रक्षोपाय शुल्क का अभिज्ञान तथा आकलन) नियम के नियम 6 में दिए गए हैं, जो नियम 9 से स्वतंत्र हैं। सीमाशुल्क टैरिफ (रक्षोपाय शुल्क का अभिज्ञान एवं आकलन) नियम के नियम 15 में जांच समाप्त होने के पश्चात लगाया गया रक्षोपाय शुल्क पहले से लागू एवं संग्रहित अनंतिम शुल्क से कम होने पर रक्षोपाय शुल्क की प्रतिपूर्ति का प्रावधान किया गया है। उक्त नियमों के नियम 6,9 तथा 14 के सुमेलीकृत पठन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि नियमों में प्रारंभिक जांच परिणामों के आधार पर अनंतिम रक्षोपाय शुल्क के शीघ्र सिफारिश का प्रावधान किया गया है। जैसा कि नियम 6 में निहित है प्राकृतिक न्याय के अनुपालन में यदि यह पाया जाता है कि जांच के समाप्त होने के पश्चात लगाया गया शुल्क अनंतिम रक्षोपाय शुल्क से कम है तो अंतरिम शुल्क की प्रतिपूर्ति का भी प्रावधान है।

85. यह नोट किया गया है कि संवेदनशील परिस्थितियों में अनंतिम रक्षोपाय शुल्क लागू करने में विलम्ब से ऐसी क्षति हो सकती है जिसकी भरपाई मुश्किल हो और इसलिए यह पता लगाने के लिए कि, परिस्थिति संवेदनशील श्रेणी में आती है या नहीं परिस्थिति का आकलन करना विवेकपूर्ण माना गया है।

जांचाधीन उत्पाद

86. जांचाधीन उत्पाद “सोडियम हाइड्रॉक्साइड” है जिसे क्षारीय स्वरूप में कास्टिक सोडा के नाम से भी जाना जाता है। कास्टिक सोडा को सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 की अनुसूची I के उप-शीर्ष सं. 2815 के तहत वर्गीकृत किया गया है। कास्टिक सोडा को

रासायनिक तौर पर NaOH के नाम से जाना जाता है। कास्टिक सोडा एक झागदार, अत्यधिक क्षारीय, गंधहीन द्रव्य है जिसका विविध औद्योगिक क्षेत्रों में या तो कच्ची सामग्री के रूप में अथवा एक आनुषंगिक रसायन के रूप में व्यापक रूप से उपयोग में लाया जाता है। इसका उपयोग लुगदी एवं कागज, अखबार के प्रिंट, विस्कस यार्न, स्टेपल फाइबर, एल्यूमीनियम, रुई आदि के विनिर्माण में किया जाता है। प्रारंभिक जांच परिणाम से यह पता चला है कि आयातित कास्टिक सोडा की तकनीकी विशेषताएं समान होती हैं, उनकी बिक्री समान विपणन माध्यमों से की जाती है तथा उन्हें एक-दूसरे के स्थान पर उपयोग में लाया जा सकता है। अतः आयातित कास्टिक सोडा को, घरेलू रूप से उत्पादित कास्टिक सोडा के “समान अथवा प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी” वस्तु माना जाता है।

घरेलू उद्योग :

87. सीमाशूल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 8ख(6)(ख) के अनुसार घरेलू उद्योग को निम्नानुसार परिभाषित किया गया है :

- (ख) “घरेलू उद्योग” का तात्पर्य ऐसे उत्पादकों से है-
 - (i) जो भारत में समग्र रूप से समान वस्तु अथवा प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी वस्तु के उत्पादक हों अथवा
 - (ii) जिनका भारत में समान वस्तु अथवा प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी वस्तु का कुल उत्पादन, भारत में उक्त वस्तु के कुल उत्पादन का एक प्रमुख हिस्सा बनता है।

88. वर्तमान मामले में कास्टिक सोडा के आयातों पर खोपाय शुल्क लागू करने हेतु भारतीय अल्कली विनिर्माता एसोसिएशन (एएमएआई), तीसरा तल, पंकज चैम्बर्स, प्रीत विहार, कर्मशियल कॉम्प्लैक्स, विकास मार्ग, नई दिल्ली-110092 द्वारा आवेदन प्रस्तुत किया गया है। आवेदक ने कुछेक ऐसी कंपनियों के आंकड़े प्रकट किए हैं जिनका हिस्सा भारतीय उत्पादन में 35% है। उन्होंने यह भी तर्क दिया है कि “प्रमुख” का अर्थ 50% से अधिक नहीं है। अपने तर्क के समर्थन में उन्होंने अर्जेंटीना-ब्राजील से कुक्कुट पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क के मामले में पैनल की रिपोर्ट का संदर्भ भी दिया है। तथापि आवेदक द्वारा दिए गए तर्क की वैधता पर अधिक विचार न करते हुए, खोपाय जांच प्रारंभिक तौर पर, घरेलू उद्योग के रूप में 13(तेरह) विनिर्माता इकाइयों पर आधारित थी, जिनका हिस्सा, भारत में कुल घरेलू उत्पादन का 60% से अधिक बनता है। “घरेलू उद्योग” के संबंध में प्रारंभिक जांच के अनुसार 13 इकाइयाँ, घरेलू उद्योग हैं। ये विनिर्माण इकाइयाँ हैं :

- i. मै. पंजाब अल्कलीज एंड केमिकल्स लि. (इकाई I तथा II), नंगल ऊना रोड नया नंगल, जिला-रोपड़, पंजाब
- ii. मै. सिएल केमिकल कॉम्प्लेक्स (मवाना शुगर्स लि. की एक इकाई), ग्राम-खदौली, चरतसमपुर, राजपुरा, जिला-पटियाला

- iii. मै. ग्रासिम इंडस्ट्रीज लि., रसायन प्रभाग, पो.ओ.-बिरलाग्राम, नागदा (म. प्र.)
- iv. मै. गुजरात अल्कलीज एंड केमिकल्स लि., दाहेज, पो.ओ.-दाहेज, तवाग्रा, जिला-भरुच
- v. मै. गुजरात अल्कलीज एंड केमिकल्स लि., बड़ौदा, पो.ओ.- पेट्रोकैमिकल्स, रनौली, बड़ौदा-391346
- vi. डीसीएम, श्रीराम, श्रीराम फर्टिलाइजर एंड केमिकल्स, डीएससीएल की एक इकाई, कोटा
- vii. श्रीराम अल्कली एंड केमिकल्स, 749, जीआईडीसी औद्योगिक क्षेत्र, झगड़िया, जिला-भरुच, गुजरात-393110
- viii. मै. रिलायंस इंडस्ट्रीज लि., दाहेज, दाहेज विनिर्माण प्रभाग, पो.ओ.-दाहेज, जिला-भरुच, गुजरात-392130
- ix. मै. डीसीडब्ल्यू लि., साहूपुरम, जिला तूतीकोरिन
- x. इंडियन रेयॉन, आदित्य बिड़ला की एक इकाई, न्यूवो लि., जूनागढ़-वेरावल रोड, विरावल जिला-जूनागढ़, पिन-362012
- xi. मै. गुजरात फ्लूरो केमिकल्स लि., प्लॉट सं. 12-ए, जीआईडीसी, औद्योगिक क्षेत्र, दाहेज, भरुच, गुजरात
- xii. मै. कन्नौरिया केमिकल्स एंड इंड. लि., पो.ओ.-रेणूकोट-231217, जिला-सोनभद्रा
- xiii. आदित्य बिड़ला केमिकल्स (आई) लि. (पूर्व में मै. बिहार कार्स्टिक एंड केमिकल्स), गढ़वा रोड, ग्राम एवं पो.ओ.-रेहला, जिला-पलामू (झारखण्ड)

89. भारत के कुल उत्पादन में इन 13 विनिर्माण इकाइयों का हिस्सा निम्नानुसार रहा है :

तालिका-1

कुल उत्पादन में घरेलू उद्योग का हिस्सा (%)				
तिमाही	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
पहली तिमाही	60	67	64	68
दूसरी तिमाही	60	68	66	
तीसरी तिमाही	62	65	65	
चौथी तिमाही	63	61	71	

90. ऊपर उल्लिखित उत्पादकों का समग्र उत्पादन भारत में कार्स्टिक सोडा के कुल उत्पादन के 60% से अधिक है, जो कि एक प्रमुख भाग है। अतः प्रारंभिक निर्धारण यह है कि ऊपर उल्लिखित घरेलू उत्पादक रक्षोपाय शुल्क नियम 1997 की धारा 8ख(6)(ख)(iii) के तहत अपेक्षा एवं परिमाणा के अनुसार घरेलू उद्योग हैं।

जाँच की अवधि :

91. सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975, सीमाशुल्क टैरिफ (परिवर्ती उत्पाद विशिष्ट रक्षोपाय शुल्क) नियम 2002, रक्षोपाय करार अथवा गैट के संगत अनुच्छेद XIX में इस

आशय की विशिष्ट परिभाषा नहीं दी गई है कि जांच अवधि क्या होनी चाहिए । तथापि, अर्जेंटीना फुटवियर पर पैनल की रिपोर्ट में एवं अर्जेंटीना पर अपीलीय निकाय की रिपोर्ट में जांच अवधि के मुद्दे पर विस्तार से चर्चा की गई है जिन्हें नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है ।

“अर्जेंटीना-फुटवियर के आयातों पर खोपाय : पैनल की रिपोर्ट

8.216 जहाँ तक जाँच में घरेलू उद्योग की स्थिति में परिवर्तन के विश्लेषण में एक छोर से लेकर दूसरे छोर तक की गई तुलनाओं पर लगभग पूर्ण भरोसा किए जाने का संबंध है, हमारी भी वही चिंता है जैसी कि “संवर्धित आयातों” के विश्लेषण के बारे में ऊपर नोट किया गया है । यहाँ हम इस बात को खासतौर पर नोट करते हैं कि यदि मध्यवर्ती रुझानों पर क्रमबद्ध ढंग से विचार नहीं किया जाता है और उनका विश्लेषण नहीं किया जाता है तो सक्षम प्राधिकारी “समस्त संगत कारकों” का विश्लेषण करने के बारे में अनुच्छेद 4.2(क) की अपेक्षा को पूरा नहीं कर रहे हैं और इसके अलावा घरेलू उद्योग की स्थिति का पूर्णरूप से आकलन नहीं होता है । उदाहरणार्थ, ऐसी किसी उद्योग की स्थिति, जिसका उत्पादन एक वर्ष में काफी कम हो जाता है परंतु उसके बाद उसमें लगातार सुधार होता है यद्यपि कुछ स्तर तक यह शुरूआती स्तर से कुछ कम रहता है तो यह स्थिति तर्कसम्मत ढंग से ऐसे किसी उद्योग की स्थिति से अलग होगी जिसके उत्पादन में विस्तारित अवधि के दौरान लगातार गिरावट आई है । एक छोर से दूसरे छोर तक का विश्लेषण दोनों मामलों में एक समान होना चाहिए जबकि वर्ष-दर-वर्ष परिवर्तनों एवं रुझानों पर विचार करने से पूर्णतः विपरीत निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं ।

हमारा मानना है कि विभिन्न क्षतिकारकों में जांच अवधि के दौरान परिवर्तनों पर विचार करना इस बात के निर्धारण हेतु अनिवार्य है कि क्या किसी उद्योग को गंभीर क्षति हुई है या गंभीर क्षति होने का आसन्न्वर्ती खतरा उत्पन्न हो गया है । मध्यवर्ती रुझानों पर विचार किए बिना एक छोर से दूसरे छोर तक की तुलना से अपेक्षानुसार समस्त संगत कारकों का पूर्ण मूल्यांकन प्रदान करने की संभावना नहीं है ।

अपीलीय निकाय की रिपोर्ट

नोट 130.

पैनल ने पैनल रिपोर्ट के पैरा 8.166 की पाद टिप्पणी 530 में यह स्वीकार किया है कि वर्तमान काल का उपयोग किया जा रहा है जिसमें यह उल्लेख है कि “यह प्रतीत होगा कि जांच अवधि का शुरूआती बिंदु कोई भी हो उसे हाल की निकटतम अवधि से अधिक नहीं होना चाहिए” (जोर दिया गया) । यहाँ हम पैनल से सहमत नहीं हैं । हमारा मानना है कि संगत जांच अवधि हाल की निकटतम अवधि में समाप्त नहीं होनी चाहिए अपितु उसे हाल की अवधि होनी चाहिए ।

92. उपर्युक्त से यह स्पष्ट हो जाता है कि न तो खोपाय करार और न ही डब्ल्यूटीओ के संगत प्रावधानों में जांच अवधि की विशिष्ट परिभाषा या व्याख्या निहित नहीं है । अपालोड निकाय की रिपोर्ट में साफ तौर पर यह जाँच परिणाम दिया गया है कि संगत जाँच अवधि हाल

की निकटतम अवधि में समाप्त नहीं होनी चाहिए; जाँच अवधि हाल की अवधि होनी चाहिए। अतः आवेदन दायर करने के बाद की अवधि की रक्षोपाय जाँच में अनदेखी नहीं की जा सकती। तथापि, प्राकृतिक न्याय की जरूरत को पूरा करने के लिए यह आवश्यक है कि जाँच की शुरूआत के बाद प्राप्त या संगृहीत सूचना हितबद्ध पक्षकारों के पास उपलब्ध हो।

93. वर्तमान जाँच में जनवरी, 2009 से जून, 2009 तक की अवधि पर विचार किया गया है। अप्रैल, 2006 से दिसम्बर, 2008 की अवधि से संबंधित सूचना पर भी तुलना हेतु एवं प्रवृत्ति की अध्ययन हेतु विचार किया गया है। इसके अलावा, एक उचित एवं व्यापक विश्लेषण हेतु जून, 2009 के बाद के आंकड़ों पर भी विचार किया गया था।

सूचना की पद्धति एवं स्रोत :

94. आयात आंकड़ों के प्रयोजनार्थ वित्त वर्ष 2007-08 हेतु डीजीसीआई एंड एस के आंकड़ों पर और उसके बाद की अवधि के लिए आईबीआईएस के आंकड़ों पर विचार किया गया था। सूचना के सौदेवार व्यौरे सार्वजनिक फाइल में रखे गए हैं। भारत के सभी विनिर्माताओं से संबंधित अन्य आर्थिक मानदण्डों को अल्कली मैन्यूफैक्चरर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एएमएआई) तथा अलग-अलग इकाइयों द्वारा प्राप्त किया गया था। इसके अतिरिक्त हरिमन केमसल्ट लि. की अध्ययन रिपोर्ट, जो क्लोर-अल्कली उद्योग में व्यापक रूप से पढ़ी जाती है, की भी सहायता ली गई थी। यदि किसी और सूचना का इस्तेमाल किया गया है तो उस सूचना के साथ उसके स्रोत का उल्लेख किया गया है।

95. चूँकि जाँच की शुरूआत वर्ष के बीच में की गई है, अतः वार्षिक सूचना अत्यंत अद्यतन सूचना नहीं होगी। अतः विश्लेषण के प्रयोजनार्थ, त्रैमासिक तथा मासिक आंकड़ों का भी उपयोग किया गया है। प्रत्येक अवधि की भिन्नताओं, यदि कोई हों, के प्रभावों के निराकरण हेतु पूर्ववर्ती वर्षों की समनुरूपी अवधि के साथ तुलना की गई है। शब्द संक्षेप ति.1, ति.2, ति.3 और ति.4 का तात्पर्य क्रमशः अप्रैल-जून, जुलाई-सितम्बर, अक्टूबर-दिसंबर और जनवरी-मार्च है। प्रवृत्ति का विश्लेषण करने के लिए वास्तविक मासिक आंकड़ों पर विचार किया गया है, अतः नमूनों की मात्रा काफी अधिक है।

96. इसके अलावा, गंभीर क्षति अथवा गंभीर क्षति के खतरे के निर्धारण हेतु आर्थिक कारकों का विश्लेषण करते हुए घरेलू उद्योग (अर्थात् 13 इकाइयाँ) तथा भारत के सभी उत्पादकों, दोनों के लिए इन कारकों का विश्लेषण किया गया है ताकि भारतीय उद्योग में आर्थिक कारकों को प्रभावित करने वाले अंतर इकाई परिवर्तनों पर विचार किया जा सके।

क्या आयातों में वृद्धि हुई है?

97. आयात वृद्धि : निम्नलिखित तालिका में लाई रूप में कास्टिक सोडा से संबंधित तिमाही के आयात के आंकड़े दिए गए हैं।

तालिका-2

तिमाही आयात(डीएमटी)(ड्राई मीट्रिक टन)				
तिमाही	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
ति 1	33641	32149	59180	101227
ति 2	15762	18149	38933	
ति 3	45114	59299	6062	
ति 4	20186	22614	82173	

तालिका 2क

• आयातों की मात्रा (डीएमटी)	
जुलाई 2009	43164
जुलाई 2008	2082

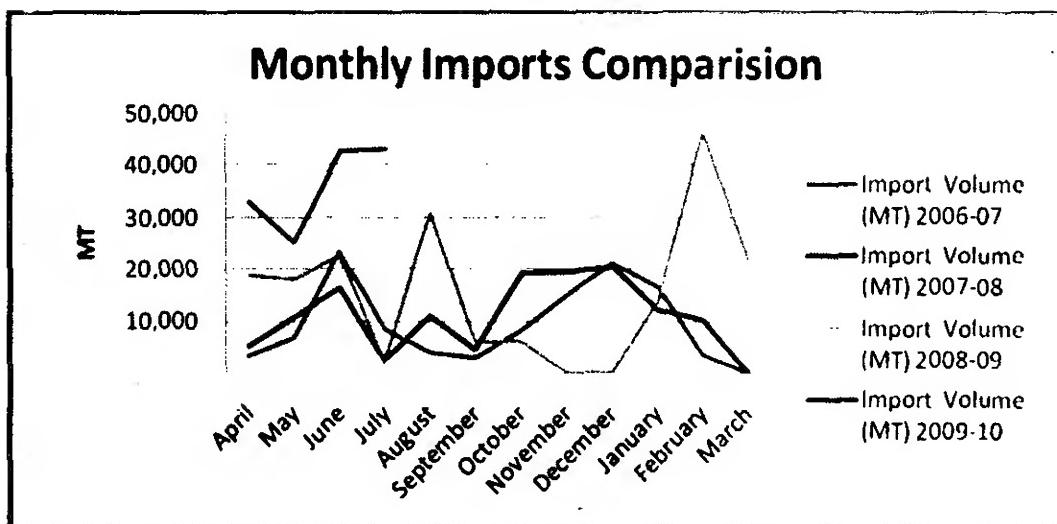
98. वर्ष 2008-09 की ति.4 और 2009-10 की ति.1 में हुए आयात पिछले तीन वर्षों के दौरान किसी भी तिमाही में हुए आयातों की तुलना में अधिक रहे थे। वर्ष 2008-09 की ति.4 में वर्ष 2007-08 की ति.4 की तुलना में हुए आयातों में 263% की वृद्धि प्रदर्शित होती है। इसके अलावा, वर्ष 2008-09 के ति.1 की तुलना में वर्ष 2009-10 की ति.1 में आयातों में 71% की वृद्धि हुई है।

99. यह देखा जाता है कि वर्ष 2006-07, 2007-08 और 2008-09 के दौरान कुल आयात 114703 डीएमटी, 132211 डीएमटी तथा 186348 डीएमटी के हुए थे। वर्ष 2009-10 में हुए आयात अगस्त, 2009 में 2 लाख डीएमटी के स्तर पर पहुंच गए अर्थात् वर्ष 2009-10 के प्रथम पांच माह में हुए आयात विश्लेषण हेतु विचारित समूची अवधि के पिछले वर्षों के वार्षिक आयातों की तुलना में अधिक रहे थे। अतः यद्यपि विगत में आयातों में वृद्धि हुई है, तथापि यह वृद्धि हाल की अवधि में काफी अधिक रही है।

100. आयातों की पिछली प्रवृत्तियों तथा वर्तमान प्रवृत्तियों का अध्ययन करने के लिए आयातों के आंकड़ों का उपयोग किया गया है। निम्नलिखित रेखाचित्र से अयातों की मासिक प्रवृत्ति का पता चलता है।

रेखाचित्र-1

मासिक आयात की तुलना



उपर्युक्त रेखाचित्र से यह पता चलता है कि जनवरी, 2009 से जुलाई, 2009 के दौरान आयात पूर्ववर्ती वर्षों के इन्हीं महीनों के दौरान हुए आयातों की तुलना में अधिक रहे हैं। यह तत्काल पूर्ववर्ती जनवरी, 2009 की अवधि से भी अधिक रहे हैं। जनवरी-जून, 2009 के दौरान औसत मासिक आयात 30567 डीएमटी के हुए थे जबकि जुलाई-दिसम्बर, 2008 के दौरान 7499 डीएमटी और जनवरी-दिसम्बर, 2008 के दौरान 10566 मी. टन के औसत मासिक आयात हुए थे।

101. अतः प्रारंभिक निर्धारण यह है कि आयात में वृद्धि हुई है।

102. आयातों में तुलनात्मक वृद्धि : भारत के कुल बाजार आकार में आयातों का हिस्सा निम्नानुसार है :-

तालिका 3

कुल बाजार आकार में आयातों का हिस्सा (%)				
तिमाही	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
ति 1	6.95	6.84	11.93	18.29
ति 2	3.43	3.94	8.10	
ति 3	9.11	12.03	1.37	
ति 4	4.32	4.75	15.57	

103. वर्ष 2008-09 की पिछली तिमाही में आयातों का बाजार हिस्सा बढ़कर 15.57% और 2009-10 की पहली तिमाही में बढ़कर 18.29% हो गया। वर्ष 2009 में जनवरी से जून तक आयातों का हिस्सा वर्ष 2006-07 की शुरुआती अवधि में सर्वाधिक रहा है। जुलाई, 2009 के महीने

में आयातों का बाजार हिस्सा 18.5% रहा है जिससे आयातों के बाजार हिस्से में निरंतर वृद्धिकारी प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है।

104. अतः प्रारंभिक निर्धारण यह है कि आयातों में तुलनात्मक रूप में भी वृद्धि हुई है।

आयात किन परिस्थितियों में हो रहे हैं?

105. निम्नलिखित तालिका में आयातों का औसत मूल्य प्रति डीएमटी दिया गया है।

तालिका 4

आयातों का मूल्य (रु./डीएमटी)				
तिमाही	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
ति 1	14512	14274	15551	14574
ति 2	14957	14635	14294	
ति 3	16109	14954	16479	
ति 4	15622	14066	12697	

तालिका 4क

आयातों का मूल्य (रु./डीएमटी)	
जुलाई 2009	12375
जुलाई 2008	21108

106. पूर्ववर्ती वर्ष की समान तिमाहियों की तुलना में वर्ष 2008-09 की ति.4 में आयातों के प्रति डीएमटी औसत मूल्य में 9.7% और 2009-10 की ति.1 में 9.4% की गिरावट आई है। गिरावट की यह प्रवृत्ति जुलाई, 2009 में जारी रही और आयात कीमत घटकर 12375 रुपए/डीएमटी हो गई। इसके अलावा, अंतर्राष्ट्रीय बाजार में निर्यात कीमत में तीव्र गिरावट देखी गई है जिससे भी आयात घरेलू रूप से उत्पादित कास्टिक सोडा की तुलना में सस्ते हुए हैं।¹

107. अतः प्रारंभिक जांच परिणाम यह है कि आयात कम कीमतों पर हो रहे हैं।

क्या आयातों में वृद्धि अप्रत्याशित घटनाक्रमों के कारण हुई है?

108. "अप्रत्याशित घटनाक्रम" वाक्यांश का तात्पर्य ऐसी घटनाओं से है जो अप्रत्याशित हैं।²

1 तालिका 22 देखें।

2 अर्जेन्टीना फुटवियर के मामले में अपीलीय निकाय की रिपोर्ट (एवीआर) में अप्रत्याशित घटनाक्रमों का अर्थनिरूपण किया गया है जो नीचे पुनः उद्धृत है।

109. हाल की अवधि में अर्थव्यवस्था में व्याप्त वित्तीय मंदी और हासकारी स्थिति असमानांतर रही है। वैश्विक मंदी से विश्व भर में विनिर्माण क्षेत्र में अचानक गिरावट आई है। यह गिरावट अलग-अलग देशों में और अर्थव्यवस्था के अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग रही है। विनिर्माण क्षेत्र में कास्टिक सोडा उद्योग भी मंदी से प्रभावित हुआ है। उत्तर अमरीका, यूरोप और एशिया के कई भागों में कास्टिक सोडा की मांग में मंदी के कारण कीमतों में भारी गिरावट आई है। उदाहरणार्थ अमरीका में कास्टिक सोडा की भौके पर कीमत में उस कीमत से 10 गुना गिरावट आई है जो सामान्यतः होनी चाहिए थी।³

110. तथापि, विभिन्न देशों में व्याप्त मंदी के बावजूद भारत में वर्ष 2008-09 की तिथि को छोड़कर कास्टिक सोडा की मांग में वृद्धि जारी रही थी। उत्तर अमरीका और यूरोप में व्याप्त मंदी के कारण कीमत की प्रवृत्ति निर्धारित हुई क्योंकि उनके पास वैश्विक उत्पादन क्षमता की आधे से अधिक क्षमता है।

111. ये घटनाक्रम अप्रत्याशित हैं और इसलिए ये "अप्रत्याशित घटनाक्रम" हैं। इन घटनाक्रमों से कीमत में अंतर हुआ है और विश्व के विभिन्न भागों में मांग-आपूर्ति की स्थिति में भी बदलाव आया है। इससे भारतीय घरेलू कीमत तथा निर्यात कीमत के बीच भी भारी अंतर हुआ है जिसके परिणामस्वरूप भारत को होने वाले आयातों में वृद्धि हुई है।

गंभीर क्षति या गंभीर क्षति के खतरे से संबंधित साक्ष्यों का मूल्यांकन

"जहां तक अप्रत्याशित घटनाक्रमों" के अर्थ का संबंध है, हम यह नोट करते हैं कि "अप्रत्याशित" की शब्दकोशगत परिभाषा विशेष रूप से "घटनाक्रम" शब्द से संबंध रखती है जो "अप्रत्याशित" का समानार्थी है। दूसरी ओर "अप्रत्याशित" को शब्दकोशों में "अपूर्वानुमेय" या "अदर्शनीय, अकथनीय या अवांछित" के रूप में अर्थ दिया गया है। अतः हमें यह प्रतीत होता है कि "अप्रत्याशित घटनाक्रमों के परिणामस्वरूप" वाक्यांश के तात्पर्य में यह अपेक्षा की गई है कि ऐसे घटनाक्रम, जिनमें किसी उत्पाद का आयात इतनी अधिक बढ़ी हुई मात्रा में और ऐसी परिस्थितियों में हआ है, जिससे घरेलू उत्पादकों को गंभीर क्षति हुई है या उसका खतरा उत्पन्न हो गया है, "अप्रत्याशित" होने चाहिए।

सांविधिक संरचना

112. "गंभीर क्षति" का तात्पर्य ऐसी क्षति से है जिसके कारण घरेलू उद्योग की स्थिति में समग्र विकृति आई है; और "गंभीर क्षति के खतरे" का तात्पर्य स्पष्ट और आसन्नर्वती गंभीर क्षति के खतरे से है।⁵

3 स्रोत: www.icis.com तथा हरीमन कैमसल्स लि.

4 सी.शु.टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 8 ख (6) (ग)

5 सी.शु.टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 8 ख (6) (घ)

113. रक्षोपाय करार के अनुच्छेद 4.2 (क) तथा सीमाशुल्क टैरिफ़ (रक्षोपाय शुल्क का अभिज्ञान एवं निर्धारण) नियम 1997 के नियम 8 में तकनीकी रूप से यह उल्लिखित है कि गंभीर क्षति या गंभीर खतरे के निर्धारण हेतु कुछेक सूचीबद्ध कारकों तथा अन्य संगत कारकों का मूल्यांकन किया जाना चाहिए। तथापि, इन उपबंधों में उस बात को विनिर्दिष्ट नहीं किया गया है कि ऐसे किसी मूल्यांकन से क्या प्रदर्शित होना चाहिए। इस प्रकार का कोई मूल्यांकन किसी मामला विशेष के तथ्यों और संबंधित घरेलू उद्योग की स्थिति पर निर्भर रहते हुए अलग-अलग मामलों में अलग-अलग उद्योगों के लिए अलग-अलग होगा। प्रत्येक सूचीबद्ध कारक के मूल्यांकन में यह प्रदर्शित करना पड़ेगा कि ऐसे प्रत्येक कारक में "गिरावट" आ रही है। उदाहरणार्थ एक मामले में बिक्री, रोजगार एवं उत्पादकता में अत्यधिक गिरावट हो सकती है जिससे "घरेलू उद्योग की स्थिति में" "पर्याप्त समग्र विकृति" का पता चलेगा और इस प्रकार गंभीर क्षति से संबंधित जांच परिणाम न्यायोचित ठहरेगा। दूसरे मामले में कुछेक ऐसे कारक जिनमें गिरावट नहीं आई है परंतु समग्र स्थिति से यह पता चलता है कि उद्योग में "पर्याप्त समग्र विकृति" आई है। इस प्रकार समस्त सूचीबद्ध कारकों और किसी अन्य संगत कारक की तकनीकी जांच के अलावा यह अनिवार्य है कि उक्त उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले समस्त संगत कारकों को ध्यान में रखते हुए घरेलू उद्योग की समग्र स्थिति का मूल्यांकन किया जाए।⁶

114. तदनुसार गंभीर क्षति या गंभीर क्षति के खतरे का विश्लेषण करने में उन सभी कारकों पर विचार किया गया है जिनका उल्लेख नियमों में किया गया है और अन्य कारकों पर भी विचार किया गया है जो गंभीर क्षति या गंभीर क्षति के खतरे के निर्धारण हेतु संगत हैं। किसी भी कारक को असंगत नहीं माना गया है। संगत व्यापार चक्र एवं प्रतिस्पर्धा की स्थितियों के संदर्भ में ऐसे समस्त संगत कारकों पर विचार किया गया है जो प्रभावित घरेलू उद्योग के लिए संगत हैं। गंभीर क्षति या गंभीर क्षति के खतरे का निर्धारण उक्त उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले समस्त संगत कारकों के महेनजर घरेलू उद्योग की समग्र स्थिति के मूल्यांकन के आधार पर किया गया है।

115. संगत कारकों का अभिज्ञान : संगत कारकों का प्रत्यक्ष लगाने के लिए रक्षोपाय जांच हेतु अनेक सदस्य देशों द्वारा अपनाई गई पद्धति एवं कास्टिक सोडा उद्योग के निष्पादन पर प्रभाव डालने वाले कारकों का अध्ययन किया गया था। रक्षोपाय नियमाबली के नियम 8 के अनुबंध में गंभीर क्षति या गंभीर क्षति के खतरे की मौजूदगी के निर्धारण हेतु निम्नलिखित कारकों का उल्लेख है :

- i. आयातों की वृद्धि दर
- ii. संबंधित आयातों द्वारा दिया गया घरेलू बाजार का हिस्सा
- iii. बिक्री स्तर में परिवर्तन
- iv. उत्पादन
- v. उत्पादकता
- vi. क्षमता उपयोग
- vii. लाभ एवं हानि
- viii. रोजगार

116. मूल्यांकन के लिए उन सभी कारकों को अपनाया गया है जिनका उल्लेख नियमों में किया गया है। इनके अलावा, इस मामले के लिए संगत कुछ अन्य कारकों पर भी विचार किया गया है। ये कारक हैं :

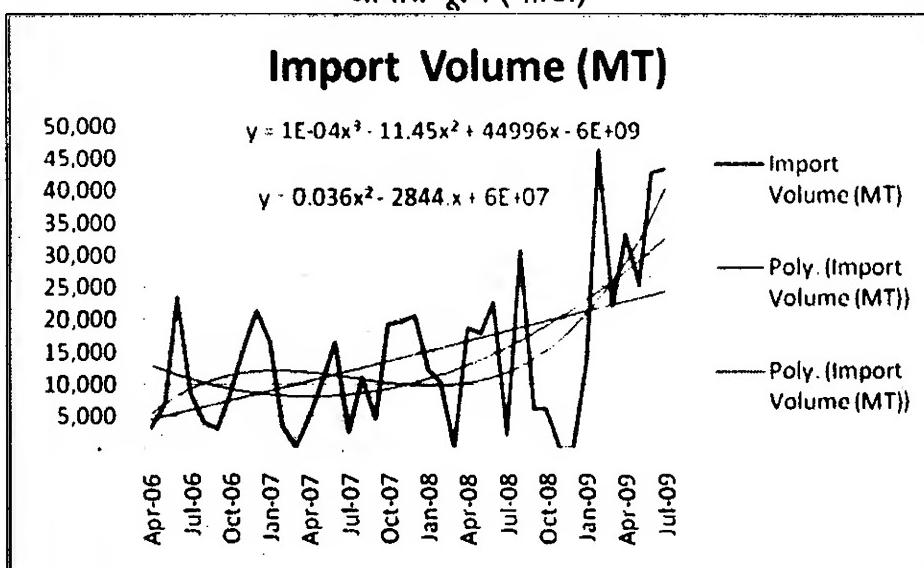
6. अर्जेन्टीना फुटवियर मामले में ढब्ब्यू टी ओ की अपीलीय निकाय की रिपोर्ट के फैस 139 पर आधारित।

- i. उद्गम या निर्यात के देश में निर्यात क्षमता जो इस समय मौजूद है या निकट भविष्य में जिसके बनने की संभावना है और इस बात की संभावना है कि उक्त क्षमता का उपयोग भारत को निर्यात के लिए किया जाएगा ।
- ii. बिक्री लागत ।
- iii. बिक्री कीमतों की प्रवृत्ति ।
- iv. ई सी यू की लाभप्रदता
- v. लगाई गई पूँजी पर आय ।

117. आयातों की वृद्धि दर: आयातों की वृद्धि दर का आकलन करने के लिए अप्रैल, 2007 के बाद आयातों की प्रवृत्ति का अध्ययन क्रम 2 तथा क्रम 3 के अनुरूप रेखाचित्र बनाकर किया गया है । इस प्रवृत्ति को निम्नलिखित चार्ट में दर्शाया गया है । प्रवृत्ति से यह प्रता चलता है कि आयातों में वृद्धि सकारात्मक रही है और आयातों में सतत वृद्धि हुई है । वर्ष 2009 में वृद्धि दर बढ़ी है ।

रेखाचित्र- 2

आयात मूल्य (मी.ट.)



118. संवर्धित आयातों द्वारा लिया गया घरेलू बाजार हिस्सा : निम्नलिखित तालिका में घरेलू बाजार में समस्त घरेलू उत्पादकों का हिस्सा दिया गया है ।

तालिका -5

घरेलू बाजार में घरेलू उत्पादकों का हिस्सा (%)				
तिथाई	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
ति 1	93.05	93.16	88.07	81.71

ति 2	96.57	96.06	91.90	
ति 3	90.89	87.97	98.63	
ति 4	95.68	95.25	84.43	

तालिका 5क

घरेलू बाजार में घरेलू उत्पादकों का हिस्सा (%)	
जुलाई 2009	79.8
जुलाई 2008	98.86

119. उपर्युक्त तालिका से यह पता चलता है कि वर्ष 2009-10 की ति.1 में घरेलू बाजार में घरेलू उत्पादकों का हिस्सा बढ़कर 81.71% हो गया है जो कि विश्लेषण हेतु विचारित समूची अवधि के दौरान सबसे कम है। घरेलू उत्पादकों का हिस्सा वर्ष 2008-09 की ति.4 में 84.43% रहा था जो वर्ष 2007-08 की इसी तिमाही में रहे 95.25% के हिस्से की तुलना में 10.82% कम है तथा वर्ष 2008-09 की तत्काल पूर्ववर्ती तिमाही अर्थात् ति.3 की तुलना में यह 14.20% है। जुलाई, 2009 में घरेलू उत्पादकों का बाजार हिस्सा घटकर 79.80% हो गया जो जुलाई, 2008 में 98.86% था।

120. संवर्धित आयातों ने वर्ष 2008-09 की ति.4 और 2009-10 की ति.1 में घरेलू उत्पादकों से बाजार हिस्से का क्रमशः 10.82% और 6.36% भाग ले लिया है।

121. बिक्री स्तर में परिवर्तन : तालिका 6 में समस्त घरेलू उत्पादकों द्वारा तिमाही की समेकित बिक्री दर्शायी गई है और तालिका 7 में 13 चुनिंदा घरेलू उत्पादकों द्वारा की गई समेकित बिक्री प्रदर्शित की गई है।

तालिका 6

समस्त घरेलू उत्पादकों द्वारा समेकित बिक्री (डीएमटी)				
तिमाही	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
ति 1	330,584	321,647	384,619	351,754
ति 2	337,714	344,480	399,305	
ति 3	336,639	342,040	370,919	
ति 4	354,842	407,860	328,600	

तालिका 6क

समस्त घरेलू उत्पादकों द्वारा समेकित बिक्री (डीएमटी)	
जुलाई 2009	190163
जुलाई 2008	195287

तालिका 7

13 चयनित घरेलू उत्पादकों द्वारा समेकित बिक्री (डीएमटी)				
तिमाही	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
ति 1	220,370	225,570	249,983	256,423
ति 2	216,402	247,064	268,271	
ति 3	221,810	231,824	237,284	
ति 4	230,426	256,051	254,194	

तालिका 7 क

13 चयनित घरेलू उत्पादकों द्वारा समेकित बिक्री (डीएमटी)	
जुलाई 2009	88754
जुलाई 2008	87845

122. समस्त घरेलू उत्पादकों द्वारा की गई समेकित बिक्री में वर्ष 2007-08 की तिमाही 4 की तुलना में 2008-09 की तिमाही 4 में 19.43% और 2008-09 की तिमाही 1 की तुलना में 2009-10 की तिमाही 1 में 8.54% की गिरावट आई है। यह नोट किया जाता है कि 2008-09 की तिमाही 3 तक अर्थात् संवर्धित आयात होने से पूर्व पूर्ववर्ती समान तिमाहियों की तुलना में समस्त घरेलू उत्पादकों की समेकित बिक्री अधिक रही थी। इससे यह पता चलता है कि संवर्धित आयातों से पूर्व बिक्री बढ़ रही थी लेकिन परिवर्ती तिमाहियों में बिक्री में गिरावट आई। बिक्री में यह गिरावट भारत में मांग में वृद्धि के बावजूद आई जिसमें पूर्ववर्ती वर्ष की संबंधित तिमाहियों की तुलना में वर्ष 2008-09 की तिमाही 4 और 2009-10 की तिमाही 1 में क्रमशः 9.81% और 10.38% की वृद्धि हुई है। मांग में वृद्धि का बिक्री एवं घरेलू कीमत दोनों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा होता यदि कास्टिक सोडा की आपूर्ति कम कीमत पर संवर्धित आयातों के कारण नहीं हुई होती, जिसकी वजह से घरेलू कीमत और बिक्री में गिरावट आई है।

123. समान तिमाहियों की तुलना में 13 चुनिन्दा घरेलू उत्पादकों की समेकित बिक्री में वर्ष 2008-09 की तिमाही 4 में 0.73% और 2009-10 की तिमाही 1 में 2.51% की वृद्धि हुई है। 13 चुनिन्दा घरेलू उत्पादकों, जो आकार के रूप में शीर्षस्थ 13 उत्पादक हैं, की बिक्री में वृद्धि निवल बिक्री प्राप्ति⁷ में कमी के कारण हुई है ताकि लगाई गई पूँजी पर आय⁸ में गिरावट की लागत पर आयातित कास्टिक सोडा की कीमत की बराबरी की जा सके जिसमें 2009-10 की तिमाही 1 में तीव्र गिरावट देखी गई है। सामान्यतः संवर्धित बिक्री से लाभ में वृद्धि होती है परंतु 13 इकाइयों के लाभ में वर्ष 2008-09 की तिमाही 1 में 6,462 लाख रुपए के लाभ की तुलना में 2009-10 की तिमाही 1 में 135 लाख रुपए के रूप में 98% की गिरावट आई है। अतः 13 इकाइयों द्वारा वर्ष 2009-10 की तिमाही 4 की गई बिक्रीयों में सुधार का तात्पर्य कास्टिक सोडा उद्योग की स्थिति में सुधार से नहीं है। इससे लाभप्रदता में कमी तथा नए बाजार को खोने के रूप में 13 इकाइयों को हुई क्षति का पता चलता है जो आयातित कास्टिक सोडा की कीमतों की बराबरी करने के अपने प्रयास के फलस्वरूप कीमत में कमी करने के बावजूद हुआ है।

124. उपर्युक्त के मद्देनजर यह नोट किया जाता है कि आयात में वृद्धि के बाद समस्त घरेलू उत्पादकों की संचयी बिक्री में गिरावट आई है। कीमत में गिरावट के साथ-साथ बिक्री में कमी के कारण संवर्धित आयातों का प्रभाव अधिक स्पष्ट हो गया है।

125. उत्पादन: तालिका 8 में समस्त घरेलू उत्पादकों द्वारा किए गए तिमाही समेकित सकल उत्पादन के आंकड़े दिए गए हैं और तालिका 9 में 13 चुनिन्दा घरेलू उत्पादकों का सकल समेकित उत्पादन दिया गया है।

तालिका 8

समस्त घरेलू उत्पादकों द्वारा समेकित सकल उत्पादन के आंकड़े (डीएमटी)				
तिमाही	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
ति 1	477,312	501,907	564,452	550,847
ति 2	487,181	518,436	577,407	
ति 3	510,146	544,103	537,053	
ति 4	524,370	600,540	519,196	

7 रेखांचित्र 3 देखें।

8 रेखांचित्र 8 देखें।

तालिका 8क

समस्त घरेलू उत्पादकों द्वारा समेकित सकल उत्पादन के आंकड़े (डीएमटी)	
जुलाई 2009	190163
जुलाई 2008	195287

तालिका 9

13 चुनिन्दा घरेलू उत्पादकों द्वारा समेकित सकल उत्पादन के आंकड़े (डीएमटी)				
तिमाही	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
ति 1	288,186	335,056	360,868	376,344
ति 2	290,756	354,925	379,758	
ति 3	316,777	352,145	351,606	
ति 4	328,025	367,597	366,989	

तालिका 9क

13 चुनिन्दा घरेलू उत्पादकों द्वारा समेकित सकल उत्पादन के आंकड़े (डीएमटी)	
जुलाई 2009	128623
जुलाई 2008	126168

126. वर्ष 2008-09 की तिं 4 में समस्त घरेलू उत्पादकों के समेकित उत्पादन में 2007-08 की इसी तिमाही की तुलना में 13.54% की गिरावट आई है। वर्ष 2009-10 की तिं 1 में उत्पादन में 2009-10 की इसी अवधि की तुलना में 2.41% की गिरावट आई है। जुलाई, 2009 में इन उत्पादकों का उत्पादन जुलाई, 2008 में हुए 1,95,287 की तुलना में 1,90,163 का हुआ था जिससे सतत गिरावट की प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है। उत्पादन में यह गिरावट भारतीय घरेलू बाजार में मांग में हुई वृद्धि के बावजूद आई है।

127. वर्ष 2008-09 की तिं 4 में 13 चुनिन्दा घरेलू उत्पादकों का समेकित उत्पादन 2007-08 की तिं 4 की तुलना में कम रहा है। तथापि, वर्ष 2009-10 की तिं 1 में उत्पादन 2008-09 की तिं 1 में हुए उत्पादन से अधिक रहा है। वर्ष 2009-10 की तिं 1 में उत्पादन में 4.2% की वृद्धि बाजार में होने वाली बिक्री में 2.5% की वृद्धि के कारण हुई है जो बढ़कर 10.4% हो गई है। इसके अलावा, उपर्युक्त पैरा 123 में की गई चर्चा के अनुसार बिक्री में इस वृद्धि से भारत के घरेलू उत्पादकों के निष्पादन में सुधार का पता नहीं चलता है। इसी प्रकार यदि लाभप्रदता एवं आरओसीई का विश्लेषण किया जाए तो उत्पादन में मामूली वृद्धि से निष्पादन में सुधार का भी पता नहीं चलता है।

128. उपर्युक्त से यह पता चलता है कि समस्त घरेलू उत्पादकों के कुल उत्पादन में गिरावट आई है। समस्त घरेलू उत्पादकों के कुल उत्पादन में यह गिरावट घरेलू मांग में वृद्धि के बावजूद आई है। अतः यह देखा जाता है कि भारत के बाजार आकार में वृद्धि होने पर भी समस्त घरेलू उत्पादकों के संचयी उत्पादन में गिरावट आई है।

129. क्षमता उपयोग : तालिका 10 और तालिका 11 में समस्त घरेलू उत्पादकों की तिमाही क्षमता और क्षमता उपयोग के उल्लेख है तथा तालिका 12 और तालिका 13 में 13 चुनिन्दा कास्टिक सोडा के उत्पादकों की क्रमशः तिमाही क्षमता और तिमाही क्षमता उपयोग का उल्लेख है।

तालिका 10

समस्त घरेलू उत्पादकों की क्षमता (डीएमटी)				
तिमाही	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
ति 1	636,961	673,558	705,797	763,583
ति 2	636,961	676,201	722,384	
ति 3	636,961	686,949	744,471	
ति 4	636,961	705,091	750,348	

तालिका 10 क

समस्त घरेलू उत्पादकों की क्षमता (डीएमटी)	
जुलाई 2009	256648
जुलाई 2008	235266

तालिका 11

समस्त घरेलू उत्पादकों की क्षमता उपयोग (%)				
तिमाही	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
ति 1	74.94	74.52	79.97	72.14
ति 2	76.49	76.67	79.93	
ति 3	80.09	79.21	72.14	
ति 4	82.32	85.17	69.19	

तालिका 11 क

समस्त घरेलू उत्पादकों की क्षमता उपयोग (%)	
जुलाई 2009	74.09
जुलाई 2008	85.20

तालिका 12

कास्टिक सोडा के 13 चुनिन्दा उत्पादकों की क्षमता (डीएमटी)				
तिमाही	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
ति 1	349,863	389,412	411,439	438,830
ति 2	349,863	390,072	417,924	
ति 3	349,863	400,071	426,940	
ति 4	349,863	399,239	435,600	

तालिका 12क

कास्टिक सोडा के 13 चुनिन्दा उत्पादकों की क्षमता (डीएमटी)	
जुलाई 2009	146950
जुलाई 2008	137606

तालिका 13

कास्टिक सोडा के 13 चुनिन्दा उत्पादकों का क्षमता उपयोग (%)				
तिमाही	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
ति 1	82.37	86.04	87.71	85.76
ति 2	83.11	90.99	90.87	
ति 3	90.54	88.02	82.35	
ति 4	93.76	92.07	84.25	

तालिका 13क

कास्टिक सोडा के 13 चुनिन्दा उत्पादकों का क्षमता उपयोग (%)	
जुलाई 2009	87.35
जुलाई 2008	91.69

130. समस्त घरेलू उत्पादकों की संचयी स्थापित क्षमता में वृद्धि हो रही है । वर्ष 2008-09 की तिमाही में क्षमता में वृद्धि 45257 मी.ट. की हुई थी जबकि पूर्ववर्ती वर्ष की इसी तिमाही की तुलना में घरेलू मांग में वृद्धि 51748 मी.ट. की हुई थी । वर्ष 2009-10 की तिमाही में क्षमता में वृद्धि 57786 मी.ट. की हुई थी जबकि पूर्ववर्ती वर्ष की इसी तिमाही की तुलना में घरेलू मांग में वृद्धि 57433 मी.ट. की हुई थी । अतः घरेलू उत्पादकों की क्षमता में वृद्धि घरेलू मांग में वृद्धि के अनुरूप हुई है । समस्त भारतीय उत्पादकों के क्षमता उपयोग में वर्ष 2008-09 की तिमाही में 15.98% और 2009-10 की तिमाही में 7.83% की गिरावट आई है ।

131. पूर्ववर्ती वर्ष की समान तिमाहियों की तुलना में वर्ष 2008-09 की तिमाही तथा 2009-10 की तिमाही में चानिन्दा 13 घरेलू उत्पादकों के क्षमता उपयोग में क्रमशः 7.83% और 1.95% की गिरावट आई है ।

132. उपर्युक्त के मद्देनजर यह नोट किया जाता है कि क्षमता उपयोग में गिरावट आई है । यह भी देखा गया है कि क्षमता में वृद्धि को समायोजित किए जाने के बाद भी समस्त उत्पादकों के क्षमता उपयोग में संचयी रूप से गिरावट आएगी । तथापि, भारतीय उत्पादकों द्वारा क्षमता विस्तार का निर्णय भारतीय मांग में होने वाली वृद्धि हो ध्यान में रखते हुए नैसर्गिक कारोबारी निर्णय होते हैं । अतः क्षमता उपयोग में गिरावट संवर्धित आयातों के कारण आई है ।

133. लाभ तथा हानि : निम्नलिखित तालिका में तिमाही लाभ एवं हानि दी गई है । वर्ष 2009-10 की तिमाही में लाभ में 2009-10 की तिमाही में 98% की गिरावट आई है । लाभ में वर्ष

2008-09 की तिः 3 के बाद गिरावट की प्रवृत्ति प्रदर्शित हो रही है। जुलाई, 2009 में 1391 लाख रुपए का घाटा हुआ है। इसका तात्पर्य यह है कि वर्ष 2008-09 की तिः 3 के बाद लाभ में लगातार गिरावट हो रही है और यह जुलाई, 2009 में ऋणात्मक हो गया है। वर्ष 2009-10 की तिः 1 में लाभ पिछले वर्षों की तिः 1 की तुलना में न्यूनतम है।

तालिका 14

घरेलू उद्योग की लाभ एवं हानि (लाख रुपए में)				
तिमाही	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
ति 1	2,145	788	6,462	135
ति 2	2,068	2,358	9,096	-
ति 3	2,173	1,530	1,706	-
ति 4	2,345	(1,641)	1,442	-

134. उपर्युक्त के मद्देनजर यह नोट किया जाता है कि लाभ में गिरावट आई है।
135. रोजगार : कंपनियां और इकाइयां बहु उत्पाद कंपनियां एवं इकाइयां हैं और इस प्रकार रोजगार पर प्रभाव नहीं पड़ा है जैसा कि निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट हो जाता है।

तालिका 15

कर्मचारियों की कुल संख्या				
तिमाही	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
ति 1	3,734	3,795	3,672	3,726
ति 2	3,734	3,743	3,695	-
ति 3	3,734	3,751	3,702	-
ति 4	3,734	3,711	3,706	-

तालिका 15क

कर्मचारियों की कुल संख्या	
जुलाई 2009	3780
जुलाई 2008	3688

136. उत्पादकता: उत्पादकता वर्ष 2008-09 की तिः 4 में स्थिर थी और 2009-10 में उसमें वृद्धि हुई।

तालिका 16

उत्पादकता (उत्पादन/कर्मचारी) प्रति तिमाही मी.टन				
तिमाही	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
ति 1	77	88	98	101
ति 2	78	95	103	-
ति 3	85	94	95	-

ति 4	88	99	99	
------	----	----	----	--

तालिका 16क

उत्पादकता (उत्पादन/कर्मचारी) प्रति तिमाही मी.टन	
जुलाई 2009	34
जुलाई 2008	34.2

137. उद्गम या निर्यात के देश में निर्यात क्षमता जो इस समय मौजूद है या निकट भविष्य में जिसके बनने की संभावना है और इस बात की संभावना है कि उक्त क्षमता का उपयोग भारत को निर्यात के लिए किया जाएगा: भारत में निर्यातों के लिए उपलब्ध क्षमता का आकलन करने के लिए उत्तरी अमरीका, यूरोप तथा चीन की क्षमता का अध्ययन किया गया है। अप्रैल, 2008 के बाद क्षमता और प्रचालन अनुपात निम्नानुसार है :

तालिका 17
उत्तरी अमरीका

माह	08-09			09-10		
	स्थापित क्षमता (डीएमटी,000)	बेरी क्षमता (डीएमटी,000)	मौके पर कीमत (अम.डॉ./डीएमटी)	स्थापित क्षमता (डीएमटी)	बेरी क्षमता (डीएमटी)	मौके पर कीमत (अम.डॉ./डीएमटी)
अप्रैल	1178	177	540-550	1180	319	400-450
मई	1242	112	570-600	1202	336	325-350
जून	1200	108	685-695	1153	265	125-200
जुलाई	1238	74	780-800	-	-	50-75
अगस्त	1253	125	825-840			
सितंबर	1179	448	825-840			
अक्टूबर	1236	173	900-1050			
नवंबर	1211	363	900-1050			
दिसंबर	1227	613	825-950			
जनवरी	1231	382	800-825			
फरवरी	1117	268	730-775			
मार्च	1229	455	680-725			

[स्रोत: हेरीमन कैमसल्ट लि. तथा क्लोर अल्कली मासिक रिपोर्ट सीसीएओएन द्वारा प्रकाशित]

तालिका 18यूरोपस्थापित क्षमता तथा बेशी क्षमता (यूरोप)

माह	08-09		09-10			
	स्थापित क्षमता (डीएमटी,000)	बेशी क्षमता (डीएमटी,000)	मौके पर कीमत (अम.डॉ./डीएमटी)	स्थापित क्षमता (डीएमटी)	बेशी क्षमता (डीएमटी)	मौके पर कीमत (अम.डॉ./डीएमटी)
अप्रैल	1082	162	350-365	1100	396	435-470
मई	1126	169	350-365	1146	344	435-470
जून	1085	184	350-365	1106	310	435-470
जुलाई	1118	156	470-495	-	-	230-270
अगस्त	1113	156	470-495	-	-	
सितंबर	1081	216	470-495			
अक्टूबर	1114	201	500-525			
नवंबर	1076	355	500-525			
दिसंबर	1113	501	500-525			
जनवरी	1146	447	610-635			
फरवरी	1065	288	610-635			
मार्च	1139	365	610-635			

[स्रोत: हेरीमन कैमसल्ट लि. तथा क्लोर अल्कली मासिक रिपोर्ट सीरीज़ओएन द्वारा प्रकाशित]

तालिका 19चीनस्थापित क्षमता तथा बेशी क्षमता (चीन)

माह	08-09		09-10			
	स्थापित क्षमता (डीएमटी,000)	बेशी क्षमता (डीएमटी,000)	एशिया की मौके पर कीमत (अम.डॉ./डीएमटी)	स्थापित क्षमता (डीएमटी)	बेशी क्षमता (डीएमटी)	एशिया की मौके पर कीमत (अम.डॉ./डीएमटी)
अप्रैल	2032	510	420-430	2217	556	240-260
मई	2099	527	430-440	2291	575	250-260
जून	2032	510	500-520	2217	556	230-250
जुलाई	2099	527	580-610	2291	575	180-210
अगस्त	2099	527	580-610			
सितंबर	2032	510	580-610			
अक्टूबर	2099	527	490-500			
नवंबर	2032	510	450-480			
दिसंबर	2099	527	430-470			
जनवरी	2291	575	400-450			

फरवरी	2069	519	350-380			
मार्च	2291	575	270-325			

[स्रोत: हेरीमन कैमसल्ट लि. तथा क्लोर अल्कली मासिक रिपोर्ट सीसीएओएन द्वारा प्रकाशित]

138. अगस्त, 2008 की बाद की अवधि में उत्तरी अमरीका, यूरोप और चीन में बेशी क्षमता में वृद्धि हुई है। उत्तरी अमरीका में 2009-10 की प्रथम तिमाही में बेशी क्षमता 920 हजार डीएमटी रही है जबकि 2008-09 की इसी अवधि के दौरान यह 397 हजार डीएमटी रही थी। इसी प्रकार यूरोप में बेशी क्षमता 2009-10 की प्रथम तिमाही में 1050000 डीएमटी रही है जबकि 2008-09 की इसी अवधि में यह 515 हजार डीएमटी रही थी। उत्तरी अमरीका, यूरोप और चीन की कुल मिलाकर बेशी क्षमता 2009-10 की प्रथम तिमाही में 3657 हजार डीएमटी रही है जो भारत के वार्षिक बाजार आकार की 170% है। वर्ष 2008-09 की इसी अवधि की तुलना में वर्ष 2009-10 की प्रथम तिमाही के दौरान उत्तरी अमरीका, यूरोप और चीन में बेशी क्षमता में वृद्धि 1198 हजार मी.ट. की हुई थी जो उसी तिमाही के दौरान भारत के कुल बाजार आकार की दुगने से अधिक है।

139. अतः उपलब्ध क्षमता से संबंधित सूचना से यह पता चलता है कि निर्यातक देशों में बेशी क्षमता उपलब्ध है। बिक्री कीमत, भारत में कास्टिक सोडा की बिक्री लागत और उस कीमत के बीच भारी अंतर है जिस कीमत पर कास्टिक सोडा निर्यातक देशों में निर्यात के लिए उपलब्ध है। अतः इसकी अत्यंत संभावना है कि उपलब्ध क्षमता का उपयोग किया जाएगा जैसा कि भारत को निर्यात के लिए इस समय किया जा रहा है।

140. इसके अलावा, भारत में मासिक बेशी क्षमता और कास्टिक सोडा के मासिक आयात के विश्लेषण से आयात एवं उत्तरी अमरीका, यूरोप तथा चीन में बेशी क्षमता के बीच संबंध का पता चलता है। इस संबंध से बेशी क्षमता और संवर्धित आयात के बीच कुछ महीनों के अंतराल का भी पता, चलता है जो कि यारगमन अवधि के कारण आया है। विश्लेषण से यह भी पता चलता है कि आयात की मात्रा में वृद्धि बिक्री लागत और उस कीमत के बीच अंतर में वृद्धि के अनुरूप हुई है जिस कीमत पर कास्टिक सोडा निर्यात के लिए उपलब्ध है।

141. बिक्री लागत : तालिका 20 और 21 में क्रमशः निवल बिक्री प्राप्ति/डीएमटी तथा कास्टिक सोडा की बिक्री लागत की तिमाही सूचना निहित है। रेखांचित्र 3 निवल बिक्री प्राप्ति और बिक्री लागत से संबंधित मासिक सूचनाएँ बारे में उपलब्ध सूचना के आधार पर तैयार किया गया है। रेखांचित्र 4 में इसीयू लागत तथा इसीयू प्राप्ति को दर्शाया गया है। (इलेक्ट्रो कैमिकल इकाई) (इसीयू = एक मी.ट. कास्टिक सोडा की कारखाना कीमत + 0.88 मी.ट. क्लोरीन)।

तालिका 20

कास्टिक सोडा की तिमाही निवल बिक्री प्राप्ति/ डीएमटी				
तिमाही	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
ति 1	18,981	15,892	17,800	19,679
ति 2	18,639	15,977	20,285	
ति 3	19,105	16,132	21,117	
ति 4	19,847	14,946	21,644	

तालिका 20क

कास्टिक सोडा की तिमाही निवल बिक्री प्राप्ति/ डीएमटी

जुलाई 2009	16082
जुलाई 2008	19706

तालिका 21

0% लाभ पर बिक्री की लागत (रु./डीएमटी)

तिमाही	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
ति 1	18,007	15,542	15,215	19,627
ति 2	17,683	15,023	16,894	
ति 3	18,125	15,473	20,398	
ति 4	18,829	15,587	21,076	

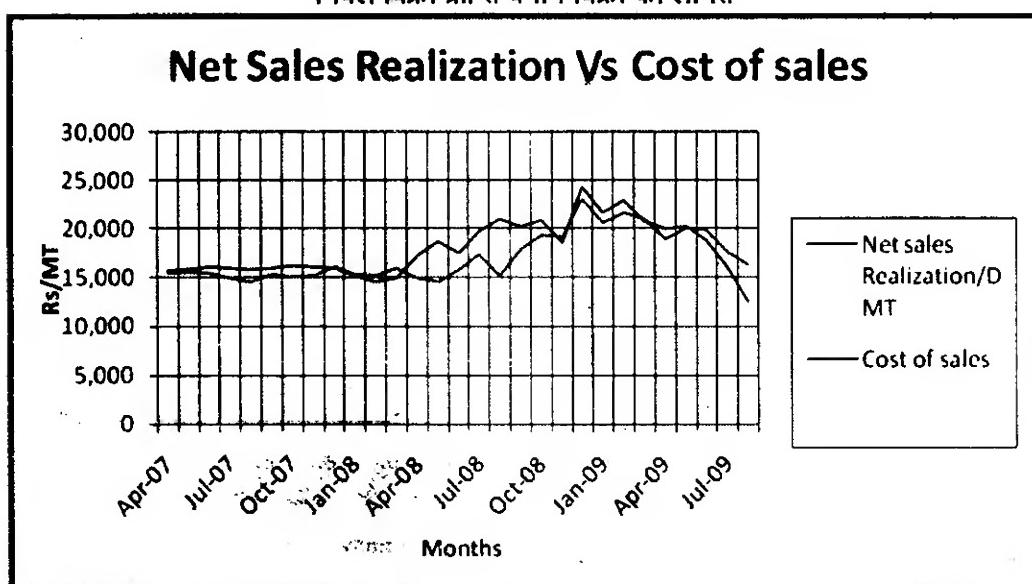
तालिका 21क

0% लाभ पर बिक्री की लागत (रु. /डीएमटी)

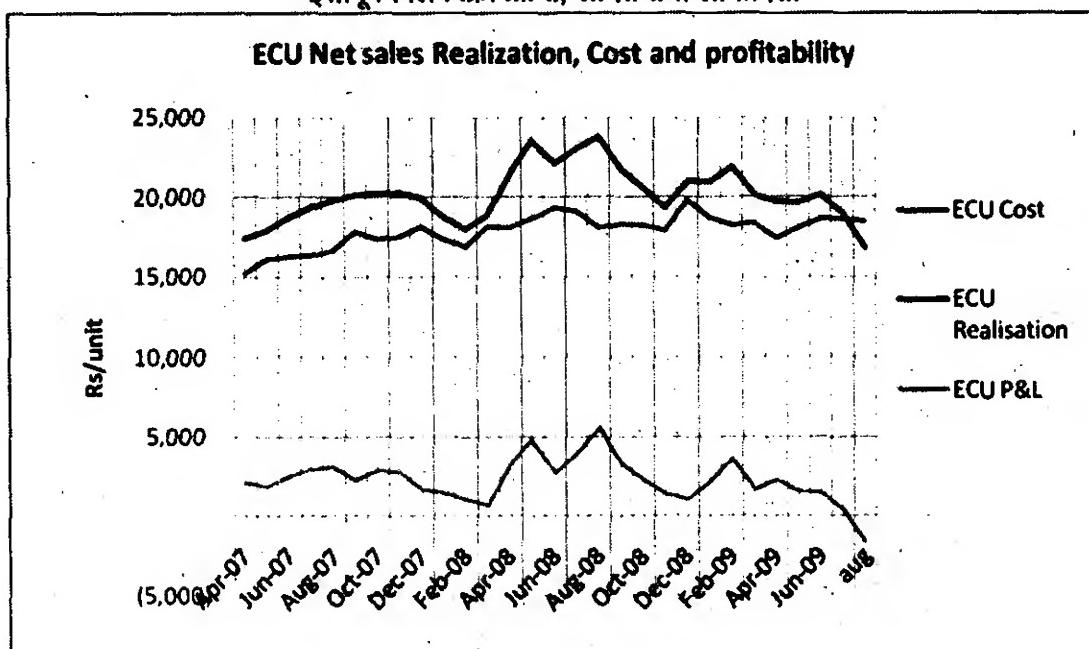
जुलाई 2009	17650
जुलाई 2008	17374

रेखाचित्र 3

निवल बिक्री प्राप्ति बनाम बिक्री की लागत

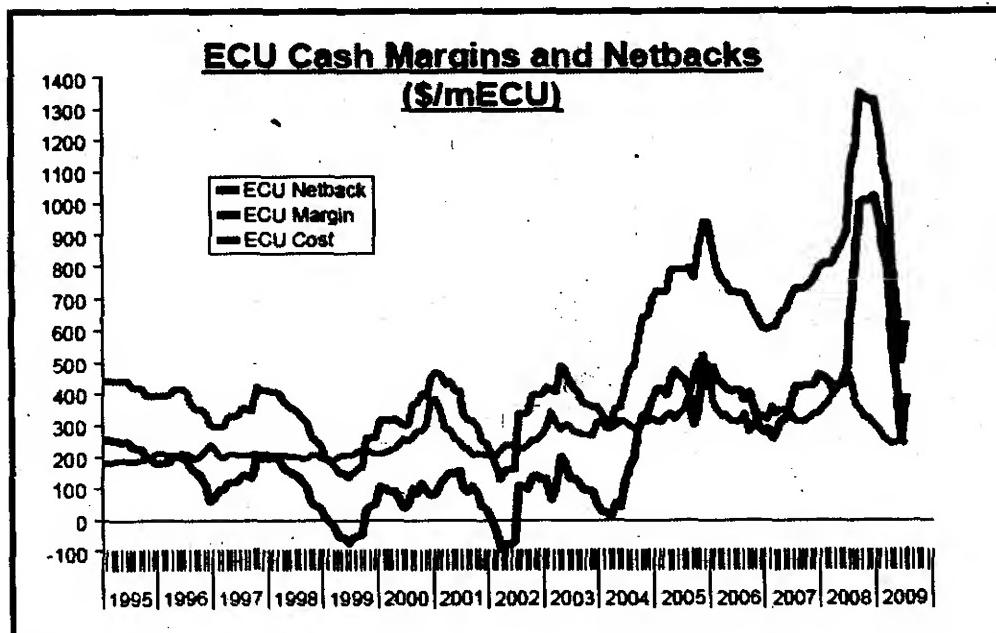


रेखांचित्र 4
ईसीयू निवल बिक्री प्राप्ति, लागत तथा लाभप्रदता



142. अन्य देशों मे उद्योग की ई सी यू प्राप्ति की प्रवृत्ति की तुलना करने के लिए उत्तरी अमरीका की ईसीयू प्राप्ति का अध्ययन किया गया है जो निम्नानुसार है :-

रेखांचित्र 5



143. उपर्युक्त तालिकाओं और रेखाचित्र के विश्लेषण से यह पता चलता है कि जनवरी, 2009 के बाद कास्टिक सोडा तथा ई सी यू दोनों के संबंध में निवल बिक्री प्राप्ति (एनएसआर) और बिक्री लागत के बीच अंतर कम होता रहा है और जून, 2009 के दौरान यह अंतर भारत में नकारात्मक हो गया है। कास्टिक सोडा की एन एस आर जनवरी, 2009 के बाद, जब अंतर में कमी आना शुरू हुआ था, को छोड़कर जांचाधीन समूची अवधि के दौरान बिक्री लागत काफी अधिक रही है। यही प्रवृत्ति ई सी यू प्राप्ति के मामले में भी देखी गई है जो ऋणात्मक अंतर पर पहुंच गई है। क्लोर अल्कली का कारोबार तब दृष्टिगोचर होता है जब ईसीयू प्राप्ति कम से कम बिक्री लागत के समान हो। जुलाई, 2009 में ईसीयू प्राप्ति में 3999 रु. की गिरावट आई है और ईसीयू लाभप्रदता में 3531 रु. की गिरावट आई।

144. भारत की ईसीयू प्राप्ति के विपरीत ईसीयू मार्जिन (अर्थात् कास्टिक सोडा तथा क्लोरीन दोनों के संबंध में निवल बिक्री प्राप्ति (एनएसआर) तथा बिक्री लागत के बीच अंतर) वस्तुतः उत्तरी अमरीका में सकारात्मक रहा है। ई सी यू मार्जिन कास्टिक सोडा की कीमत में तीव्र गिरावट आने के बाद भी अधिक रहा है। इसका तात्पर्य यह है कि कास्टिक सोडा की कीमत में लगभग दसवें हिस्से की गिरावट आने के बाद भी उत्तरी अमेरिका और यूरोप में कास्टिक सोडा उद्योग व्यवहार्य और लाभकारी बना रहा। ऐसा क्लोरीन की बिक्री (रेखाचित्र 9) की अधिक वसूली के कारण संभव हुआ है। अतः यह देखा गया है कि कीमतों में इतनी अधिक गिरावट आने के कारण भारतीय कास्टिक सोडा उद्योग अव्यवहार्य बन गया है परंतु उत्तरी अमेरिका और यूरोप में यह उद्योग व्यवहार्य बना रहा।

145. घरेलू कीमतों की प्रवृत्ति : निम्नलिखित तालिका और रेखाचित्र से आयातों, अंतर्राष्ट्रीय कीमतों और घरेलू कीमतों पर उसके प्रभाव के बीच संबंध का पता चलता है।

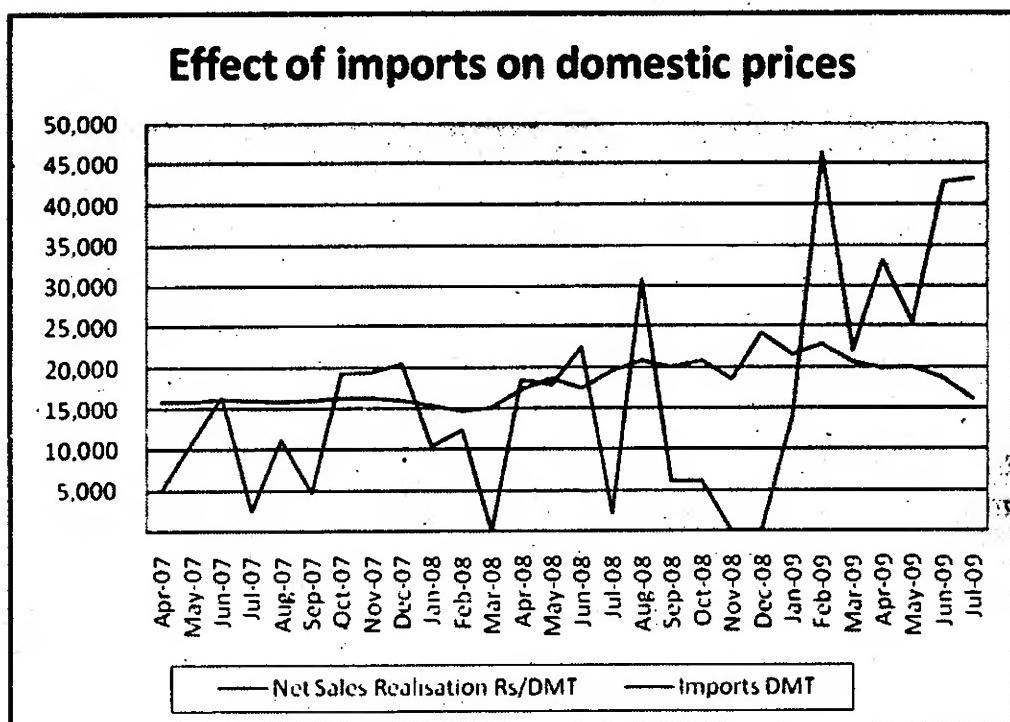
तालिका 22

अवधि	औसत निवल बिक्री प्राप्ति (रु./डीएमटी)	आयात कीमत(सीआईएफ) (रु./डीएमटी)	निर्यात के लिए अंतर्राष्ट्रीय कीमत (अम.डॉ./डीएमटी में)		
			क	ख	ग
			(रु./डीएमटी)	(रु./डीएमटी)	उत्तरी अमरीका
2005-06	14969	14142	-	-	-
2006-07	16097	15397	-	-	-
2007-08	16704	14593	-	-	-
अप्रैल'08	17285	14449	550-560	420-440	365-387
मई'08	18694	19079	580-600	465-485	420-450
जून'08	17491	13656	-	-	-
जुलाई'08	19706	21108	830-850	620-650	500-550
अगस्त'08	20966	13691	830-850	700-740	580-635
सितंबर'08	20183	15016	830-850	710-750	490-580

अक्टूबर, 08	20879	16479	830-850	710-750	450-470
नवंबर, 08	18586	-	830-850	620-650	400-470
दिसंबर, 08	24283	-	830-850	600-640	400-470
जनवरी, 09	21602	13544	830-850	600-640	360-450
फरवरी, 09	22884	11681	820-850	600-640	310-390
मार्च, 09	20667	14297	775-810	540-560	200-310
अप्रैल, 09	19922	15180	225-325	200-250	200-250
मई, 09	20193	13932	130-160	170-200	200-240
जून, 09	18791	14421	90-110	90-120	170-200
जुलाई, 09	16082	12375	35-75	50-60	130-150

रेखाचित्र 6

घरेलू कीमतों पर आयातों का प्रभाव

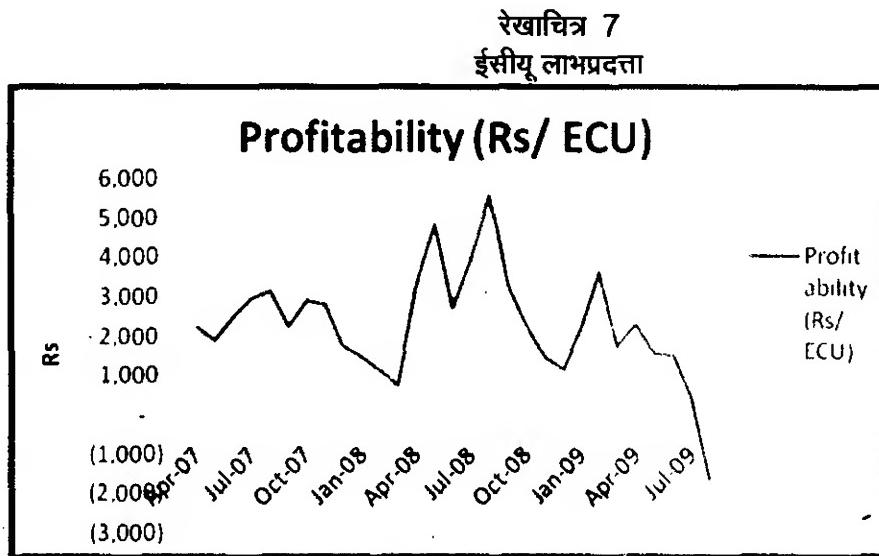


146. उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट तौर पर भारत में बिक्री कीमत और उस कीमत के बीच कीमत अंतर की मौजूदगी का पता चलता है जिस कीमत पर कास्टिक सोडा अंतर्राष्ट्रीय बाजार में उपलब्ध है। इसके परिणामस्वरूप भारत में कास्टिक सोडा की पहुंच लागत में कमी आई है। इनके अलावा, भारत में कास्टिक सोडा का बाजार निरंतर बढ़ता रहा है जिससे मांग में वृद्धि हुई है। मांग में वृद्धि का निवल बिक्री प्राप्ति पर सकारात्मक प्रभाव रहा होता। किंतु रेखाचित्र से यह पता चलता है कि जनवरी, 2009 जब आयातों में पर्याप्त वृद्धि हुई थी, से कास्टिक सोडा की घरेलू कीमतों में गिरावट आई है। जुलाई, 2008 की तुलना में जुलाई, 2009 में घरेलू कीमत में गिरावट 3624 रु. की

आई है। जुलाई, 2009 में घरेलू कीमत उस कीमत स्तर पर पहुँचने के लिए वर्ष 2007-08 की कीमत से अधिक हो गयी जो 2006-07 में मौजूद थी।

147. उपर्युक्त के मद्देनजर यह नोट किया जाता है कि आयातों के कारण घरेलू बाजार में कीमतों का ह्रास हुआ है।

148. ईसीयू की लाभप्रदता: निम्नलिखित रेखाचित्र से रूपए/ईसीयू के संबंध में लाभप्रदता का पता चलता है।



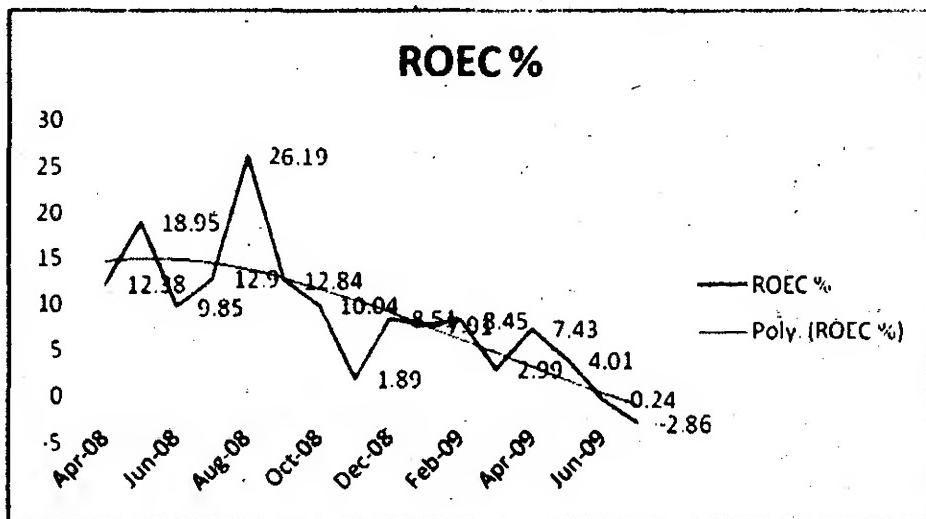
149. यह नोट किया जाता है कि रासायनिक प्रक्रिया, जिसकी वजह से अगले नियम अनुपात में कुल मिलाकर कास्टिक सोडा और क्लोरीन का उत्पादन होता है, की वजह से कास्टिक सोडा और क्लोरीन का एक साथ उत्पादन होता है। अतः लाभप्रदता का विश्लेषण ई सी यू आधार पर किया गया है जिसमें कास्टिक सोडा और क्लोरीन दोनों के कीमत उतार-चढ़ाव को ध्यान में रखा जाता है। घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में फरवरी, 2009 के बाद गिरावट की प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है और यह अगस्त, 2009 में नकारात्मक हो गई है। फरवरी, 2009, जब आयातों में वृद्धि देखी गई थी, के बाद लाभप्रदता में सतत और तेजी से गिरावट आई है। जुलाई, 2009 में ईसीयू लाभप्रदता में 3531 रु. की गिरावट आई जिससे सतत गिरावट का पता चलता है।

150. उपर्युक्त के मद्देनजर यह नोट किया जाता है कि आयातों में वृद्धि के बाद ईसीयू प्राप्ति में तीव्र गिरावट देखी गई है।

151. लगाई गई पूंजी पर आय: 2006-07 में लगाई गई पूंजी पर आय (आरओईसी) 5.34%, 2007-08 में 9.37, तथा 2008-09 में 10.96% थी। 2009-10 की पहली तिमाही में आरओसीई घटकर 3.77% हो गई। मासिक आरओसीई का माहवार विश्लेषण नीचे दर्शाए गए रेखाचित्र में दिया गया है जो कि घटती हुई प्रवृत्ति को दर्शाता है। जुलाई, 2009 में लगाई गई

पूंजी पर आय में 15.76% की गिरावट आई । जून, 2009 में आरओईसी नकारात्मक हो गई और यह नकारात्मक प्रवृत्ति अगस्त में भी जारी रही है । जनवरी, 2009 के बाद आरओईसी की प्रवृत्ति के विश्लेषण से भी तेजी से गिरावट का पता चलता है ।

रेखाचित्र 8



152. अतः यह नोट किया जाता है कि आयातों में वृद्धि के बाद आरओईसी में गिरावट की प्रवृत्ति देखी गई है । आयातों में वृद्धि के बाद आरओईसी भी नकारात्मक हो गई है ।

153. निर्धारित लागत एवं परिवर्ती लागत का विश्लेषण : घरेलू उद्योग के लागत संबंधी आंकड़ों से यह पता चलता है कि निर्धारित लागत कुल लागत का लगभग पांचवां हिस्सा रही है और परिवर्ती लागत (केवल कच्ची सामग्री और उपयोगिता) लगभग चौथा भाग रही है । घरेलू उद्योग इसी यू की निवल बिक्री प्राप्ति में कमी के बाद भी जून, 2009 के महीने तक परिवर्ती लागत वसूल करने में समर्थ रहा था और इस प्रकार संवर्धित आयात से निपटने का नैसर्गिक निदान यह था कि कीमत में कमी की जाए और बिक्री एवं उत्पादन में बढ़ोत्तरी की जाए ताकि निर्धारित प्रति इकाई लागत में कमी की जा सके । तथापि, घटी हुई कीमत पर हुए संवर्धित आयातों के कारण आगामी महीनों (अगस्त, 2009 तक) में इसी यू प्राप्ति में इतनी गिरावट आई कि परिवर्ती लागत की वसूली काफी कठिन हो गई । इन परिस्थियों में जब निर्धारित लागत घरेलू उद्योग की इसीयू प्राप्ति से काफी कम रही है, जिससे निर्धारित लागत एवं उचित लाभ की वसूली कठिन हो गई है तो घटती हुई अंतर्राष्ट्रीय कीमतों का मुकाबला करने के लिए बिक्री एवं उत्पादन में कमी किया जाना कोई विवेकपूर्ण विकल्प नहीं रहा है । इसके अलावा, इसी यू प्राप्ति में आगे और किसी गिरावट अथवा कीमत में सतत हास की वहज से घरेलू उद्योग के पास बिक्री तथा उत्पादन में कमी करने या घाटा कम करने के लिए कुछेक सुविधाओं की तालाबंदी करने के अलावा कोई विकल्प नहीं रह सकता है ।

154. दूसरे शब्दों में कीमत में कमी के विकल्प का उपयोग केवल उद्योग के पास उपलब्ध नकद आरक्षित निधि के अनुसार किसी सीमित अवधि तक ही किया जा सकता है । अतः उद्योग को हुई क्षति का प्रथम लक्षण लाभप्रदता के रूप में देखा जा सकता है जिसके बाद बिक्री, उत्पादन और

अन्य कारक

रोजगार का स्थान आता है। कम कीमतों पर संवर्धित आयातों का प्रतिकूल प्रभाव आकार के कारण प्रतिस्पर्धी लाभों की वजह से बढ़ी इकाइयों की तुलनामें छोटी इकाइयों पर अधिक दृष्टिगोचर होता है। इसके अलावा, ई सी यू प्राप्ति तथा बिक्री लागत के बीच अंतर एक ऐसा मानदंड है जिससे ही यह निर्यात किया जा सकता है कि क्या उद्योग भौजूदा ईसीई प्राप्ति पर व्यवहार्य है। यदि ई सी यू प्राप्ति बिक्री लागत से कम होती है तो कास्टिक सोडा और क्लोरीन का उत्पादन सतत आधार पर नहीं किया जा सकता।

155. समग्र स्थिति का मूल्यांकन: उपर्युक्त अलग-अलग मापदंडों के विश्लेषण से यह पता चलता है कि सर्वाधिक महत्वपूर्ण संकेतक अर्थात् ई सी यू प्राप्ति और शून्य % लाभ पर बिक्री लागत के बीच अंतर के कारण फरवरी, 2009 के बाद इसमें कमी आते हुए यह नकारात्मक हो गया है। अतः क्लोर अल्कली उद्योग अव्यवहार्य बन गया है। इसके अलावा, उपलब्ध बेशी क्षमता तथा निर्यातक देशों में निर्यात हेतु कास्टिक सोडा की कीमत में तीव्र गिरावट से यह पता चलता है कि भारत को निर्यात हेतु बेशी क्षमता का उपयोग किया जा रहा है और निकट भविष्य में इसका उपयोग किए जाने की भी भारी संभावना है। यह भी नोट किया जाता है कि निर्यातक देशों के पास सतत आधार पर इतनी अधिक कीमत पर क्षमता बनाए रखने की हैसियत है, कि वे अपने घरेलू बाजार⁹ में क्लोरीन की उच्च प्राप्ति के कारण अत्यंत कम कीमत रखने की स्थिति में हैं। इस तथ्य से भी इस बात को बल मिलता है कि आयातों में वृद्धि दर भी अधिक रही है।

156. मांग में वृद्धि और मांग की पूर्ति हेतु क्षमता के सृजन के बाद भी पूर्ववर्ती वर्ष की समान तिमाहियों की तुलना में जनवरी, 2009 के बाद भारत में कास्टिक सोडा के संचयी उत्पादन और बिक्री में गिरावट की प्रवृत्ति देखी गई है। 13 इकाइयों, जो तुलनात्मक रूप से बढ़ी हैं, का उत्पादन और बिक्री जनवरी, 2009 के बाद मुख्यतः स्थिर रही है। इसका तात्पर्य यह है कि छोटी इकाइयों का उत्पादन और बिक्री पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। वर्ष 2008-09 की चौथी तिमाही और वर्ष 2009-10 की प्रथम तिमाही में घरेलू उद्योग का क्षमता उपयोग न्यूनतम स्तर पर पहुंच गया है जिससे स्पष्टतः घरेलू उद्योग को हुई क्षति का पता चलता है।

⁹ पूर्ववर्ती पृष्ठों पर रेखाचित्र 5 और पैरा 145 देखें।

घरेलू कीमतों में तीव्र गिरावट¹⁰ देखी गई है। लाभप्रदता और आरओईसी¹¹ नकारात्मक हो गई है। इन सभी मानदंडों से क्षति की मात्रा का पता चलता है।

157. उपर्युक्त के आधार पर प्रारंभिक निर्धारण यह है कि आयातों में संवर्धित बढ़ोत्तरी, आयातों के कारण भारतीय उद्योग के बाजार हिस्से को गंवाने, बिक्री लागत से काफी कम कीमत पर कास्टिक सोडा का निर्यात करने के लिए निर्यातक देशों में उपलब्ध क्षमता की वजह से घरेलू उत्पादक ई सी यू प्राप्ति को ई सी यू बिक्री लागत से कम कीमत पर हासिल करने के लिए बाध्य हुए हैं। इसके अलावा, घटती हुई बिक्री, घटता हुआ क्षमता उपयोग, लाभ में गिरावट की प्रवृत्ति, लाभप्रदता और आरओईसी में गिरावट ऐसे अन्य कारक हैं जिनसे गंभीर क्षति के स्पष्ट और आसन्नवर्ती खतरे का पता चलता है।

158. निर्यात : वर्ष 2006-07 में भारत का वार्षिक निर्यात 17183 डीएमटी का हुआ था जो कुल घरेलू उत्पादन का 0.86% है। वर्ष 2007-08 और 2008-09 में निर्यात 19311 डीएमटी तथा 11573 डीएमटी का हुआ था जो घरेलू उत्पादन का क्रमशः 0.89% और 0.53% है। वर्ष 2009-10 की ति.1 में निर्यात 1785 डीएमटी का हुआ है जो कुल घरेलू उत्पादन का 0.3% है। इस प्रकार यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग का निर्यात इतना अधिक रहा है जिसका घरेलू उद्योग के निष्पादन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता।

तालिका 23

वर्ष	निर्यात मात्रा (डीएमटी)	कुल उत्पादन का निर्यात %
2006-07	17183	0.86
2007-08	19311	0.89
2008-09	11573	0.53

159. घरेलू मांग को पूरा करने के लिए कास्टिक सोडा की मांग और भारतीय उत्पादकों की क्षमता: कास्टिक सोडा की मांग में बृद्धि हो रही है। वर्ष 2009-10 की प्रथम तिमाही में 7.64 लाख डीएमटी प्रतिमाही क्षमता की तुलना में यह 5.53 लाख डीएमटी थी। वर्ष 2008-09 में कुल मांग 29.23 लाख डीएमटी की भारतीय क्षमता की तुलना में 19.47 लाख डीएमटी रही थी। इसका तात्पर्य यह है कि मांग को पूरा करने के लिए घरेलू उद्योग के पास पर्याप्त क्षमता है।

10 पूर्ववर्ती पृष्ठ पर रेखाचित्र 6 देखें।

11 रेखाचित्र 7 और रेखाचित्र 8 देखें।

तालिका 24

घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा (डीएमटी)(कुल घरेलू बिक्री + आयात)				
तिमाही	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
ति 1	4,83,895	4,69,885	4,96,067	5,53,500
ति 2	4,59,042	4,60,110	4,80,598	
ति 3	4,95,026	4,92,893	4,42,573	
ति 4	4,67,473	4,75,913	5,27,661	

160. भारत में क्लोरीन की मांग एवं उसकी कीमत: क्लोरीन अत्यंत सकारात्मक तत्वों में से एक है और इसकी दुलाई अत्यंत कठिन है अतः इसका अंतर्राष्ट्रीय व्यापार नगण्य है। इस प्रकार क्लोरीन,

की कीमतें अंतर्राष्ट्रीय कारकों के बजाए स्थानीय कारकों द्वारा अधिक प्रभावी होती हैं। क्लोरीन की अंतर्राष्ट्रीय और भारत में खपत की पद्धति निम्नानुसार है :-

क्लोरीन की क्षेत्रवार वैश्विक मांग

क्र.सं.	प्रयोक्ता उद्योग	क्लोरीन की कुल खपत में %हिस्सा
1.	विनायल	36
2.	क्लोरोमीथेन	5
3.	क्लोरोइथेन	1
4.	प्रोपेलीन ऑक्सीइड	7
5.	एलीलिक्स/एपीक्लोरोहाइड्रिन	4
6.	फॉसजीन/पॉलीकार्बोनेट	10
7.	अन्य (सीबी, सीपीआर, सीपीएफ)	5
8.	अकार्बनिक, अन्य	32

स्रोत : टेकनाम आर्बॉकैम (सी 12 व्युत्पत्तियों के विकास के बारे में एएमएआई अंतर्राष्ट्रीय समीनार, मई 2008, मुंबई)

पिछले तीन वर्षों के दौरान भारत में क्लोरीन की क्षेत्रवार पद्धति

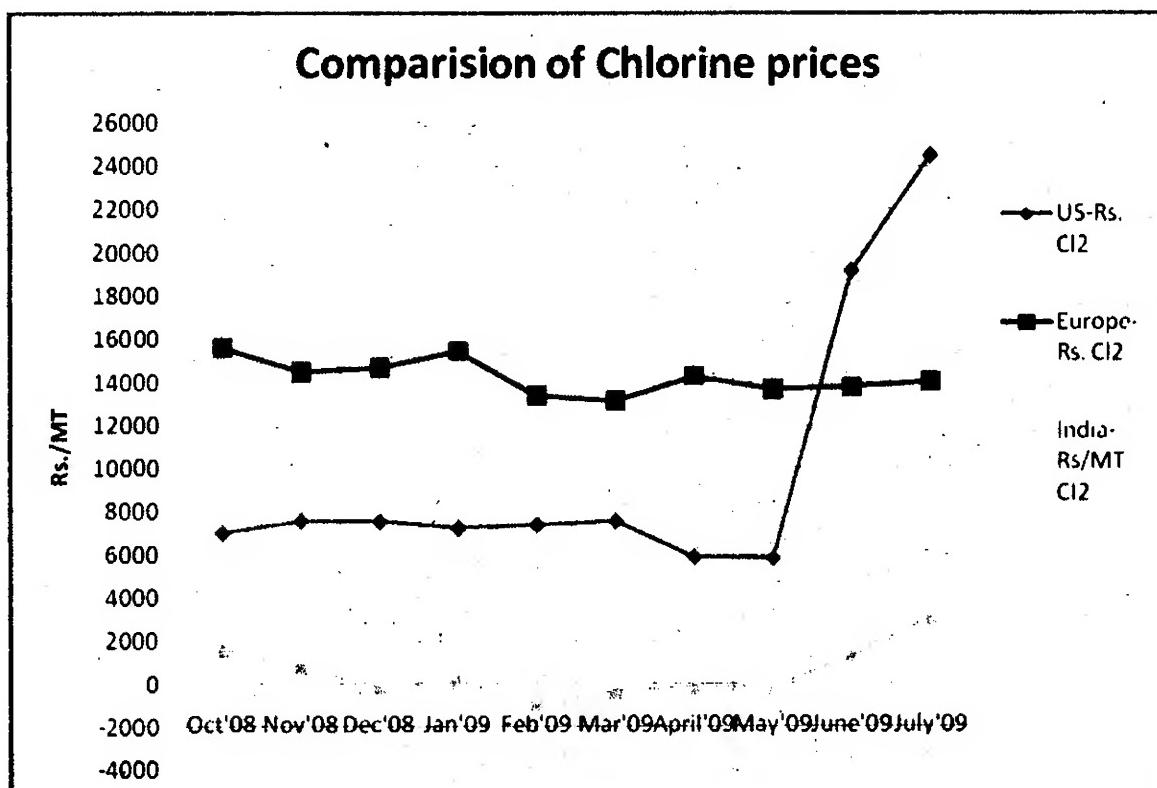
क्र.सं.	अंतिम प्रयोक्ता	प्रतिशत खपत		
		2005-06	2007-08	2008-09
1	विनायल (पीवीसी सहित)	17.11	17.59	16.58
2	कार्बनिक	26.56	20.27	27.36
3	अकार्बनिक	23.90	23.25	10.51
4	लुग्दी एवं कागज	10.29	8.27	8.32
5	सीपीडब्ल्यू	7.00	11.12	14.46
6	जलशोधन	2.75	2.02	2.39
7	कीटनाशक / जीवाणुनाशक/ खरपतवारनाशक	1.50	4.74	5.92
8	भेषज	0.53	0.53	1.17
9	रंजक एवं स्थानी	0.55	0.39	0.53
10	वस्त्र	0.44	0.58	1.01
11	अन्य	9.38	11.25	11.76

161. वैश्विक खपत की पद्धति की तुलना में भारत में क्लोरीन की अलग-अलग खपत की पद्धति से ज्ञाती कीमत भिन्न हो जाती है इस प्रकार उत्तरी अमरीका तथा यूरोप में क्लोरीन की कीमतें भारतीय

बाजार से भिन्न होती हैं। भारत, यूरोप और उत्तरी अमरीका में क्लोरीन की कीमत नीचे दर्शायी गई है

रेखाचित्र 9

क्लोरीन कीमतों की तुलना



162. उपर्युक्त रेखाचित्र से यह पता चलता है कि अलग-अलग देशों में क्लोरीन की कीमत में भारी अंतर है। क्लोरीन की अलग-अलग कीमत उसकी दुर्लाइ और इन देशों में क्लोरीन के प्रयोक्ता उद्योग की प्रगति में अंतर्निहित समस्याओं के कारण होती है। इसके परिणामस्वरूप एक ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है जहां कुछ देशों के उद्योग कास्टिक सोडा की कीमत कम कर सकते हैं और तब भी वे क्लोरीन की कीमत बढ़ाकर व्यवहार्य बने रहते हैं। भारत में क्लोरीन के उपयोक्ता उद्योग की अलंग प्रकार की प्रकृति के कारण क्लोरीन की कीमत में इतनी अधिक वृद्धि करना संभव नहीं होता है। एक स्तर से अधिक क्लोरीन की कीमत में वृद्धि करने से क्लोरीन की व्युत्पत्तियों की कीमत में वृद्धि होती है जिससे क्लोरीन की व्युत्पत्तियों का आयात जरूरी हो जाता है। इन परिस्थितियों में कम कीमतों पर कास्टिक सोडा के संवर्धित आयातों के कारण कास्टिक सोडा की कीमत में हास होता है जिससे इसीयू प्राप्ति लागत से कम होती है जिससे उद्योग अव्यवहार्य बन जाता है।

163. कारणात्मक संबंध : आयातों में वृद्धि के साथ-साथ बिक्री, उत्पादकता, क्षमता उपयोग, लाभ, लाभप्रदता, लगाई गई पूंजी पर आय, निवल बिक्री प्राप्ति में गिरावट आई है। सर्वर्धित आयात के कारण ही भारत में कीमतों में हास हुआ है जिससे लाभप्रदता, लाभ एवं लगाई गई पूंजी पर आय में

गिरावट आई है। केवल संवर्धित आयातों से ही बाजार हिस्से का नुकसान हुआ है। भारतीय बाजार में मांग में समूची वृद्धि का स्थान संवर्धित आयातों ने ले लिया है। संवर्धित आयातों ने घरेलू उत्पादकों की बिक्री का भी स्थान ले लिया है।

164. अतः संवर्धित आयात के कारण गंभीर क्षति होने का भारी खतरा उत्पन्न हो गया है।

165. आपात परिस्थितियां : निर्यातक देशों में अत्यंत कम कीमत पर कास्टिक सोडा का निर्यात करने की उपलब्ध क्षमताओं के साथ-साथ कास्टिक सोडा की अंतर्राष्ट्रीय कीमत में गिरावट, घरेलू कीमत में इतनी अधिक गिरावट आना, जिससे ई सी यू प्राप्ति लागत¹² से कम रही है। इससे भारत में क्लोर अल्कली उद्योग अव्याहार्य बन गया है। संवर्धित दर पर संवर्धित आयातों का बिक्री, बाजार हिस्से, उत्पादन एवं क्षमता उपयोग पर भी प्रभाव प्रदर्शित हुआ है। इसके अलावा, घरेलू उद्योग को घाटा भी हुआ है। ये कारक आपात परिस्थितियां हैं। इन परिस्थितियों में रक्षोपाय शुल्क लगाए जाने में किसी विलंब से घरेलू उद्योग को अपूरणीय क्षति होगी।

166. पुनर्गठन योजना : घरेलू उद्योग ने एक विस्तृत पुनर्गठन योजना प्रस्तुत की है। इसका सारांश निम्नानुसार है :-

- i. मर्करी सैलों का मैम्बरेन सैलों में परिवर्तन
- ii. मैम्बरेन सैलों में विद्युत खपत में कमी।
- iii. उत्पादन एवं उत्पादकता बढ़ाकर लवण की कीमतों में कमी।

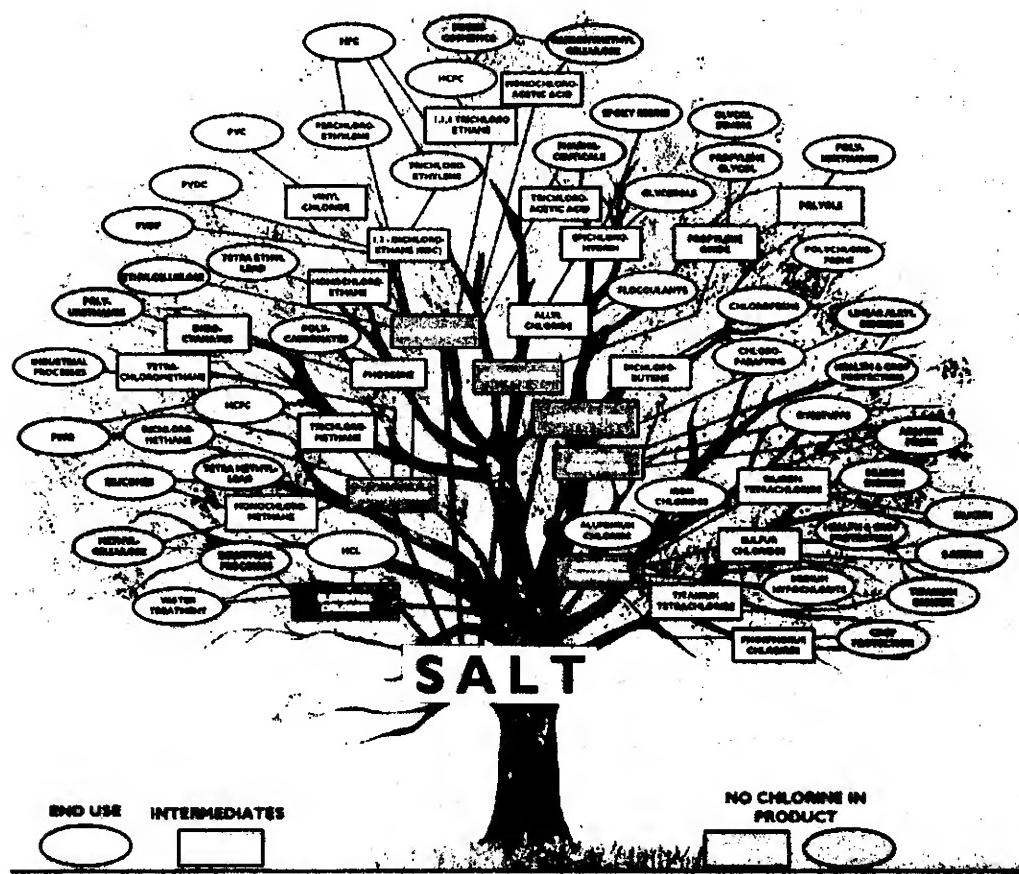
12 रेखाचित्र 4 देखें।

- iv. रेल द्वारा ढुलाई और बल्क पोतलदान के उपयोग से भाड़ा लागत में कमी।
 - v. ऋणों के पुनर्गठन द्वारा वित्त लागत में कमी।
 - vi. कार्यबलों के पुनर्गठन द्वारा उत्पादकता में सुधार।
 - vii. उत्पाद की प्राप्ति में सुधार के जरिए लागत में कमी- भारतीय उत्पादकों के लिए हाइड्रोजन और क्लोरीन सह-उत्पाद हैं, इसलिए उत्पादों की प्राप्ति में सुधार होने से कास्टिक सोडा की उत्पादन लागत में कमी आएगी। इस दिशा में किए गए प्रयासों में शामिल हैं-
- मध्यम एवं बड़े स्तर पर क्लोरीन आधारित नए या अधिक उत्पादों का उत्पादन करना, नए क्लोरीन आधारित उत्पादों का विकास करना; क्लोरीन की पैकिंग व ढुलाई लागत में कमी करना। इसके अलावा कास्टिक सोडा के अनेक उद्योग यथा-जीएसीएल/ग्रासिम/कनोरिया/डीएससीएल/डीसीडब्ल्यू आदि क्लोरो-व्युत्पत्तियों की नई क्षमताएं स्थापित कर रहे हैं/उनमें विस्तार कर रहे हैं ताकि आबद्ध मांग में वृद्धि की जा सके और बेहतर प्राप्ति हेतु व्यापारी बिक्री पर दबाव में कमी की जा सके।
- viii. उत्पादन क्षमताओं को अधिकतम बनाना - मांग में वृद्धि होने के साथ-साथ बेहतर उत्पादन, क्षमता उपयोग की गुंजाइश बन जाती है जिससे प्रति मी. ट. निर्धारित लागत में कम आएगी। इसके अलावा, योजनाबद्ध क्षमता विस्तार से लागत की बचत होगी।

167. पुनर्गठन योजना की जांच करने के बाद प्रारंभिक निर्धारण यह है कि पुनर्गठन योजना एक व्यवहार्य योजना है।

168. सार्वजनिक हितः क्लोर अल्कली उद्योग अनेक उद्योगों को निविष्टि उपलब्ध कराता है। कास्टिक सोडा का उपयोग रसायन, कागज, साबुन एवं धातु उद्योग में किया जाता है। इसका उपयोग प्रच्छालन एजेंट के रूप में भी किया जाता है। इन समस्त उद्योगों के स्वस्थ विकास के लिए यह आवश्यक है कि कास्टिक सोडा की सतत और भरोसेमंद आपूर्ति उपलब्ध रहे।

169. क्लोरीन का उपयोग प्लास्टिक तथा पॉलीमरों, साल्वेटों, कृषि रसायनों और भेषजों में संक्रमणरोधी और सोधनकर्ता और अन्य पदार्थों के विनिर्माण में मध्यवर्ती के रूप में किया जाता है। जहां यह अंतिम उत्पाद के रूप में उपलब्ध होता है। क्लोरीन का विश्वव्यापी उपयोग जलापूर्तियों के शोधन में किया जाता है क्योंकि यह जल जनित सूक्ष्म जैविक संक्रमण का अंतिम बचाव है। आजकल कॉलरा और अन्य जलजनित बीमारियों का भारत में दूषित जल और स्वच्छता की खराब स्थिति का घातक परिणाम होता है। क्लोरीन हजारों वाणिज्यिक उत्पादों के उत्पादन में एक महत्वपूर्ण भूमिका भी निभाता है। क्लोरीन के भरोसेमंद अद्भुत गुणधर्मों में दैनिक घरेलू उपयोग की वस्तुएं शामिल हैं अर्थात् घरेलू ब्लीच एवं तरणताल विसंक्रमण, बुलेट प्रतिरोधी अंतर्वस्त्र, कंप्यूटर व हार्डवेयर, सिलिकॉन चिप्स तथा आटोमोटिव पूर्जे। क्लोरीन के उपयोगों को निम्नानुसार क्लोरीन वृक्ष से देखा जा सकता है।



Chlorine has diverse applications. About one-third of finished products are chlorine-free, although made with the help of chlorine.

क्लोरीन के विविध उपयोग हैं। लगभग एक लिहाई तैयार उत्पाद क्लोरीन मुक्त होते हैं। यद्यपि इन्हें क्लोरीन की मदद से तैयार किया जाता है।

170. इन उद्योगों के क्लोरीन की स्थानीय उपलब्धता महत्वपूर्ण है। यह जरूरी है कि आर्थिक विकास हेतु भारत में एक व्यवहार्य तथा स्वस्थ क्लोर अल्कली उद्योग हो।

171. अधिकांश प्रयोक्ता उद्योगों में कास्टिक सोडा की लागत का योगदान अधिक नहीं होता है और इस प्रकार अंतिम उत्पादों की कीमतों पर रक्षोपाय शुल्क का प्रभाव भी अधिक नहीं हो सकता है। ऐल्युमिनियम उद्योग तथा कागज उद्योग पर रक्षोपाय शुल्क के प्रभाव के विश्लेषण से यह पता चलता है कि रक्षोपाय शुल्क का ऐल्युमिनियन धातु की बिक्री कीमत पर 0.03% (लगभग) और कागज एवं कागज उत्पादों की बिक्री कीमत पर 0.06% (लगभग) का प्रभाव होगा। यह अनुमान लगाया जा रहा है कि रक्षोपाय शुल्क का समूचा प्रभाव उपभोक्ताओं पर डाल दिया जाता है।

172. इसके अलावा, रक्षोपाय शुल्क का निर्धारण करते समय इस बात को सुनिश्चित करने पर ध्यान दिया जाता है कि टैरिफ स्तर उस सीमा तक बढ़करार रखा जाए जिस सीमा तक आयात व्यवहार्य हों और प्रतिस्पर्धा के समान अवसरों के अनुसार घरेलू उत्पादों से प्रतिस्पर्धा करें। स्वस्थ क्लोर अल्कली उद्योग की मौजूदगी विनिर्माताओं, अंतिम प्रयोक्ताओं और उपभोक्ताओं के हित में है। क्लोरीन अल्कली उद्योग क्लोरीन आधारित उद्योगों की जीवनरेखा है क्योंकि क्लोरीन की आपूर्ति केवल घरेलू उत्पादों द्वारा की जाती है। यदि क्लोर अल्कली उद्योग अव्यवहार्य बन जाएगी तो क्लोरीन की आपूर्ति न होने के कारण क्लोरीन आधारित उद्योगों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।

173. प्रारंभिक निर्धारण यह है कि प्रतिस्पर्धी दीर्घावधिक एवं अल्पावधिक लक्ष्यों के साथ-साथ अर्थव्यवस्था में विभिन्न प्रतिस्पर्धी हित हैं। तथापि, सार्वजनिक हित में ही ऐसा होता है कि भारत में क्लोर अल्कली उद्योग व्यवहार्य बना रहता है और वह भारत में विभिन्न उद्योगों के विकास हेतु प्रमुख निविष्टियां प्रदान करने में सक्रिय रहता है। मौजूदा स्थितियों में क्लोर अल्कली उद्योग अव्यवहार्य बन गया है। यदि इस स्तर पर कोई संरक्षण प्रदान नहीं किया जाएगा तो क्लोर अल्कली उद्योग, जो विभिन्न उद्योगों को निविष्टियां प्रदान कर रहा है, कम कीमतों पर हुए आयातों के सामने मृतप्राय हो जाएगा। इसका अनुषंगी उद्योगों, खासकर क्लोरीन पर निर्भर उद्योगों पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। अतः रक्षोपाय शुल्क लगाना सार्वजनिक हित में है।

विकासशील देश

174. विकासशील देशों से हुए आयातों के प्रतिशत की भी जांच की गई है। चीन, इंडोनेशिया, कतर, सउदीअरब तथा थाइलैंड, जिनका भारत में कुल आयातों का 13%, 31%, 9%, 9% तथा 16% हिस्सा बनता है, को छोड़कर अन्य विकासशील देशों का अलग-अलग हिस्सा भारत में कुल आयातों के 3% से कम बनता है। अतः चीन, इंडोनेशिया, कतर, सउदी अरब तथा थाइलैंड को छोड़कर अन्य विकासशील देशों के मूल के विचाराधीन उत्पाद के आयात पर सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1974 की धारा 8 ख के परंतुक के अनुसार रक्षोपाय शुल्क लागू नहीं हो सकता।

हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों की जांच कर सारांश

175. हितबद्ध पार्टियों द्वारा किए गए समस्त अनुरोधों की जांच की गई है और विश्लेषण करते समय उन पर संगत स्थानों पर कार्रवाई की गई है। उठाए गए मुद्दों और उनके विश्लेषण का सारांश निम्नानुसार है:-

घरेलू उद्योग:

176. हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोध : अधिकांश हितबद्ध पक्षकारों ने यह अनुरोध किया है कि याचिकाकर्ता घरेलू उद्योग नहीं हैं क्योंकि आवेदन घरेलू उत्पादन का 35% उत्पादन करने वाले उत्पादकों द्वारा प्रदत्त आंकड़ों के आधार पर दायर किया गया है। यूरोपीय संघ ने यह अनुरोध किया है कि जांच या तो एकमात्र आवेदक की स्थिति के आधार पर या कुल उद्योगों के आधार पर की जानी चाहिए।

177. अनुरोधों का विश्लेषण: हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोधों पर विचार किया गया है और "घरेलू उद्योग" के मुद्दे से संबंधित विस्तृत विश्लेषण पैराग्राफ 87-90 में दिया गया है। जहां तक यूरोपीय संघ के इस तर्क का संबंध है कि जांच या तो केवल आवेदक की स्थिति के आधार पर या फिर समग्र उद्योग के आधार पर की जानी चाहिए, यह नोट किया जाता है कि न तो रक्षोपाय करार और न ही घरेलू कानून में ऐसा कोई प्रावधान है जिसमें ऐसी किसी स्थिति का उल्लेख हो। वस्तुतः: "कुछेक इस्पात के उत्पादों के आयात पर रक्षोपाय" के मामले में यूरोपीय संघ ने अपनी रक्षोपाय जांच घरेलू उत्पादकों के एक समूह पर आधारित की है जो न तो अकेले यूनिट हैं और न ही समग्र उद्योग¹³ हैं। तथापि जिन 13 यूनिटों का हिस्सा घरेलू उत्पादन के 50% (65%) से अधिक बनता है उन यूनिटों और घरेलू उद्योग का प्रारंभिक जांच में विश्लेषण किया गया है ताकि उद्योग की समग्र स्थिति का मूल्यांकन किया जा सके।

जांच की अवधि

178. हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोध: कुछेक हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि जांच अवधि सीमित की जानी चाहिए और बाद में किसी घटनाक्रम का विश्लेषण नहीं किया जाना चाहिए।

179. अनुरोधों का विश्लेषण: इस मुद्दे पर पैरा 91-93 में विस्तार से चर्चा की गई है। हितबद्ध पक्षकारों के तर्क कानूनी आधार रहित हैं। यह अधिक उचित है कि हाल की उपलब्ध सूचना पर विचार किया जाए ताकि हाल की सूचना के आधार पर रक्षोपाय शुल्क लगाने के बारे में निर्णय लिया जा सके।

संवर्धित आयात

180. हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोध : कुछेक हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि आयात में क्रमिक वृद्धि हुई है। कोरिया सरकार ने यह तर्क दिया है कि आयातों में हाल में और पूर्ववर्ती महीनों के दौरान अचानक गिरावट आने के बाद दिसंबर, 2008 के बाद तेजी से वृद्धि हुई है। इसी प्रकार की वृद्धि को वर्ष 2003 में अर्जन्टीना-पीच रक्षोपाय के मामले में रक्षोपाय लागू करने के लिए पर्याप्त नहीं पाया गया था।

181. अनुरोधों का विश्लेषण: आयात के आंकड़ों के विश्लेषण और प्रवृत्ति के विश्लेषण से स्पष्टतः यह पता चलता है कि दिसंबर, 2008 तक आयातों में लगातार वृद्धि हुई है। उसके बाद आयातों में वृद्धि उस गति से हुई है जो विगत में कभी मौजूद नहीं रही है। पूर्ववर्ती वर्ष की समान तिमाहियों की तुलना में वर्ष 2008-09 की ति.4 और 2009-10 की ति1 में आयातों में क्रमशः 263% और 71% की वृद्धि हुई है। इस वृद्धि को क्रमिक वृद्धि नहीं माना जा सकता।

182. जहां तक पूर्ववर्ती महीनों में आयातों में हुई कुछ वृद्धि के बारे में कोरिया सरकार के तर्क का संबंध है, आयातों के मासिक विश्लेषण से यह नोट किया जाता है कि मासिक आयात में घट-बढ़ एक प्राकृतिक परिदृश्य है। जहां तक अर्जन्टीना-पीच मामले में संवर्धित आयातों की उद्धृत जांच का संबंध है, दोनों मामलों के बीच समानता का अध्ययन कास्टिक सोडा और डिब्बा बंद पीच के संवर्धित आयातों के रेखांचित्र की तुलना द्वारा किया गया है।

13 "27 मार्च, 2002 के आयोग के विनियम (ईसी) संख्या 580/2002(जिसके तहत इस्पात के कुछेक उत्पादों के आयातों पर अनंतिम रक्षोपाय लागू किए गए हैं)" से उद्धरण

"सामुदायिक प्रक्रियाएं"

(11) ये घरेलू एसोसिएशनें समान और/अथवा प्रत्यक्ष प्रतिस्पर्धी उत्पादों के कुल सामुदायिक उत्पादन के एक बड़े अनुपात का प्रतिनिधित्व करती हैं।

- यूरोफर का हिस्सा लौह तथा इस्पात के उत्पादों के सामुदायिक उत्पादन का लगभग 95% बनता है। संबद्ध उद्योग

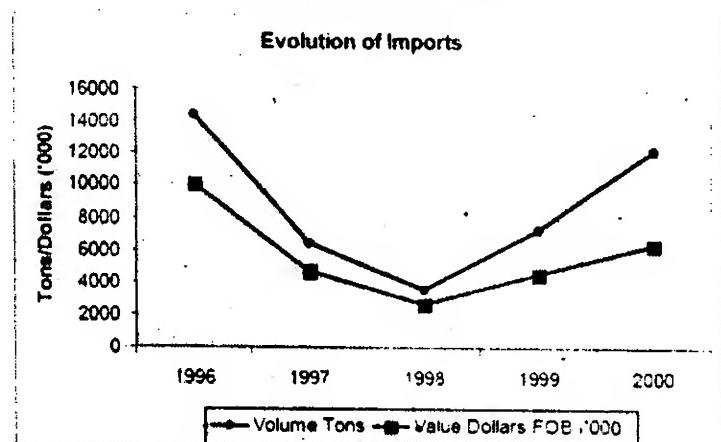
लगभग समस्त सदस्य राज्यों में स्थित हैं;

- ईरानी का हिस्सा 11 बड़े उत्पादकों सहित इस समुदाय में ट्यूब उत्पादकों के उत्पादन का लगभग 50% बनता है। संबद्ध उद्योग ग्रीस, इटली, लेंगमर्ग, नीदरलैंड, स्पेन, स्वीडन और यू.के. में स्थित हैं;

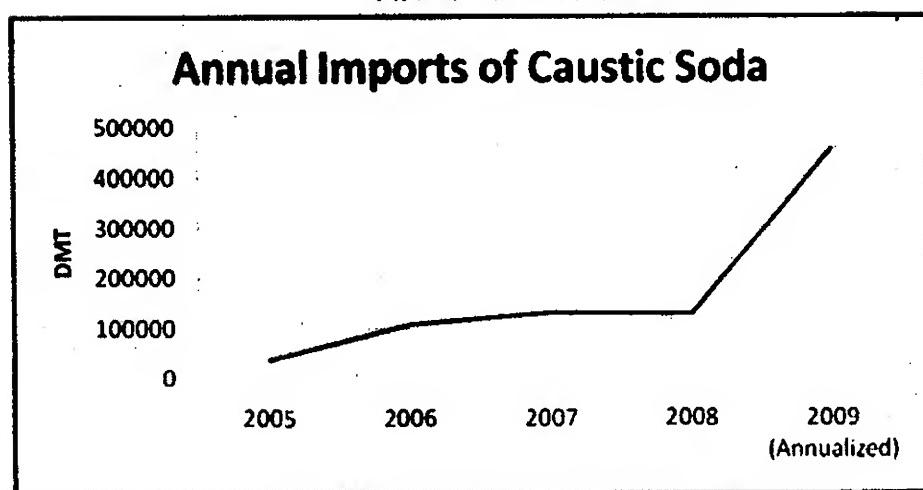
- एफएस का हिस्सा कार्बन इस्पात के फ्लेंजों के सामुदायिक उत्पादन का लगभग 50% बनता है। संबद्ध उद्योग जर्मनी, इटली, फ्रांस, स्पेन तथा यू.के. में स्थित हैं।

- डीसीयू का हिस्सा संगत सामुदायिक उत्पादन के 70% से अधिक बनता है। संबद्ध उद्योग आस्ट्रिया, फ्रांस, जर्मनी, इटली और यू.के. में स्थित हैं।

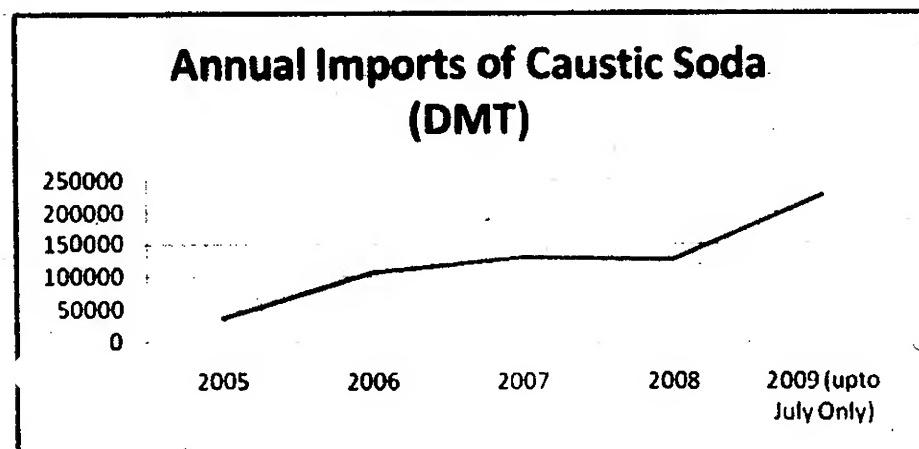
<Chart-3> Evolution of Imports



कास्टिक सोडा का वार्षिक आयात



कास्टिक सोडा का वार्षिक आयात (डीएमटी)



183. अर्जेन्टीना पीच मामले और वर्तमान मामले में आयातों से संबंधित रेखाचित्र की तुलना अलग-अलग है। अर्जेन्टीना पीच मामले में हाल की अवधि (वर्ष 2000) में आयात 4 वर्ष पूर्व (अर्थात् 1996) हुए आयातों से कम रहे थे। वर्तमान मामले में आयात में विगत में सतत वृद्धि हुई है और हाल की अवधि में इसमें तेजी से वृद्धि देखी गई है। वर्ष 2009 (जुलाई तक) में हुए आयात पिछले 5 वर्षों में से किसी वर्ष में हुए आयातों से अधिक रहे हैं। अतः आयात में वृद्धि हुई है।

184. हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोधः कुछेक हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि चूंकि उत्पादन एवं बिक्री में वृद्धि हुई है, इसलिए कोई क्षति नहीं हुई है।

185. अनुरोधों का विश्लेषणः गंभीर क्षति का निर्धारण एक या दो मापदंडों के विश्लेषण के आधार पर नहीं किया जा सकता। किसी मापदंड को निरर्थक नहीं माना जा सकता। विश्लेषण समस्त संबद्ध मापदंडों के समग्र मूल्यांकन के आधार पर करना चाहिए है। समस्त मापदंडों का विश्लेषण किया गया है और प्रारंभिक जांच परिणाम समस्त मापदंडों के समग्र मूल्यांकन के आधार पर निकाले गए हैं। समस्त घरेलू उत्पादकों के उत्पादन और बिक्री में गिरावट आई है।

186. हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोधः कुछेक हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि क्षमता उपयोग अन्य भारतीय उत्पादकों की तुलना में आवेदकों के लिए अधिक रहा है और यह समग्र घरेलू उद्योग से भी अधिक है।

187. अनुरोधों की जांचः आवेदक समग्र घरेलू उद्योग की तुलना में कम हैं इसलिए क्षमता उपयोग उनके लिए अलग-अलग होगा। तथापि, समग्र उद्योग और 13 यूनिटों का विश्लेषण किया गया है।

188. हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोधः कुछेक हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि क्षमता उपयोग, बाजार हिस्से और लाभप्रदता में सुधार प्रदर्शित हो रहा है।

189. अनुरोधों का विश्लेषणः क्षमता उपयोग, घरेलू उत्पादकों के बाजार हिस्से और लाभप्रदता के विश्लेषण से यह पता चलता है कि इन समस्त कारकों में नकारात्मक प्रवृत्ति प्रदर्शित हो रही है।

190. हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोधः हितबद्ध पक्षकारों में से एक पक्षकार ने यह तर्क दिया है कि जून, 05-जून,09 के बाद कर्मचारियों की संख्या में गिरावट आई है। उन्होंने यह भी तर्क दिया है कि आवेदक क्षति के बारे में गंभीर नहीं है। घरेलू उद्योग की मालसूचियों में वृद्धि मालसूची प्रबंधन की पर्याप्त योजना के अभाव के कारण हो सकती है।

191. अनुरोधों का विश्लेषणः इस संबंध में यह नोट किया जाता है कि एक मापदंड में कमी का रक्षोपाय शुल्क लगाने का आधार नहीं बनाया जा सकता और न ही उसे वर्तमान में अपेक्षित कार्रवाई करने के आधार के रूप में विगत में सरकारी संरक्षण प्राप्त करने की विफलता माना जा सकता है। घरेलू उद्योग ने अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा का सामना करने के लिए स्वयं को तैयार करने हेतु अपने प्रचालनों का पुनर्गठन करने के प्रयास किए हैं और उनके प्रति अपनी इच्छा प्रदर्शित की है।

192. हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोधः कुछेक हितबद्ध पक्षकारों ने यह अनुरोध किया है कि भारतीय उद्योग की बिक्री मात्रा आयात बिक्री से अधिक है और इसलिए कोई क्षति नहीं मुझे है।

193. अनुरोधों का विश्लेषण: यह देखा गया है कि "गंभीर क्षति" या "गंभीर क्षति के खतरे" के लिए यह आवश्यक नहीं है कि आयात बिक्री घरेलू उद्योग की बिक्री से अधिक होनी चाहिए। प्रारंभिक जांच परिणामों में "गंभीर क्षति" या "गंभीर क्षति के खतरे" के निर्धारण हेतु समस्त संगत मापदंडों का विस्तृत विश्लेषण किया गया है।

194. हितबद्ध पार्टियों के अनुरोध: एक अन्य हितबद्ध पक्षकार ने यह तर्क दिया है कि भारत में आयातों में वृद्धि इस तथ्य की वजह से हुई है कि भारत में कास्टिक सोडा के प्रयोक्ता कास्टिक सोडा, खासकर कास्टिक सोडा लाई की कम आपूर्ति का सामना कर रहे हैं। कास्टिक सोडा का उत्पादन पूर्णतः क्लोरीन के उत्पादन और उसकी बिक्री मात्रा पर निर्भर होता है। क्लोरीन का सर्वाधिक अंतिम उपयोग ईडीसी, वीसीएल तथा पीवीसी रेजिनों में किया जाता है। अधिकांश भारतीय क्लोर अल्कली विनिर्माता ईडीसी, वीसीएल तथा पीवीसी में समेकित नहीं हैं और इस प्रकार उनके समक्ष कास्टिक सोडा के उत्पादन में वृद्धि की समस्या रहती है क्योंकि वे ईडीसी, वीसीएल तथा पीवीसी का उत्पादन नहीं बढ़ा रहे हैं। भारत में अधिकांश क्लोर अल्कली विनिर्माता केवल मर्चेन्ट क्लोरीन का उत्पादन करते हैं जिसका भारत सहित विश्व भर में अत्यंत कम अंतिम बाजार है। मर्चेन्ट क्लोरीन का भंडारण अत्यंत कठिन, महंगा और खतरनाक होता है। परिणामतः कास्टिक सोडा का अधिक उत्पादन करने के लिए क्लोरीन का उत्पादन नहीं बढ़ाया जा सकता।

195. अनुरोधों का विश्लेषण: क्लोरीन के बाजार और उसकी कीमत पद्धति के मुद्दे का अध्ययन किया गया है। यह सच है कि भारत तथा अन्य देशों में क्लोरीन की खपत की पद्धति अलग-अलग है। खपत की पद्धति की वजह से अलग-अलग देशों में कीमत पद्धति भिन्न हो जाती है। इस मुद्दे पर पैरा 160-162 में विस्तार से चर्चा की गई है। जहां तक क्लोरीन को खपत करने के संबंध में बाजार की क्षमता का प्रश्न है, भारत में क्लोरीन का पूर्ण उपयोग करने और उसकी खपत करने की पर्याप्त क्षमता है। क्लोरीन की कीमत पद्धति जो मांग एवं आपूर्ति पर निर्भर होती है, से यह पता चलता है कि क्लोरीन की कीमत उस समय नकारात्मक थी, जब आपूर्ति मांग से अधिक हो गई थी। परंतु, दिसंबर, 2008 के बाद क्लोरीन की कीमत में उर्ध्वगमी प्रवृत्ति¹⁴ प्रदर्शित हो रही है जिससे यह पता चलता है कि मांग आपूर्ति से अधिक रही है। अतः यदि क्लोरीन का उत्पादन संवर्धित आयातों के अभाव में बढ़ी हुई मांग को पूरा करने के लिए कास्टिक सोडा के साथ किया गया होता तो इसकी समस्त खपत हो गई होती।

14 रेखाचित्र 9 देखें

196. हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोध : कुछेक हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि रक्षोपाय लागू करना सार्वजनिक हित में नहीं है।

197. अनुरोधों का विश्लेषण : हितबद्ध पक्षकारों के तर्क के समर्थन में कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया गया है। सार्वजनिक हित के मुद्दे पर पैरा 168-173 में विस्तार से चर्चा की गई है।

198. हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोध: विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों ने यह अनुरोध किया है कि कोई समायोजन योजना नहीं है।

199. अनुरोधों का विश्लेषण: यह देखा गया है कि आवेदकों ने पुनर्गठन योजना (अगोपनीय रूपांतरण सार्वजनिक फाइल में उपलब्ध है) प्रस्तुत की है। पुनर्गठन योजना पर पैरा 166-167 में चर्चा की गई है।

निष्कर्ष एवं सिफारिश

200. उपर्युक्त जांच परिणामों को ध्यान में रखते हुए प्रारंभिक निर्धारण यह है कि भारत में लाई रूप में कास्टिक सोडा के संवर्धित आयातों के कारण लाई रूप में कास्टिक सोडा के घरेलू उत्पादकों के लिए गंभीर क्षति होने का खतरा उत्पन्न हो गया है। इसके अलावा, आपात परिस्थितियां विद्यमान हैं, जिनमें प्रारंभिक जांच परिणामों को दर्ज करना आवश्यक हो गया है। यह सार्वजनिक हित में होगा कि भारत में लाई रूप में कास्टिक सोडा के आयातों पर 200 दिन की अवधि के लिए अनंतिम रक्षोपाय शुल्क लागू किया जाए। रक्षोपाय शुल्क की उस राशि, जो घरेलू उद्योग के लिए गंभीर क्षति के खतरे को रोकने के लिए पर्याप्त होगी और सकारात्मक समायोजन सुकर बनेगा, का आकलन करने के लिए लगाई गई पूँजी पर उचित आय पर बिक्री की भारित औसत लागत तथा आयात की औसत पहुंच लागत (मूल सीमाशुल्क, उपकर एवं पाटनरोधी शुल्क, यदि कोई हो, को ध्यान में रखते हुए) पर विचार किया गया है। इसके अलावा, संगणित रक्षोपाय शुल्क को अधोगामी दृष्टि से संतुलित किया गया है ताकि आयात अंतिम प्रयोक्ताओं और उपभोक्ताओं के हित में घरेलू बाजार में प्रतिस्पर्धा जारी रख सकें। तदनुसार घरेलू उद्योग के हित की रक्षा हेतु मूल्यानुसार 20% की दर से रक्षोपाय शुल्क को न्यूनतम जरूरत माना गया है। इसे सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की प्रथम अनुसूची के उपर्युक्त 28151200 के अंतर्गत आने वाले कास्टिक सोडा लाई के आयातों पर लागू किए जाने की सिफारिश की जाती है।

201. चूंकि चीन, इंडोनेशिया, कतर, सऊदी अरब तथा थाइलैंड को छोड़कर विकासशील देशों से हुए आयातों का हिस्सा अलग-अलग रूप में 3% से अधिक नहीं बनता है, इसलिए चीन, इंडोनेशिया, कतर, सऊदी अरब तथा थाइलैंड को छोड़कर विकासशील देशों के मूल के विचाराधीन उत्पाद पर सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 8 ख के परन्तुके अनुसार रक्षोपाय शुल्क लागू नहीं हो सकता।

[फा. सं. डी-22011/47/2009]

प्रबोध महाजन, महानिदेशक

आगे की प्रक्रिया :

- I. विभिन्न पक्षकारों द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना का जहां भी आवश्यक हो सत्यापन किया जा सकता है, जिसके लिए उन्हें अलग से सूचित किया जाएगा।
- II. अंतिम निर्धारण से पहले उचित समय पर एक सार्वजनिक सुनवाई रखी जाएगी; जिसकी तारीख के बारे में अलग से सूचित किया जाएगा। हितबद्ध पक्षकार सार्वजनिक सुनवाई के दौरान अथवा उसके पहले प्रारंभिक जांच परिणामों के संबंध में अपनी टिप्पणियां प्रस्तुत कर सकते हैं।

OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF SAFEGUARDS
NOTIFICATION

New Delhi, the 15th October, 2009

PRELIMINARY FINDINGS

Subject : Safeguard investigation concerning imports of Caustic Soda into India.

G.S.R. 754(E).—Having regard to the Custom Tariff Act, 1975 and the Custom Tariff (Identification and Assessment of Safeguard Duty) Rules, 1997 thereof:

PROCEDURE

1. An application was filed under Rule 5 of the Customs Tariff (Identification and Assessment of Safeguard Duty) Rules, 1997[hereinafter referred to as "Safeguard Rules"] by Alkali Manufacturers Association of India (AMAI) for imposition of Safeguard Duty on imports of Caustic Soda into India alleging that increased imports of Caustic Soda was causing and/or threatening to cause serious injury to the domestic producers of Caustic Soda in India. Having satisfied that the requirements of Rule 5 were met with, safeguard investigation against imports of Caustic Soda were initiated vide notice of initiation dated 20th August, 2009 and published in the Gazette of India, Extraordinary on the same day.
2. A copy of the notice was sent to the governments of major exporting countries through their embassies in New Delhi. A copy of initiation notice was also sent to all known interested parties listed below:
3. Domestic Producers

SN	NAME OF UNIT	FACTORY ADDRESS
1	Aditya Birla Chemicals (India) Ltd. (formerly Bihar Caustic & Chemicals Ltd.)	Ghanshyam Kunj, Garhwa Road, P.O. Rehla - 822 124 Distt. Palamau (Jharkhand) Ph.: 06584-262211 / 21 / 262488 Fax: 06584-262205 Email: shyam.gupta@adityabirla.com ajay.todi@adityabirla.com
2	Aditya Birla NUVO Ltd.	Indian Rayon Compound, Veraval - 362 266 (Gujarat) Ph.: 02876-245711 (EPABX)

		Fax: 02876-243220/243558 E-mail: irilveraval@adityabirla.com ajay.todi@adityabirla.com
3	Atul Ltd.	P. O. Atul - 396 020 Distt. Valsad (Guj.) Ph.: 02632-233261 - 65 Fax: 02632-233619 / 375 E-mail : vasudev_koppaka@atul.co.in ; pradip_pisharody@atul.co.in
4	Century Rayon (A Div.of Century Txls & Inds. Ltd.)	Murbad Road, P.B. No.22, Shahad – 421 103 Distt. Thane, Maharashtra Ph.: 0251-2733670 / 79 Fax: 0251-2730064 E-mail: cenray@cenrayon.com saluthra@cenrayon.com
5	Chemfab Alkalies Ltd.	Gnanananda Place, Kalapet Puducherry - 605 014 Ph.: 0413-2655111 Fax: 0413-2655125 E-mail: chemfabalkalis@drroaholdings.com
6	Chemplast Sanmar Ltd. (Caustic Chlor Divn.)	Factory – I: Plant-III, Mettur Dam - 636 402 Distt. Salem (Tamil Nadu) Ph.: 04298-230381 - 85 Fax: 04298-230394 E-mail: sp1@sanmargroup.com Factory – II: Melavanjore Village Karaikal, Union Territory of Puducherry – 611 002 Ph:04365-256475 / 76

		Fax: 04365-256473 E-mail: vr13@sanmargroup.com
7	DCM Shriram Consolidated Ltd. (Kota & Jhagadia)	1. Shriram Vinyl & Chemical Inds. Shriram Nagar, Kota - 324 004 (Rajasthan) Ph.: 0744-2480991-98, 0744-2480011-17 / 2480907-08 Fax: 0744-2481131 E-mail: tejkrishen@dscl.com 2. Shriram Alkali & Chemicals 749, G.I.D.C. Industrial Estate Jhagadia – 393 110 Distt. Bharuch (Gujarat) Ph.: 02645-226021-23 / 224026-27 Fax: 02645-226037 E-mail: scmittal@dscl.com
8	DCW Ltd.	P.O.Sahupuram – 628 229, Thoothukudi Distt. Tamil Nadu Ph:04639-280231 / 439 / 014 / 281288 Fax: 04639-280611 E-mail: ttn_dcwshpm@sancharnet.in ;
9	Durgapur Chemicals Ltd.	Hanemann Sarani Distt. Burdwan Durgapur-713 215 West Bengal Ph.: 0343-2556668 / 2555762 Fax: 0343-2556667 Email: dcldgp@sancharnet.in akupadhyay@durgachem.com
10	GHCL Ltd.	Village Sutrapada Taluka Veraval Distt. Junagadh - 362 265 (Guj) Ph.: 02876-283401 - 3 / 283409-10 /

		283551 - 3 / 280206 Fax: 02876-283483 / 283480 E-Mail : tej@ghcl.co.in
11	Grasim Industries Ltd. Chemical Division	P.O. Birlagram Nagda - 456 331 (M.P.) Ph.: 07366-246760-66 Fax: 07366-246176 / 246097 E-mail: ajay.todi@adityabirla.com ; Kailash.jhanwar@adityabirla.com
12	Gujarat Alkalies & Chemicals Ltd.	(1) Baroda Unit: P.O. Petrochemicals - 391 346 Distt. Vadodara (Gujarat) Ph.: 0265-2232681 / 701 / 183 / 2230085 / 3061200 / 6540463 Fax: 0265-2232130 / 2230032 E-mail: general@gacl.co.in marketing@gacl.co.in (2) Dahej Unit: P.O. Dahej, Taluka Vagra Dist. Bharuch -392 130 (Gujarat) Ph: 02641-256315 - 17 Fax: 02641-256220 Email: mktdahej@gacl.co.in
13	Gujarat Flouro Chemicals Ltd.	12/A, G.I.D.C. Dahej Industrial Estate, Vagra Taluka, Bharuch Distt. - 392 130 (Gujarat) Ph.: 02641-308062 Fax: 02641-308012 E-mail: jsbedi@gfl.co.in
14	Hindustan Heavy Chemicals	19, Barrackpore Trunk Road, Khardah P.O. Balaram

	(Prop. Kesoram Industries Ltd.)	Dharma Sopan Kolkata-700116 Ph.: 033-25532879/5183, 25839545 / 77 Fax: 033-25533860, 25839218 E-mail: hhcl_fac@vsnl.net hhc_ho@vsnl.net factory@hhckil.com
15	Hindustan Organic Chemicals Ltd.	Harchandrai House, 81, Maharshi Karve Road, Mumbai – 400 002 Ph.: 022-22014269 - 71 Fax: 022-22059533 E-mail: ravimadangeri@hoclindia.com
16	Hindustan Paper Corporation Ltd.	Factory – I: Nagaon Paper Mill, P.O. Kagaznagar Dist.Morigaon – 782 413(Assam) Ph.: 03678-245900 – 10 Fax: 03678-245911 – 13 E-mail: himanish@hindpaper.in adhikari@hindpaper.in Factory – II: Cachar Paper Mill, P.O. Panchgram - 788 802 Distt. Hailakandi (Assam) Ph.: 03845-273080 / 273086 / 273214-6 Fax: 03845-273130 E-mail: kacharya@hindpaper.in
17	HJI – Division of Orient Paper Mills (Prop: Orient Paper & Inds. Ltd.)	P.O. Amlai Paper Mills Distt. Annupur - 484 117 (M.P.)

		Ph.: 07652-286563 / 178 / 179 Fax: 07652-286290 E-mail: hjigmmco@sancharnet.in hukum_113@rediffmail.com
18	Jayshree Chemicals Ltd.	P.O. Jayshree Distt. Ganjam - 761 025 (Orissa) Ph.: 06811-254319 / 20 / 36 / 254170 Fax: 06811-254384 E-mail: jclgm@jayshreechemicals.com
19	Kanoria Chemicals & Industries Ltd.	Chlor-Alkali (Works): - Renukoot P.O. Renukoot - 231 217 Distt. Sonebhadra (U.P.) Ph.: 05446-252044 / 55 / 75 Fax: 05446-252088 Email: renukoot@kanoriachem.com
20	Lords Chloro Alkali Ltd.	Sp-460, Matsya Industrial Area Alwar - 301 030 (Rajasthan) Ph.: 0144-3202817 / 19 / 2881056 Fax: 0144-2881360 E-mail: jagtar.singh@lordschloro.com
21	Meghmani Finechem Ltd.	CH 1 & 2, GIDC Dahej, P.O. Dahej – 392 130 Distt. Bharuch, Gujarat Ph.: 02642-238025 Fax: 02642-238026 E-mail: mhania@meghmani.com dhruv.joshi@meghmani.com
22	Nirma Ltd.	Chemical Complex Village: Kalatalav Taluka & Distt. Bhavnagar – 364 313 Ph.: 0278-2885301 - 4

		Fax: 0278-2885309 - 19 Email: nirma_kalatalav@nirma.co.in
23	NRC Ltd.	Mohone - 421 102 Near Kalyan Distt. Thane (Maharashtra) Ph.: 0251-2270312-5 (9251 from Mumbai) Fax: 0251-2270316 (9251 from Mumbai) E-mail: nrcworks@vsnl.com ; nrcworks@bom7.vsnl.net.in ; dbsjindani@hotmail.com
24	Punjab Alkalies & Chemicals Ltd.	Nangal-Una Road Nayanangal – 140 126 Distt. Ropar (Punjab) Ph.: 01887-220750-53 Fax: 01887-220742 E-mail: pacnlg1@sify.com
25	Reliance Industries Ltd.	P.O.Dahej, Taluka Vagra Distt. Bharuch – 392 130 Gujarat Ph:02641-282301 Fax: 02641-283081 E-mail: chappidi.babu@ril.com jyotindra.m.shah@ril.com
26	Saurashtra Chemicals Ltd.	P.O. Birlasagar Porbandar - 360 576 (Guj) Ph.: 0286-2242479-81 (3 lines) 0286-2205242 (Sales Deptt.) Fax: 0286-2245431 E-mail: gmmrkt@saukemindia.com sales@saukemindia.com
27	SIEL Chemical Complex (A Unit of Mawana Sugars Ltd. –	Charatrampur, Village Khadauli, Sardargarh, P.O. Rajpura, Dist. Patiala, Punjab–140 401

	Formerly known as Siel Ltd.)	Ph.: 01762-228540 - 48 Fax : 01762-225403 E-mail: info@sielchemical.com
28	Solaris Chemtech Industries Ltd. (Chlor-Alkali & Phosphates Business)	Unit: Karwar, Binaga Karwar – 581307 Distt. Uttar Kannada Karnataka Ph: 08382-230535 / 230638 Fax: 08382-230468 E-Mail: umesh.shenoy@solarischemtech.com
29	Sree Rayalaseema Alkalies & Allied Chemicals Ltd.	Gondiparla Kurnool - 518 004 (A.P.) Ph.: 08518-280006-8, 280053 Fax: 08518-280098 E-mail: sraacmktg@tgvmail.net sraacengg@yahoo.co.in sraaclub@rediffmail.com
30	Tamilnadu Petroproducts Ltd.— (Heavy Chemicals Div.) (Formerly : SPIC Ltd.)	Manali Express Highway, Manali Chennai - 600 068, Tamil Nadu Ph.: 044-25941870 Fax: 044-25941332 Email: tplisd@sancharnet.in ravindran@tnpetro.com
31	Tata Chemicals Ltd.	Mithapur - 361 345 Distt. Okhamandal, Jamnagar (Gujarat) Ph.: 02892-665991-98 Fax: 02892-223361
32	The Andhra Sugars Ltd. (Kovvur/Saggonda)	Saggonda – 534 318 Dist. West Godavari (A.P) Ph.: 08811-253418 / 28 Fax: 08813-231218

		E-mail: info.kvr@theandhrasugars.com
33	The Travancore Cochin Chemicals Ltd.	<p>Post Bag No.4004 Udyogamandal P.O. Kochi - 683 501 (Kerala)</p> <p>Ph.: 0484-2545011-20 / 2545583</p> <p>Fax: 0484-2546564, 2545583</p> <p>E-mail: salestcc@vsnl.net</p> <p>marketing@tcckerala.com</p> <p>mail@tcckerala.com</p>
34	Tuticorin Alkali Chemicals & Fertilisers Ltd.	<p>Harbour Construction Road SPIC Nagar Tuticorin - 628 005</p> <p>Ph.: 0461-2355612 - 13 / 2355615 - 16</p> <p>Fax: 0461-2355376</p> <p>Email: ttn_ank@sancharnet.in</p> <p>headworks@tafcert.com</p>
35	United Phosphorus Ltd.	<p>750 G.I.D.C., P.B. No. 9 Jhagadia - 393 110 Distt. Bharuch (Gujarat)</p> <p>Ph.: 02645-226011 - 15</p> <p>Fax: 02645-226017</p>

4. Importers

- a. Abhay Chemicals Limited ,150 Gayatri Chambers, RC Dutt Road, Alkapuri, Baroda – 390005, Gujarat
- b. Albright Wilson Chemicals Limited, Pheonix House, “A” Wing, 4th Floor, 462x,x Senapati Bapat Marg, Lower Parel (W), Mumbai- 400013
- c. Arvind Mills Limited, Naroda Road, Ahmedabad 380025, Gujarat.
- d. Birla Cellulose Limited , Birla Dham, Kharach, Kosamba, R.S-374120,District Bharuch, Gujarat
- e. Central Pulp Mills Limited Nehru House, 4 Bahadur Shah Zafar Marg New Delhi – 110002

- f. Deepak Nitrite Limited, 4/12, GIDC Chemicals Complex Nandesari 391340 Gujarat
- g. Godrej Sopas Limited Eastern Express Highway Vikhroli (East),Mumbai 400049
- h. Gujarat Narmada Fertilizer & Chemicals Limited .P O Narmadanagar 392015 Bharuch, Gujarat
- i. Gujarat State Fertilizer & Chemicals Limited ,P O Fertilizer nager ,Vadodara Gujarat
- j. Indian Farmer Fertilizer Coop. Limited ,P O Kasturinagar 382423
- k. Indian Oil Corporation Limited,Gujarat Refinery, P O Jawaharnagar Vadodara – Gujarat
- l. Jaysynth Dyechem Limited ,301, Sumer Kendra,Pandurang Budhkar Marg Worli, Mumbai 400 018
- m. Link Pharma Ltd,B-2,6th Floor, Ramakrishna Chambers ,Productivity Road , Alkapuri ,Baroda 390005, Gujarat
- n. Meghmani Organics Limited,188/184, Phase II,GIDC Industrial Estate, Vata , Ahmedabad 382445 ,Gujurat
- o. Narmada Chemature Petrochemicals Limited,2nd Floor, Skyline Building ,Near Bharuch Railway Station ,Bharuch Gujarat
- p. Nirma Limited ,Nirma Bhavan, Ashram Road Ahnedabad Gujarat
- q. Pab Chemicals (P) Limited,Surya Kiran Complex, 1st Floor, Old Padra Road, Post Bag No. 4059,Baroda –390005,Gujarat
- r. Rama News Prints & Papers Limited,Village : Barbodhan – 395005Taluka Olpad Distt: Surat, Gujarat
- s. Rubamin Limited ,Synergy House ,Subhanpura Baroda – 390023,Gujarat
- t. Sabero Organics Limited,A-302, Phoenix House 3rd Floor ,462, Sanapati Bagpat Marg ,Worli (East) Mumbai 400013
- u. Torrent Gujarat Biotech Limited th Floor, Sri Ram Chamber Opp. Circuit House,RC Dutt Road ,Baroda – 390005 Gujarat
- v. Transpek Silox Industries Limited ,Kalali Atlandra Road,Vadodara – 390012, Gujarat
- w. National Aluminium Company Limited,NALCO Bahvan ,E 37 Site B, Surajpur Industrial Area ,Gautam Buddha Nagar (UP)
- x. Cyanides & Chemicals Company ,Prop. Hindustan Development Cor. Ltd Corporation Limited,65 Free Press House,Nariman Point ,Mumbai 400021

- y. Demosha Chemicals Limited ,105 A Mittal Towers ,210 Nariman Point Mumbai 400021
- z. Hitsu Industries Limited,Plot No. 306/2, Phase II,GIDC, Vapi Gujarat
- aa. Shri Ramchandra Straw Products Limited, Village Vijaypur ,Tahsil Bellari Moradabad (UP)
- bb. Libra Foams ,Div of S B Distributors Limited,E 37 Site B, Surajpur Industrial Area ,Gautam Buddha Nagar (UP)
- cc. Adani Wilmar Limited ,Navinal Tiand ,Mundra – KATCCHH,Gujarat
- dd. Adani Exports Limited,Adani House, Shrimali Society ,Mavarangpura Ahemedabad ,Gujarat
- ee. Daurala Organics Limited ,Humalaya House ,Kasturba Gandhi Road New Delhi
- ff. Bilag Indusries Pvt Ltd ,Plot No 306/3, Phase II,GIDC VAPI, Gujarat
- gg. Shri Ramchandra Straw Products Limited ,Village Vijaypur Tahsil Bellari ,Moradabad (UP)
- hh. Libra Foams ,Div of S B Distributors Limited ,E 37 Site B, Surajpur Industrial Area ,Gautam Buddha Nagar (UP)
- ii. Daurala Organics Limited ,Humalaya House ,Kasturba Gandhi Road New Delhi .P/L Nayapalli,Bhubaneshwar – 751013,ORISSA
- jj. Harish Kr. & Company ,23- Anant Building 21,S Gandhi Marg, Mumbai 400002 C J Shah & Co,105 Bajaj Bhawan,Nariman Point ,Mumbai 21
- kk. Hindustan Lever Limited,Hindustan Lever House,165/166, Backbay Reclamation ,Mumbai 400 020.
- ll. Hindusstan Link & Resins Limited ,Bilakhia House, Muktanand Marg Chala – Vapi, Gujarat

Exporters

- mm. Asahimas Chemicals PT, 9th Floor, Summitmas I, Jl. Jend, Sudirman Kav. 61 – 62, Jakarta, 12190, Indonesia
- nn. PT Pabrik Kertas Tjiwi Kimia Tbk., Main Office Building A, Jl. Raya Surabaya – Mojokerto Km. 44, Mojokerto 61301, Jawa Timur, Indonesia
- oo. PT Sulfindo Adiusaha PT. Sulfindo Adi Usaha 14th Floor, Ratu Plaza, office Tower, Jl. Jend. Sudirman Kav. 9 Jakarta Jakarta 10270 Indonesia

pp. PT Indah Kiat Pulp & Paper Tbk .BII Plaza, Menara II, Lantai 7, Jl. M.H. Thamrin
No. 51, Jakarta 10350 Indonesia

qq. Formosa Plastics Corporation 201, Tung Hwa North Road Taipai Taiwan

rr. Dow Chemical Dow Hellas SA Lavrion Site Thorikon Lavrion TK 19500 Greese

ss. Solvey Fluor GmBH Brueningstrasse 50 Zip Code : D-65926 Frankfurt am Main
Germany

tt. Bayer AG Bayer MaterialScience AG Communications, Building K12 Kaiser-
Wilhelm-Allee 51368 Leverkusen Germany

uu. BASF AG ZOI - D 100 D-67056 Ludwigshafen Germany

vv. Enichem SpA Piazzale Mattei, 100144 Roma – Italy

ww. Qatar Vinyl Company Q.S.C. Post Box No. 24440 Doha, Qatar

xx. Hanwha Chemical Corporation 100-797, Hanwha Building,1, Jung – Ku, Seoul Korea
RP

yy. DC Chemicals Limited Oriental Chemical Building 50, Sogong – Dong Jung – Gu
Seoul Korea RP

zz. Shanghai Chlor AlkaliChemicals Wu-Road No. 4747, Shanghai City 200 122 China-
PR

aaa. Sinopec Qily Petrochemical Co Limited Qilu Office Building, High Tech &
Industrial Development Zone, Zibo, Shandong China PR

bbb. Wuhan Golden Fortune Technology & Trade Co., Ltd. International Enterprise
Center, No2# Guanshan Road, Wuhan, Hubei, China

ccc. Tianjin Kaiyi Chemical Factory No. E7-205 Binhai Finance Zone, No. 20,
Guangchang East Rd., Teda, Tianjin, China

ddd. Tianjin Xibeier International Co., Ltd 21c Yitingyuan, No 22, 6th Latitude
Road, Hedong District, Tianjin, China

5. Exporting Nations:

- i. European Union
- ii. Germany
- iii. Greece
- iv. Indonesia
- v. PR China
- vi. Qatar
- vii. Republic of Korea
- viii. Saudi Arabia

- ix. Taiwan
 - x. Thailand
 - xi. USA
6. Questionnaires were also sent, to all known domestic producers ,importers and exporters and they were asked to submit their response within 30 days.
7. Request to consider them as interested parties were received from the following parties and all the requests were accepted:
- i. M/s Tricon Energy Limited, USA
 - ii. M/s Basic Chemical Solutions Far East Pte Ltd, Singapore
 - iii. M/s Hanwha Corporation, Korea RP
 - iv. M/s Vinythai Public Co. Ltd., Thailand
 - v. M/s Vedanta Aluminium Limited
 - vi. Aluminium Assoication of India
8. Requests for extension of time to submit their replies were made by the following parties:
- i. M/s PT Asahimas Chemical, Indonesia
 - ii. Ministry of Trade of the Republic of Indonesia
 - iii. M/s Vinythai Public Co. Ltd., Thailand
 - iv. M/s Vedanta Aluminium Limited
 - v. Aluminium Assoication of India
 - vi. M/s Hindustan Unilever Limited
 - vii. M/s PT Sulfindo Adiusaha, Indonesia
9. After taking into account the time limits for completing the investigation within the prescribed period, requests for extension of time were allowed and the parties concerned were accordingly informed.
10. The information presented by domestic producers was verified by on-site visits to the plants of the domestic producers to the extent considered necessary. The cost data has been also verified and certified by cost accountant. The non confidential version of verification report is kept in the public file.
11. All the views expressed by the interested parties have been taken into account in making appropriate determination. The non confidential information received or acquired has been kept in the public file.

VIEWS OF DOMESTIC PRODUCERS OF CAUSTIC SODA IN INDIA

12. The domestic producers have made following submissions:
13. The petition has been filed by the Association of Indian producers, whereas data has been provided by those domestic companies whose collective output was in the region of 32-36% between April 2005 and June 2009. Since the share of these companies constitutes a major share in Indian production, as held by WTO, it should be considered that the petition has been filed by or on behalf of domestic industry and contains injury information for domestic industry.
14. The scope of the petition includes Caustic Soda in lye form only. Caustic Soda in solid form has been excluded in view of the fact that the volume of import has surged only in respect of lye form. Imports of caustic soda has shown sudden, unexpected

- and significant surge which is because of (i) firstly global melt-down leading to decline in demand in the global major market, (ii) thereafter, increase in Chlorine prices in US and Europe, leading to increased Chlorine production and resultant caustic production.
15. Imports of Caustic soda are causing serious injury to the domestic industry. Further, the Indian industry is threatened with serious injury, should the safeguard duty not be imposed immediately. Serious injury to the domestic industry is established considering sub-optimal capacity utilization, inability of the domestic industry to increase capacity utilization in spite of increase in demand, sub-optimal increase in sales, decline in market share, profitability, return on investment and cash flow of the domestic industry.
 16. Other Indian producers have in fact suffered injury in much higher proportion, as is evident from their capacity utilization levels.
 17. So significant has been decline in profitability of the domestic industry that the domestic industry started suffering significant financial losses from a situation of profits. Further, the decline in profitability is in spite of significant improvement in Chlorine realization. Had the realization of Chlorine been lower (as was the case till quite recently), the domestic industry would have suffered much higher level of financial losses.
 18. Employment and wages are not reflecting injury in view of prevailing labour laws in the Country and the fact that industry decided not to reduce production in spite of significant increase in imports.
 19. Serious injury to the domestic industry is being caused by the increased imports. The causal link is clearly established in decline in the market share of the Indian industry and increase in the market share of imports on one side and steep decline in prices of the domestic industry on the other side.
 20. Critical circumstances exist in the current case, as (i) the domestic industry is unable to hold on the prices which have declined to such an extent that the domestic industry is suffering significant financial losses; (ii) the trend of declining prices continues, (iii) the industry has limited storage capacity and therefore surge in import will lead to storage problems; (iv) being a commodity product, the industry was forced to reduce prices not only for the customers who were importing, but also for the customers who have not imported; (v) the extent of price decline is most unprecedented in this product. Never before in the past two decades, the industry saw decline in prices by more than Rs. 10,000 pmt in a matter of two quarters. In view of these critical circumstances, immediate safeguard duty is required to be imposed.
 21. Industry has drawn a viable/feasible adjustment plan in order to be competitive in due course.
 22. There is an urgent need of provisional safeguard duty to protect domestic industry from irreparable loss.

VIEWS OF EXPORTING NATIONS

Views of European Commission

23. Safeguard is to be regarded as an exceptional instrument and the standards required to impose measures should be very high. The factors listed in Art. 4.2(a) of the WTO Agreement on Safeguard does not point injury in this case.

24. The increased import has taken only 1% shares of the Domestic Industry since 2005-06 to 08-09. The first quarter cannot be taken for comparison purpose.
25. The level of sale has increased by 22% and Production by 25% since 2005-06 to 08-09.
26. The Capacity Utilization is more than 85%. The decrease is only because of 40% increase in production Capacity.
27. The profit / loss analysis in Notice of Initiation is not representative as it mixes yearly data with monthly data for 2008-09.
28. The profit loss graph included figures for July and August 2009 while no information was provided in complain and the N.O.I. was issued on 20.08.2009.
29. The productivity and employment were not analyzed.
30. The investigation should be either on the basis of situation of sole applicant or the total industry.
31. There should be Causal link analysis as the 10% import cannot cause injury.
32. The impact of Other factor like huge increase in production capacity should be analyzed.
33. The Public Interest test is required in Safeguard investigation and provisions to impose Provisional measures require existence of critical circumstances.
34. The imports from EU countries are already under Anti dumping duties and any double remedy should be excluded.

Views of Republic of Korea

35. The increase in import is not sudden but the result of a continuous trend. The investigation period is deliberately divided to cause distortion and exaggeration in the resulting data. The increase in import cannot be regarded as recent.
36. If the table reflecting import in relation to production is redrawn using data at yearly interval than the same will show steady upward trend.
37. Qualitative Analysis is required for V curve since April 2008. The sudden increase in import after Dec. 2008 is after decrease in previous months is not enough for Safeguard as decided in the case of Argentina –Peach Safeguard in 2003. The Panel has decided that its significance may have been that of recovery and not an increase that was significance enough for the purpose of Art. 2.1 and Art. XIX : 1(a). The investigation should cover the whole period of investigation and should not focus for a certain period.
38. The import data of first quarter should not be taken for whole financial year 2009-10.

39. The fall in Capacity Utilization is not a recent change but a trend that has been occurring since 2005.
40. There has been no actual damage inflicted on employment.
41. The comparison between Capacity and demand lacks logical evidence. The demand has been presented as an additional variable without supporting data as evidence. The relationship between capacity and demand lacks logical evidence. The capacity has been increased in anticipation of increase in demand.
42. The market trend and the fact that imported product have been steadily increasing its market share in India despite of Antidumping duty indicate that they are gaining market share in the Indian market. This is because of the fact that they are more competitive. Hence no safeguard measure is warranted.

Views of Department of Foreign Trade, Thailand

43. The initiation of investigation has not been notified to the Committee on Safeguards within 15 days and hence it is violation of Art. 12.1(a) of WTO. Hence because of procedural violation the investigation should be terminated.
44. The applicants are not major industry as they account for only 35% of total production in India. Hence alleged serious injury does not refer to a major proportion of the total Indian production.
45. There is no injury to the applicant as most of the injury indicator namely Production, Sales Production Capacity shows positive development and the Market Share has remained either Positive or stable.
46. Serious injury, if any, is not because of increased import. The same is because of overinvestment in domestic production capacity at the time of international economic difficulty.

VIEWS OF EXPORTERS

Vinythai Public Company Limited, Thailand.

47. The imports from Thailand are increasing but the impact of imports on the price of domestic industry is zero because the price of Caustic Soda from Vinythai Plc. is based on international price. The increased imports of Caustic Soda are consistent with increased Indian consumption demand. The consumption increased by 4% whereas production by 1.8% only. Hence there is import.
48. The decline in capacity utilization of domestic industry from Oct'0 to Dec'08 was due to recession, the low capacity utilization from Jan'09 is due to increased import which was caused as the domestic industry did not reduce their price to be in compliance with the international price. Further, as per the information provided in the application the percentage of the capacity utilization is more for applicant than other Indian producers and also more than Indian industry as a whole.

49. The price of Caustic Soda from Vinythai Plc. is based on international price and it is not reference to the price undercutting, price underselling, price suppression and price depression.
50. Our market share is increasing as our products quality is superior to domestic product and our products are suited not only for food industry but other industry as well. The domestic industry have more market share than imports. The sales volume of Indian industry is more than import sales and total market share of Indian producers in 85.5-97.5%.
51. The domestic industry accepts that their productivity has improved significantly, but their profitability is declining as they cannot sell their product as their price is higher than the international price in that period.
52. The increase of inventories of domestic industry can be on account of lack of sufficient plan to control their inventories.
53. The information provided in the application document shows that the number of employees has decreased since June'05-June'09 but they are not serious.
54. All the above shows that imports have not caused and threatening to cause serious injury to the domestic producers.

M/s Basic Chemical Solutions Far East Pte Ltd.

55. The increase in imports in India is due to the fact that users of Caustic Soda in India are facing shortage of supply of caustic soda especially so for the caustic soda lye. Caustic Soda is a bye product of Chlorine during Chlor-Alkali production of chlorin, edc,vcm,hcl and pvc. 1.1 metric tons of Caustic Soda is produced in only 30 pct concentration for each ton of chlorine produced. Thus production of Caustic Soda is fully dependent on production volume of chlorine. Finally the production of chlorine would depend on the sale of chlorine. Chlorine biggest end use is area of edc, vcm and pvc resins. Most of India Chlor-Alkali manufacturers are not integrated to edc, vcm and pvc and thus they have problem increasing their production of Caustic Soda because they are not expanding production to the edc, vcm and pvc. Most of the Chlor-Alkali manufacturers in India only produce merchant chlorine which has very small end market all over world including India. Merchant Chlorine end use is in area of water treatment etc.
56. Merchant Chlorine storage is very difficult, costly and dangerous. As a result chlorine production cannot be increased to support more production of Caustic Soda.
57. The end use of Caustic Soda is very wide and its market in India is very large as compared to chlorine. Caustic Soda is used in manufacturing soap, bleach, paper, metal refining etc. Thus any SG Duty will result in wide implication and hurt the users of Caustic Soda in India as they will still need to continue to import due to shortfall in domestic Caustic Soda supply.

M/s Tricon Energy Ltd., USA

58. The notice of initiation has failed to define a period of investigation and provides data for different parameters for varying periods of time from varying sources. For example Table 2 of the initiation notification reports the DGCIS data from 2005-06 up to 2007-08, IBIS data from April' 08 to June'09 and DOV data for July'09. Graph on profitability however shows the margin from 2005-06 to August'09.

59. The DG has dealt with the issue of period of investigation in the Carbon black investigation which was initiated on February 5, 1998 and the petitioner had submitted data upto Sept'97. Thus when the petitioner tried to introduce new evidence of recent events the DG refused to accept the data because “*would not be fair to change this reference period as various interested parties respond with reference to facts available during this period.....*” Similar stand was taken by DG in Flexible Slabstock Polyol and Propylene Glycol cases. Hence in this case also the period of investigation should be limited at most to April- Dec. 08 and at best April-September'08.
60. In the present case it is critical to fix the period of investigation. Or else petitioner may introduce new data beyond the reference period and interested parties may be informed accordingly.

VIEWS OF IMPORTERS/ END USERS

61. The SG Duty is not to give undue advantage to domestic producer and to ensure monopoly to domestic producer.
62. Caustic Soda is imported in liquid form as well as in solid/flakes form. The price in the invoice is always quoted on Dry MT basis. In case of liquid imports there are 2 weights – LMT and DMT. The wt on DMT basis is approx. half of LMT. It appears that to show greater volume of imports the petitioner has not converted LMT weight into DMT weight. Further to show lower prices of imports they have divided consignment price by LMT weight. Thus, the import data is misleading.
63. Lot of import data has been left out intentionally.
64. Petitioners do not constitute domestic industry as the application is filed only on the basis of data provided by 35% of domestic production. No person can be considered as domestic industry unless it submits data.
65. The panel report in the matter of Argentina – Definitive Anti Dumping Duties on Poultry from Brazil is not relevant for safeguard proceedings as safeguard law contemplates ‘major share’ whereas Anti dumping law contemplates ‘ major proportion’. Petitioners do not have locust standi to file an application under Section 8B of the Customs Tariff Act as they do not constitute Domestic industry under the law.
66. Petition is incomplete. Adjustment plan is missing and the name of known buyers have been suppressed intentionally
67. The adequacy and accuracy of data not examined (As per Rule 5(3) of Customs Tariff (Identification and Assessment of Safeguard Duty) Rules, 1997.)
68. Petitioner have requested for imposition of provisional safeguard duty. However petitioner has not brought on record in clear terms the ‘Critical Circumstances’ which warrant imposition of provisional SG Duty.(Referred to Rule 9 of Customs Tariff (Identification and Assessment of Safeguard Duty) Rules, 1997 and Article 6 of the WTO) and thus there is no case of ex parte Provisional Safeguard duty.:.
69. Petitioners are running in profit.
70. Safeguard Duty on Caustic Soda is against public interest In the case of an application filed by United Phosphorous in 1999 for imposition of SG Duty on the imports of phosphorous for which investigation was initiated on 15.9.99, DG (SG) in spite of finding of serious injury refused to recommend imposition of SG Duty on the ground of public interest. The final finding of DG was challenged before hon'ble Delhi High Court and the Hon'ble HC dismissed the WP. The Hon'ble SC too refused to interfere with the finding of DG(SG).

71. Aluminium Association of India was not included in the list of consumers which is a very major domestic consumer of Caustic Soda in India. AMAI has made a very one sided representation and figures appear to be inaccurate.
72. There is no serious injury. Import from all most all the exporting countries are subject to Anti dumping duty and cannot be the cause of serious injury to the domestic industry.
73. The increase in import of Jan. to June'09 cannot be seen in isolation. The trend was there since last five years.
74. The structural and operational deficiencies of the Caustic Soda industries are the overwhelming cause of the current condition of D.I. The injurious effect, if any, is due to domestic factor and not imports hence there is no case of SG duty as per WTO provisions and Art. 4.2(b) of AoS.
75. The safeguard duty should not be imposed as the import of the product has introduced fair competition Indian Market which otherwise is dominated by the manufacturer forming a cartel for pricing through AMAI.

Findings of the DG:

76. The case records, the replies filed by the domestic producers, users/importers, exporters and exporting nations have been analysed. Submissions made by the various parties and the issues arising there-form are dealt with at appropriate places in the findings below.

The Indian Market for Caustic Soda: A snap shot

77. **Nature of Industry:** The caustic Soda is manufactured by electrolysis of common salt. The production of caustic soda is always accompanied with production of Chlorine in fixed proportion. Both Caustic Soda and Chlorine have commercial utilities and are used in different industries. Caustic soda (sodium hydroxide) is a versatile alkali. Its main uses are in the manufacture of pulp and paper, alumina, soap and detergents, petroleum products and chemical production. Other applications include water treatment, food, textiles, metal processing, mining, glass making and others. Caustic soda is also a basic feedstock in the manufacture of a wide range of chemicals. It is used as an intermediate and a reactant in processes that produce solvents, plastics, synthetic fibres, bleach, adhesives, coatings, herbicides, dyes, inks and pharmaceuticals. It is also used to neutralise acidic waste streams and the scrubbing of acidic components from off-gases. It is used in the petroleum and natural gas industries to remove acidic materials from hydrocarbons and off-gases. In the textile sector, it is used in the chemical processing of cotton and the dying of synthetic fibres. If caustic soda is in surplus, it can be stored if sufficient capacity is available.
78. Chlorine is an essential input to the chemical industry. Of all the halogens, chlorine is by far the most abundant in nature and is the easiest to produce. More than 85% of all pharmaceuticals and more than half the products of the chemical industry depend on chlorine chemistry. These products are used in most industrial and economic sectors including:
 - i. Healthcare;
 - ii. Agro-food;
 - iii. Building;
 - iv. Textiles;

- v. Transport;
 - vi. Leisure activities;
 - vii. Cosmetics.
79. Chlorine, by its nature, is difficult to store and transport, so it is mainly used at the site where it is produced in a variety of downstream units such as those for VCM (Vinyl chloride monomer, the building block for PVC), and the plastic PVC (Polyvinylchloride). There is negligible international trade of chlorine.
80. As production of Caustic Soda cannot be delinked with the production of Chlorine, the industry is known as Chlor-Alkali industry. The demand, supply and price dynamics of both Chlorine and Caustic Soda affect health of the Industry.
81. **Indian Caustic Soda Industry in the International market:** Caustic Soda has general uses in a large number of industries. The growth of caustic soda industry is largely dependent on overall growth of manufacturing sector. The consumption of caustic soda in India is in the range of 2 million DMT per annum and the installed production capacity in India is more than 2.5 million DMT. Even though India has sufficient capacity to meet its domestic demand, approximately 7% of domestic demands were met by imports in past. China, Indonesia, Europe, Thailand, Qatar and USA are the main exporting nations to India. India does not have significant presence in export market of Caustic Soda. Indian producers have been exporting around ½% of their production.
82. The installed production capacity in India is about 20% of installed capacity of North America, 22 % of Europe and 12% of China. The market size in India has been growing and to meet the growing demand the installed capacity has also grown at the same pace leading to gradual increased production in past years. Even after gradual increase in capacity and production in past years, the Indian Caustic Soda market is less than 5% of the World Caustic Soda market.

Need for Safeguard Investigation:

83. The Alkali Manufacturers Association of India (AMAI) filed an application for imposition of Safeguard Duty on imports of Caustic Soda into India to protect the domestic producers of Caustic Soda against serious injury/threat of serious injury caused by the increased imports of Caustic Soda into India. They have also submitted that the increased import has made their industries unviable and that the industry has been running on losses. The loss in profitability and market share are causing irreparable loss and thus provisional safeguard duty should be imposed to protect domestic industry. The evidences produced by them had shown prima-facie case of threat of serious injury/ serious injury. Hence, the investigation was initiated on 20th August, 2009. During the course of investigation the applicants produced detailed evidences relating to critical circumstances and requested for imposition of provisional safeguard duty.

Can Provisional Safeguard Duty be imposed without completing the Investigation?

84. The issue to impose immediate safeguard measures was examined. It has been observed that in a number of cases world over, provisional safeguard measures have

been recommended/imposed within 30 days of initiation of the safeguard investigation. In some cases the provisional safeguard measures have been recommended on the same day as the date of initiation of the investigation. The Rule 9 of Customs Tariff (Identification And Assessment of Safeguard Duty) Rules, 1997 notified vide Notification No. 35/97-NT-Customs dated 29.07.1997 prescribes that the Director General shall proceed expeditiously with the conduct of the investigation and in critical circumstances, he may record a preliminary finding regarding serious injury or threat of serious injury. The principles governing investigations have been provided under Rule 6 of the Customs Tariff (Identification and Assessment of Safeguard Duty) Rules, which is independent of Rule 9. The Rule 15 of the Customs Tariff (Identification And Assessment of Safeguard Duty) Rules provide for refund of differential Safeguard duty in case safeguard duty imposed after conclusions of the investigations is lower than the provisional duty already imposed and collected. The harmonious reading of Rules 6, 9 and 15 of the said Rules leads to a conclusion that the Rules provide for expeditious recommendation of provisional Safeguard duty based on preliminary findings. There is also a provision for refund of the differential duty, in case it is found that the duty imposed after conclusion of investigation following natural justice as enshrined in the Rule 6, is lower than the provisional Safeguard Duty.

85. It is noted that in critical circumstances any delay in imposition of Provisional Safeguard duty may cause damage which would be difficult to repair and thus, it was considered prudent to analyze circumstances to assess whether the same falls in the category of critical circumstances.

The product under investigation:

86. The product under investigation is "Sodium Hydroxide also known as Caustic Soda in lye form". Caustic Soda is classified under sub-heading No. 2815 of Schedule I of the Customs Tariff Act 1975. Caustic Soda is chemically known as NaOH. Caustic Soda is a soapy, strongly alkaline odourless liquid widely used in diverse industrial sectors, either as a raw material or as an auxiliary chemical. It is used in manufacture of pulp and paper, newsprint, viscose yarn, staple fibre, aluminium, cotton etc. The preliminary investigation shows that the imported Caustic Soda and domestically produced Caustic Soda have similar technical characteristics, sold through the same marketing channels and can be used by the user interchangeably. Therefore, the imported Caustic Soda is considered to be 'like or directly competitive' article to domestically produced Caustic Soda.

Domestic Industry:

87. Section 8B(6)(b) of the Customs Tariff Act 1975 defines domestic industry as follows:
- (b) "*Domestic industry*" means the producers –
- (i) *as a whole of the like article or a directly competitive article in India;*
or
(ii) *whose collective output of the like article or a directly competitive article in India constitutes a major share of the total production of the said article in India.*

88. In the instant case the application has been filed by Alkali Manufacturers Association of India (AMAI), 3rd Floor, Pankaj Chambers, Preet Vihar Commercial Complex, Vikas Marg, New Delhi- 110092 for imposition of Safeguard Duty on imports of Caustic Soda. The applicant has disclosed the data of certain companies who constitute 35% of Indian production. They have also contended that 'major' does not mean more than 50%. In support of their contention they have referred to the Report of the Panel in the matter of Argentina- Definitive Anti-Dumping Duties on Poultry from Brazil. However, without going into legality of the contention made by the applicant, the safeguard investigation was initiated based on 13 (thirteen) manufacturing units of Caustic soda as domestic industry, which constitute more than 60% of the total domestic production of India. The preliminary finding regarding the 'domestic industry' is that the 13 units constitute domestic industry. These manufacturing units are:

- i. M/s Punjab Alkalies & Chemicals Ltd. (Unit I & II), Nangal Una Road, Naya Nangal, Distt. Ropar, Punjab.
- ii. M/s Siel Chemical Complex, (A unit of Mawana Sugars Ltd.),Vill. – Khadauli, Charatrampur, Rajpura, Distt- Patiala
- iii. M/s Grasim Industries Ltd., Chemical Division, P.O. – Birlagram, Nagda (M.P.)
- iv. M/s Gujarat Alkalies, and Chemicals Ltd.- Dahej, P.O. – Dahej, TaVagra, Distt - Bharuch.
- v. M/s Gujarat Alkalies and Chemicals Ltd. – Baroda, P.O.Petrochemicals, Ranoli, Baroda – 391346.
- vi. DCM Shriram, Shriram Fertiliser & Chemicals, A unit of DSCL, Kota.
- vii. Shriram Alkali & Chemicals, 749, GIDC Indl.Estate, Jhagadia, Distt – Bharuch, Gujarat – 393 110
- viii. M/s Reliance Industries, Ltd., Dahej, Dahej Mfg Div, P.O. – Dahej, Distt- Bharuch, Gujarat – 392130.
- ix. M/s DCW Ltd, Sahupuram, Distt – Tuticorin
- x. Indian Rayon, A unit of Aditya Birla, Nuvo Ltd., Junagarh – Veraval Road, Viraval, distt – Junagarh, PIN – 362012.
- xi. M/s Gujarat Fluoro Chemicals Ltd., Plot No.12-A, GIDC, Industrial Area, Dahej, Bharuch – Gujarat
- xii. M/s Kannoria Chemicals & Industries Ltd., P.O. – Renukot - 231217, Distt - Sonebhadra.
- xiii. Aditya Birla Chemicals (I) Ltd., (formerly M/s Bihar Caustic & Chemicals), Garhwa Road, At & PO. Rehla, Distt. Palamu (Jharkhand)

89. Share of these 13 manufacturing units in total production of India has been as follows:

Table-1

Share of Domestic Industry in Total Production (%)				
Quarter	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
Q 1	60	67	64	68
Q 2	60	68	66	
Q 3	62	65	65	
Q 4	63	61	71	

90. The Collective output of the above mentioned producers constitute more than 60% of the total production of Caustic Soda in India, which is a major proportion. Therefore,

the preliminary determination is that the above mentioned domestic producers constitute the domestic industry within the meaning of required and defined under Sec 8B (6) (b)(iii) of the Safeguard Duty Rules 1997.

Period of Investigation:

91. The Customs Tariff Act, 1975, the Custom Tariff (Identification and Assessment of Safeguard duty) Rules, 1997, the Agreement on Safeguard or the relevant Article XIX of GATT does not specifically define what the Period of Investigation should be. However, the issue of period of investigation has been dealt extensively in the panel's report on Argentina Footwear as well as Appellate Body Report on Argentina Footwear, which are being produced below;

"Argentina—safeguard measures on imports of Footwear; Report of the Panel

8.216 Regarding the investigation's almost exclusive reliance on end-point-to-end-point comparisons in its analysis of the changes in the situation of the industry, we have the same concerns as were noted above with regard to the "increased imports" analysis. Here we note in particular that if intervening trends are not systematically considered and factored into the analysis, the competent authorities are not fulfilling Article 4.2(a)'s requirement to analyse "all relevant factors", and in addition, the situation of the domestic industry is not ascertained in full. For example, the situation of an industry whose production drops drastically in one year, but then recovers steadily thereafter, although to a level still somewhat below the starting level, arguably would be quite different from the situation of an industry whose production drops continuously over an extended period. An end-point-to-end-point analysis might be quite similar in the two cases, whereas consideration of the year-to-year changes and trends might lead to entirely opposite conclusions.

We believe that consideration of changes over the course of the investigation period in the various injury factors is indispensable for determining whether an industry is seriously injured or imminently threatened with serious injury. An end-point-to-end-point comparison, without consideration of intervening trends, is very unlikely to provide a full evaluation of all relevant factors as required

Appellate Body Report

Note 130:

The Panel, in footnote 530 to para. 8.166 of the Panel Report, recognizes that the present tense is being used, which it states "would seem to indicate that, whatever the starting-point of an investigation period, it has to end no later than the very recent past." (emphasis added) Here, we disagree with the Panel. We believe that the relevant investigation period should not only end in the very recent past, the investigation period should be the recent past.

92. From the above it is apparent that neither the Agreement on Safeguard nor the relevant provisions of WTO provide specific definition or interpretation of the period of investigation. The Appellate Body Report has given the finding in unequivocal terms that the relevant investigation period should not only end in the very recent past; the investigation period should be the recent past. Therefore, the period after

filing of the application cannot be ignored in safeguard investigation. However, in order to meet the requirement of natural justice, it is imperative that the information received or collected after initiation of investigation is accessible to the interested parties.

93. In the instant investigation, the period starting from January 2009 to June 2009 has been considered. The information relating to the period April, 2006 to December 2008 has also been considered for comparison and trend study. Further, the figures after June 2009 have also been taken into account to make a fair and comprehensive analysis.

Methodology and Source of information:

94. For the purpose of import data reliance has been placed on DGCIS figures up to FY 2007-08 and IBIS for the subsequent period. The transaction wise details of the information have been kept in the public file. The other economic parameters relating to all manufacturers of India have been sourced from the Alkali Manufacturers Association of India (AMAI) and individual units. Further, the study report of Harriman Chemsult Ltd., a widely used journal on Chlor-Alkali Industry has also been referred. If any other information is used the source is mentioned with the information.
95. As the initiation of investigation has been done in the mid year, the annual information may not be very recent information. Therefore, for the purpose of analysis, quarterly, as well as monthly figures have been used. In order to obviate effects of seasonal variation, if any, the comparison has been made with corresponding periods of preceding years. The abbreviation Q1, Q2, Q3 and Q4 denote April-June, July-September, October-December and January-March respectively. In order to conduct trend analysis, actual monthly figures have been considered, so that sample size is reasonably large.
96. Further, while conducting analysis of economic factors for the determination of serious injury or threat of serious injury, analysis of these factors for both, the domestic industry (i.e 13 units), as well as that for all producers of India, has been done to take into account inter-unit dynamics amongst Indian industry affecting the economic factors.

Is there an increase in import?

97. **Increased Imports:** The table below gives the Quarterly import figures relating to caustic soda in lye form.

Table 2

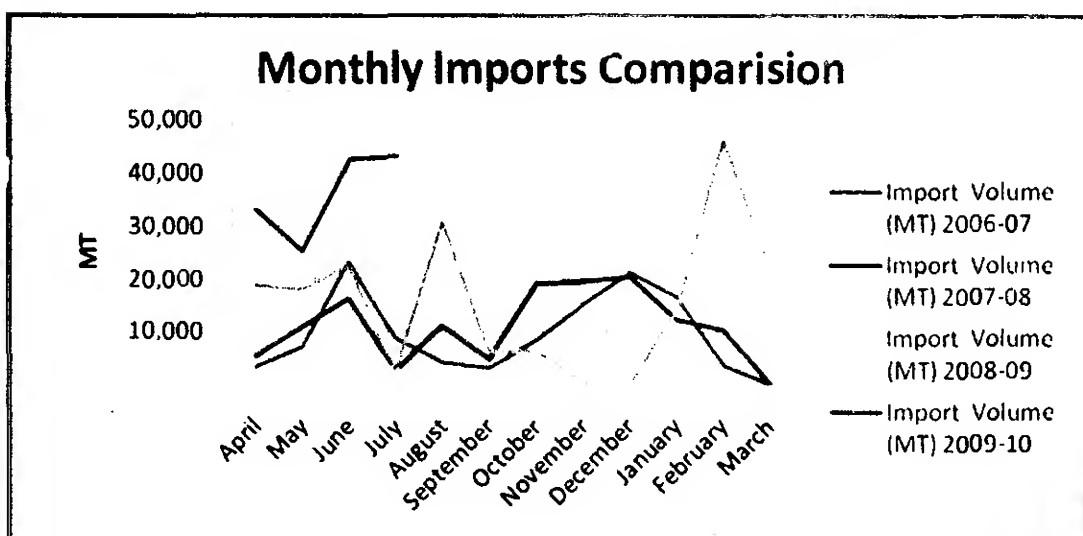
Quarterly Imports(DMT){Dry Metric Ton}				
Quarter	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
Q 1	33641	32149	59180	101227
Q 2	15762	18149	38933	
Q 3	45114	59299	6062	
Q 4	20186	22614	82173	

Table 2A

Quantity of Imports (DMT)	
July 2009	43164
July 2008	2082

98. The imports in the Q4 of 2008-09 and Q1 of 2009-10 are more than the imports which took place in any quarter in the past three years. The Q4 of 2008-09 has witnessed 263% increase in imports compared to Q4 of 2007-08. Also, Q1 of 2009-10 has witnessed 71% increase compared to Q1 of 2008-09.
99. It is seen that the total imports in 2006-07, 2007-08 and 2008-09 were 114703DMT, 132211 DMT and 186348DMT. The imports in 2009-10 crossed the 2 lac DMT mark in the month of August, 2009, i.e the imports in first 5 months of 2009-10 are more than the annual imports of past years of the entire period considered for analysis. Therefore, though the increase in import has been there in the past, the increase is significantly sharp during the recent period.
100. In order to study the past trends as well as the current trends of imports the monthly data of imports has been used. The graph below shows monthly imports trend.

Graph 1



The graph above shows that the imports during January 2009 to July 2009 have been more than the corresponding months of the previous years. It was also more than the period immediately preceding January 2009. The average monthly imports during January-June, 2009 was 30567 DMT against average monthly imports of 7499 DMT during July-Deceber, 2008 and 10566MT during January-December, 2008.

101. Therefore, the preliminary determination is that there is increase in import.
102. **Relative increase in imports:** The share of imports in the total market size of India has been as follows:

Table 3

Quarter	Share of Imports in Total Market Size (%)			
	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
Q 1	6.95	6.84	11.93	18.29
Q 2	3.43	3.94	8.10	
Q 3	9.11	12.03	1.37	
Q 4	4.32	4.75	15.57	

103. The market share of imports has gone up to 15.57% in the last quarter of 2008-09 and 18.29% in the first quarter of 2009-10. The share of imports in the year 2009, beginning from January to June, has been the highest in the period beginning from 2006-07. The market share of imports in the month of July, 2009 is 18.5%, which shows a continuous rising trend in market share of imports.
104. Therefore, the preliminary determination is that the imports have gone up in relative terms also.

Under what conditions imports are taking place?

105. The table below gives average value of imports per DMT.

Table 4

Quarter	Value of Imports (Rs./DMT)			
	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
Q 1	14512	14274	15551	14574
Q 2	14957	14635	14294	
Q 3	16109	14954	16479	
Q 4	15622	14066	12697	

Table 4A

Value of Imports (Rs./DMT)	
July 2009	12375
July 2008	21108

106. The average value of import per DMT has fallen by 9.7% in Q4 of 2008-09 and 9.4% in Q1 of 2009-10 compared to same quarters of the previous year. The falling trend continued in July, 2009 and the import price fell to Rs.12375/DMT. Further, the export prices in the international market have seen a steep fall, which has also made imports cheaper compared to domestically produced caustic soda.¹
107. Therefore, the preliminary finding is that the imports are taking place at falling prices.

Is the increase in import on account of unforeseen developments?

108. The phrase ‘unforeseen developments’ means developments which are unexpected².

¹ Refer Table 22

² The Appellate Body Report (ABR) in the matter of Argentina Foot wear case has dealt with the meaning of unforeseen developments, which is reproduced

109. The financial meltdown and recession faced by the economy is unparalleled in recent history. The global recession caused sudden deceleration in the manufacturing sector all over the world. The deceleration has been different in different countries and for different sectors of economy. The caustic soda industry has also been affected by the slowdown in the manufacturing sector. The slowdown in demand of caustic soda in North America, Europe and many parts of Asia caused steep fall in prices. For example the spot price of Caustic Soda in USA fell to one tenth of what it normally used to be.³
110. The demand of caustic soda however continued to grow except in Q3 of 2008-09 in India in spite of slow down witnessed in various countries. The slowdown in North America and Europe, determined the price trend as they have more than half of the global production capacity.
111. These developments are unexpected and are ‘unforeseen developments’. These developments caused price differences and also changed the demand supply scenario in different parts of world. It also caused a wide price gap between Indian domestic price and export price, and led to increased imports to India.

Evaluation of evidences relating to Serious Injury or Threat of Serious Injury:

Statutory framework:

112. “Serious injury” means as an injury causing overall impairment in the position of a domestic industry;⁴ and “threat of serious injury” means a clear and imminent danger of serious injury.⁵
113. The Article 4.2(a) of the Agreement on Safeguard and Annexure to Rule 8 of the Custom Tariff (Identification and Assessment of Safeguard duty) Rules, 1997 technically requires that certain listed factors as well as other relevant factors must be evaluated to determine serious injury or threat of serious injury. However, these provisions do not specify what such an evaluation must demonstrate. Any such evaluation will be different for different industries in different cases, depending on the facts of the particular case and the situation of the industry concerned. An evaluation of each listed factor will not necessarily have to show that each such factor is “declining”. In one case, for example, there may be significant decline in sales, employment and productivity which will show “significant overall impairment” in the position of the industry, and therefore will justify a finding of serious injury. In another case, a certain factor may not be declining, but the overall picture may nevertheless demonstrate “significant overall impairment” of the industry. Thus, in

³ As to the meaning of “unforeseen developments”, we note that the dictionary definition of “unforeseen”, particularly as it relates to the word “developments”, is synonymous with “unexpected”. “Unforeseeable”, on the other hand, is defined in the dictionaries as meaning “unpredictable” or “incapable of being foreseen, foretold or anticipated”. Thus, it seems to us that the ordinary meaning of the phrase “as a result of unforeseen developments” requires that the developments which led to a product being imported in such increased quantities and under such conditions as to cause or threaten to cause serious injury to domestic producers must have been “unexpected”.

⁴ Source: www.icis.com and Harriman Chemsult Ltd

⁵ Section 8B(6)(c) of the Customs Tariff Act, 1975.

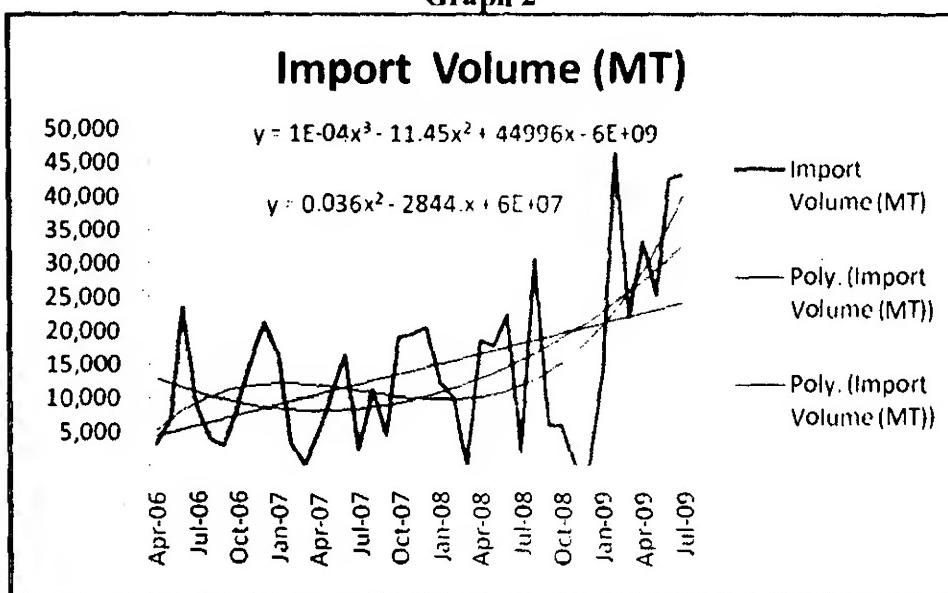
⁵ Section 8B(6)(d) of the Customs Tariff Act, 1975.

addition to a technical examination of all the listed factors and any other relevant factors, it is essential that the overall *position* of the domestic industry is evaluated, in light of all the relevant factors having a bearing on the situation of that industry.⁶

114. Accordingly, in analyzing serious injury or threat of serious injury all factors, which are mentioned in the rules as well as other factors which are relevant for determination of serious injury or threat of serious injury, have been considered. No single factor has been considered as dispositive. All relevant factors within the context of the relevant business cycle and conditions of competition which are relevant to the affected industry have been considered. The determination of serious injury or threat of serious injury is based on evaluation of the overall position of the domestic industry, in light of all the relevant factors having a bearing on the situation of that industry.
115. **Identification of relevant factors:** In order to identify the relevant factors, the practice adopted by various member nations for safeguard investigation and the factors having bearing on the performance of Caustic Soda industry was studied. The Annex to Rule 8 of Safeguard Rules mentions following factors for determination of existence of serious injury or threat of serious injury;
- i. Rate of increase of imports
 - ii. Share of the domestic market taken by increased imports
 - iii. Change in level of sales
 - iv. Production
 - v. productivity
 - vi. Capacity utilization
 - vii. Profits & losses
 - viii. Employment
116. All these factors which are mentioned in the rules have been adopted for evaluation. Besides these, certain other factors were also considered relevant for the instant case. These are
- i. Export capacity in the country of origin or export, as it stands or is likely to be in the foreseeable future and the likelihood that the capacity will be used for export to India.
 - ii. cost to sell
 - iii. Trend of domestic prices
 - iv. Profitability of ECU.
 - v. Return on employed capital
117. **Rate of increase of imports:** In order to assess the rate of increase of imports trend of imports since April 2007 has been studied by drawing trend lines of polynomials of order 2 and order 3. The trend is as shown in the chart below. The trend lines show that the rate of increase in imports is positive and the growth in imports is accelerated one. The rate of increase has gone up in year 2009.

⁶ Based on Para 139 of Argentina footwear Case Appellate Body Report Of WTO

Graph 2



118. **Share of domestic market taken by increased imports:** The table below contains share of all domestic producers taken together in domestic market.

Table -5

Share of Domestic Producers in Domestic Market (%)				
Quarter	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
Q 1	93.05	93.16	88.07	81.71
Q 2	96.57	96.06	91.90	
Q 3	90.89	87.97	98.63	
Q 4	95.68	95.25	84.43	

Table 5A

Share of Domestic Producers in Domestic Market (%)	
July 2009	79.8
July 2008	98.86

119. The table above shows that the share of domestic producers in domestic market has gone down to 81.71% in the Q1 of 2009-10, which is the least during the entire period considered for analysis. The share of domestic producers was 84.43% in Q4 of 2008-09 against 95.25%, which is 10.82% less than the corresponding quarter of 2007-08 and 14.20% less than the immediately preceding quarter i.e Q3 of 2008-09. The market share of domestic producer further fell down to 79.80% in July 2009, which was 98.86% in July 2008.
120. The increased imports have taken 10.82% and 6.36 % of market share from domestic producers in Q4 of 2008-09 and Q1 of 2009-10 respectively.
121. **Change in level of Sales:** The Table-6 is the table containing quarterly consolidated sales by all domestic producers and Table 7 contain the consolidated sales by 13 selected domestic producers.

Table 6

Consolidated Sales by all domestic producers (DMT)				
Quarter	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
Q 1	330,584	321,647	384,619	351,754
Q 2	337,714	344,480	399,305	
Q 3	336,639	342,040	370,919	
Q 4	354,842	407,860	328,600	

Table 6A

Consolidated Sales by all domestic producers (DMT)	
July 2009	190163
July 2008	195287

Table 7

Consolidated Sales by 13 selected domestic producers (DMT)				
Quarter	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
Q 1	220,370	225,570	249,983	256,423
Q 2	216,402	247,064	268,271	
Q 3	221,810	231,824	237,284	
Q 4	230,426	256,051	254,194	

Table 7A

Consolidated Sales by 13 selected domestic producers (DMT)	
July 2009	88754
July 2008	87845

122. The Consolidated Sales by all domestic producers has fallen by 19.43% in Q4 of 2008-09 compared to Q4 of 2007-08 and by 8.54% in Q1 of 2009-10 compared to Q1 of 2008-09. It is also noted that consolidated sales of all domestic producers were higher than previous corresponding quarters till Q3 of 2008-09, i.e. before the increased imports took place. This implies that sales were improving before the increased import but the sales saw downward trend in subsequent quarters. The fall in sales is in spite of growth in demand in India, which grew by 9.81% and 10.38% in Q4 of 2008-09 and Q1 of 2009-10 respectively compared to respective quarters of previous year. The growth in demand would have had positive impact on both sales and domestic prices, but imports increased the supply of caustic soda at low prices, which led to fall in domestic prices as well as fall in sales.
123. The Consolidated Sales by 13 selected domestic producers has gone down in Q4 of 2008-09 by 0.73% and gone up in Q1 of 2009-10 by 2.51% compared to the corresponding quarters. The rise in sales of 13 selected domestic producers, who are the top 13 producers in terms of their size, are on account of their reduction in Net Sales Realization⁷ to meet the price of imported caustic soda at the cost of their fall in

⁷ Refer Graph 3

- Return on Capital Employed⁸, which saw steep decline in Q1 of 2009-10. Ordinarily, increased sales result in improved profits, but the profit of 13 units fell by 98% to Rs 135 Lacs in Q1 of 2009-10 against profit of Rs. 6,462 Lacs in Q1 of 2008-09. Therefore, the improvement in sales in Q1 of 2009-10 by 13 units does not mean improvement in health of caustic soda industry. It denotes the injury faced by the 13 units in terms of loss of profitability and loss of new market in spite of reduction in prices in their efforts to meet the prices of imported caustic soda.
124. In light of above, it is noted that there is fall in cumulative sales by all domestic producers after the imports increased. This fall in sales, accompanied with the fall in prices, makes the impact of increased imports more visible.
125. **Production:** The Table-8 is the table containing quarterly consolidated gross production figures by all domestic producers and Table 9 contains the gross consolidated production by 13 selected domestic producers.

Table 8

Consolidated gross production figures by all domestic producers (DMT)				
Quarter	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
Q 1	477,312	501,907	564,452	550,847
Q 2	487,181	518,436	577,407	
Q 3	510,146	544,103	537,053	
Q 4	524,370	600,540	519,196	

Table 8A

Consolidated gross production figures by all domestic producers (DMT)	
July 2009	190163
July 2008	195287

Table 9

Gross consolidated production by 13 selected domestic producers (DMT)				
Quarter	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
Q 1	288,186	335,056	360,868	376,344
Q 2	290,756	354,925	379,758	
Q 3	316,777	352,145	351,606	
Q 4	328,025	367,597	366,989	

Table 9A

Gross consolidated production by 13 selected domestic producers (DMT)	
July 2009	128623
July 2008	126168

⁸ Refer Graph 8.

126. The consolidated production by all domestic producers in Q4 of 2008-09 has fallen by 13.54% compared to the same quarter of 2007-08. The production has also fallen down by 2.41% in Q1 of 2009-10 compared to the corresponding period of 2009-09. The production of these producers in July 2009 was 1,90,163 compared to 1,95,287 in July 2008, which shows a continuing declining trend. This declining trend in production is despite the increase in demand in Indian domestic market.
127. The consolidated production of 13 selected domestic producers in Q4 of 2008-09 is less than the Q4 of 2007-08. However, the production in Q1 of 2009-10 is more than the production in Q1 of 2008-09. The growth of 4.2% in production in Q1 of 2009-10 is on account of increase in sale by 2.5% in the market which has grown by 10.4%. Further, as discussed in para 123 above, the increase in sales is not indicative of improvement in performance of domestic producers of India. Similarly, slight increase in production also does not indicate improvement in performance, if analyzed along with the profitability and ROEC.
128. From the above, it is seen that the total production by all domestic producers have declined. This decline in total production by all domestic producers is despite growth in domestic demand. Therefore it is seen that there is a fall in cumulative production of all domestic producers even when the market size of India is growing.
129. **Capacity utilization:** The Table-10 and Table 11 is the table containing quarterly capacity and capacity utilization respectively of all domestic producers and Table-12 and Table 13 are the tables containing quarterly capacity and capacity utilization respectively of 13 selected caustic soda producers.

Table 10

Capacity (DMT) of all domestic producers				
Quarter	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
Q 1	636,961	673,558	705,797	763,583
Q 2	636,961	676,201	722,384	
Q 3	636,961	686,949	744,471	
Q 4	636,961	705,091	750,348	

Table

Capacity (DMT) of all domestic producers	
July 2009	256648
July 2008	235266

Table 11

Capacity Utilization of all domestic producers (%)				
Quarter	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
Q 1	74.94	74.52	79.97	72.14
Q 2	76.49	76.67	79.93	
Q 3	80.09	79.21	72.14	
Q 4	82.32	85.17	69.19	

Table 11A

Capacity Utilization of all domestic producers (%)	
July 2009	74.09
July 2008	85.20

Table 12

Capacity (DMT) of 13 selected caustic soda producers				
Quarter	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
Q 1	349,863	389,412	411,439	438,830
Q 2	349,863	390,072	417,924	
Q 3	349,863	400,071	426,940	
Q 4	349,863	399,239	435,600	

Table 12A

Capacity (DMT) of 13 selected caustic soda producers	
July 2009	146950
July 2008	137606

Table 13

Capacity Utilization of 13 selected caustic soda producers (%)				
Quarter	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
Q 1	82.37	86.04	87.71	85.76
Q 2	83.11	90.99	90.87	
Q 3	90.54	88.02	82.35	
Q 4	93.76	92.07	84.25	

Table 13A

Capacity Utilization of 13 selected caustic soda producers (%)	
July 2009	87.35
July 2008	91.69

130. The cumulative installed capacity of all domestic producers is growing. The increase in capacity in Q4 of 2008-09 was 45257 MT against increase in domestic demand by 51748 MT compared to the same quarter of previous year. The increase in capacity in Q1 of 2009-10 was 57786 MT against increase in domestic demand by 57433 MT compared to the same quarter of previous year. Therefore, the increase in capacity by domestic producers is in tune with the growth in domestic demand. The capacity utilization of all Indian producers taken together has fallen down by 15.98% in Q4 of 2008-09 and by 7.83% in Q1 of 2009-10.
131. The capacity utilization of selected 13 domestic producers has gone down in Q4 of 2008-09 and Q1 of 2009-10 by 7.83% and 1.95% compared to the corresponding quarters of previous year.

132. In light of the above, it is noted that there is a fall in capacity utilization. It is also seen that there would be fall in capacity utilization of all producers in cumulative terms even if growth in capacity is adjusted. However, the capacity expansions by Indian producers are natural business decisions considering growth in Indian demand. Therefore, the fall in capacity utilization is attributable to increased imports.
133. **Profits & losses:** The table below gives quarterly profits and losses. The profit in Q1 of 2009-10 has gone down by 98% compared to Q1 of 2009-10. The profit is showing downward trend since Q3 of 2008-09. The July 2009 saw losses of Rs. 1391 Lacs. This implies that the profit has been steadily falling since Q3 of 2008-09 to reach negative in the month of July, 2009. The profit in Q1 of 2009-10 is the minimum in Q1 of the past years.

Table 14

Profit & Loss of domestic industry (Rs. In Lacs)				
Quarter	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
Q 1	2,145	788	6,462	135
Q 2	2,068	2,358	9,096	-
Q 3	2,173	1,530	1,706	-
Q 4	2,345	(1,641)	1,442	-

134. In light of the above it is noted that there is a fall in profit.
135. **Employment:** The companies as well as units are multi product companies and units and thus there is no impact on employment, as apparent from the table below.

Table 15

Total Number of Employees				
Quarter	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
Q 1	3,734	3,795	3,672	3,726
Q 2	3,734	3,743	3,695	-
Q 3	3,734	3,751	3,702	-
Q 4	3,734	3,711	3,706	-

Table 15A

Total Number of Employees	
July 2009	3780
July 2008	3688

136. **Productivity:** The productivity was stagnant in Q4 of 2008-09 and increased in 2009-10.

Table 16

Productivity (Production/employee) MT per Quarter				
Quarter	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
Q 1	77	88	98	101
Q 2	78	95	103	
Q 3	85	94	95	
Q 4	88	99	99	

Table 16A

Productivity (Production/employee) MT per Month	
July 2009	34
July 2008	34.2

137. **Export capacity in the country of origin or export, as it stands or is likely to be in the foreseeable future, and the likelihood that the capacity will be used to export to India:** In order to assess the capacity available for exports in India, the capacity of North America, Europe and China has been studied. The Capacity and operating ratio since April 2008 is as follows;

Table 17
North America

Installed capacity and Surplus Capacity (North America)						
Months	08-09			09-10		
	Installed Capacity (DMT'000)	Surplus Capacity (DMT'000)	Spot Price (US\$/DMT)	Installed Capacity (DMT)	Surplus Capacity (DMT)	Spot Price (US\$/DMT)
APRIL	1178	177	540-550	1180	319	400-450
MAY	1242	112	570-600	1202	336	325-350
JUNE	1200	108	685-695	1153	265	125-200
JULY	1238	74	780-800	-	-	50-75
AUGUST	1253	125	825-840			
SEPTEMBER	1179	448	825-840			
OCTOBER	1236	173	900-1050			
NOVEMBER	1211	363	900-1050			
DECEMBER	1227	613	825-950			
JANUARY	1231	382	800-825			
FEBRUARY	1117	268	730-775			

MARCH	1229	455	680-725			
-------	------	-----	---------	--	--	--

[Source: Harriman Chemsult Ltd. and Chlor Alkali monthly report published by CCAON]

Table 18
Europe

Installed capacity and Surplus Capacity (Europe)						
Months	08-09			09-10		
	Installed Capacity (DMT'000)	Surplus Capacity (DMT'000)	Spot Price (US\$/DMT)	Installed Capacity (DMT'000)	Surplus Capacity (DMT'000)	Spot Price (US\$/DMT)
APRIL	1082	162	350-365	1100	396	435-470
MAY	1126	169	350-365	1146	344	435-470
JUNE	1085	184	350-365	1106	310	435-470
JULY	1118	156	470-495	-	-	230-270
AUGUST	1113	156	470-495	-	-	
SEPTEMBER	1081	216	470-495	-	-	
OCTOBER	1114	201	500-525	-	-	
NOVEMBER	1076	355	500-525	-	-	
DECEMBER	1113	501	500-525	-	-	
JANUARY	1146	447	610-635	-	-	
FEBRUARY	1065	288	610-635	-	-	
MARCH	1139	365	610-635	-	-	

[Source: Harriman Chemsult Ltd. and Chlor Alkali monthly report published by CCAON]

Table 19
China

Installed capacity and Surplus Capacity (China)						
Months	08-09			09-10		
	Installed Capacity (DMT'000)	Surplus Capacity (DMT'000)	Spot Asia Price (US\$/DMT)	Installed Capacity (DMT'000)	Surplus Capacity (DMT'000)	Spot Asia Price (US\$/DMT)
APRIL	2032	510	420-430	2217	556	240-260
MAY	2099	527	430-440	2291	575	250-260

JUNE	2032	510	500-520	2217	556	230-250
JULY	2099	527	580-610	2291	575	180-210
AUGUST	2099	527	580-610			
SEPTEMBER	2032	510	580-610			
OCTOBER	2099	527	490-500			
NOVEMBER	2032	510	450-480			
DECEMBER	2099	527	430-470			
JANUARY	2291	575	400-450			
FEBRUARY	2069	519	350-380			
MARCH	2291	575	270-325			

[Source: Harriman Chemsult Ltd. and Chlor Alkali monthly report published by CCAON]

138. The surplus capacity in North America, Europe and China has gone up post August, 2008 period. The surplus capacity in the first quarter of 2009-10 in North America has been 920 Thousand DMT against 397 Thousand DMT during the corresponding period in 2008-09. Similarly, the surplus capacity in Europe has been 1050 Thousand DMT in the first quarter of 2009-10 against 515 Thousand DMT during the corresponding period in 2008-09. The surplus capacity of North America, Europe and China taken together in the first quarter of 2009-10 has been 3657 Thousand DMT, which is 170% of annual market size of India. The increase in surplus capacity in North America, Europe and China during the first quarter of 2009-10 compared to the corresponding period of 2008-09 was 1198 Thousand MT, which is more than double of the total market size of India during the same quarter.
139. Therefore, the information on available capacity shows that large surplus capacity is available in the exporting nations. There is also a wide gap between the selling price, cost of sale of Caustic Soda in India and the price at which Caustic Soda is available for export in exporting nations. Therefore, it is imminent that the available capacity would be used, as is being done currently for export to India.
140. Further, the analysis of monthly surplus capacity and the monthly imports of Caustic Soda in India show a relationship between the imports and increase in surplus capacity in North America, Europe and China. The relationship also shows a lag of few months between surplus capacity and increased import, which is primarily on account of transit time. The analysis also shows that the quantity of import increases with the increase in difference between cost to sale and price at which caustic soda is available for export.
141. **Cost to sell:** The Table 20 and Table 21 contain the quarterly information of Net sales realization /DMT and cost to sale of Caustic Soda respectively. The Graph 3 is the graph plotted based on information about monthly information on Net Sales Realization and Cost to sale .The Graph 4 shows ECU cost and ECU realization. (Electrochemical unit) [ECU = Ex-factory price of 1 MT Caustic Soda + 0.88 MT Chlorine].

Table 20

Quarterly Net Sales Realization/DMT of Caustic Soda				
Quarter	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
Q 1	18,981	15,892	17,800	19,679
Q 2	18,639	15,977	20,285	
Q 3	19,105	16,132	21,117	
Q 4	19,847	14,946	21,644	

Table 20A

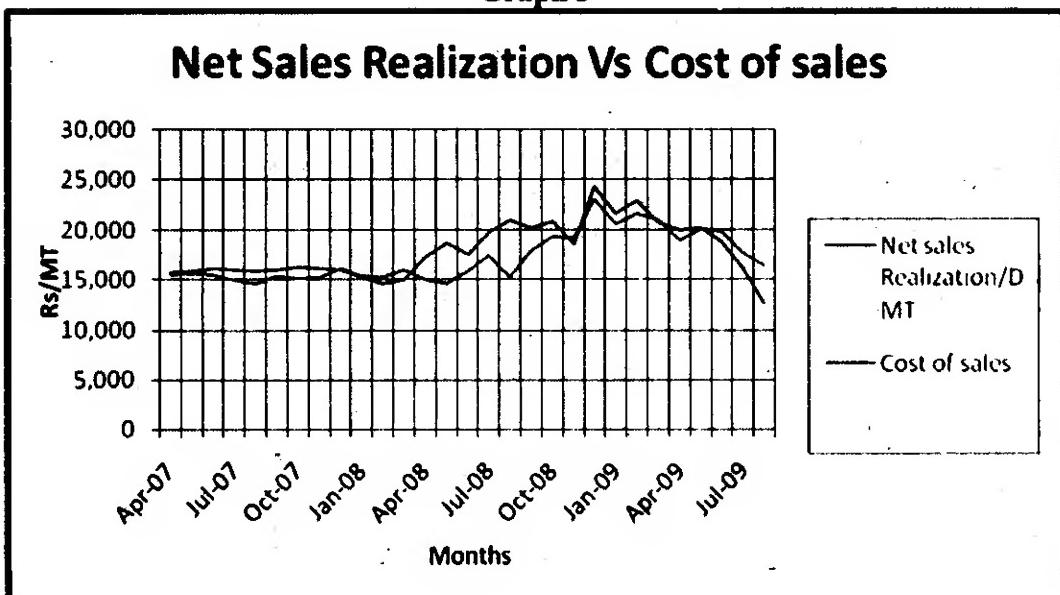
Quarterly Net Sales Realization/DMT of Caustic Soda	
July 2009	16082
July 2008	19706

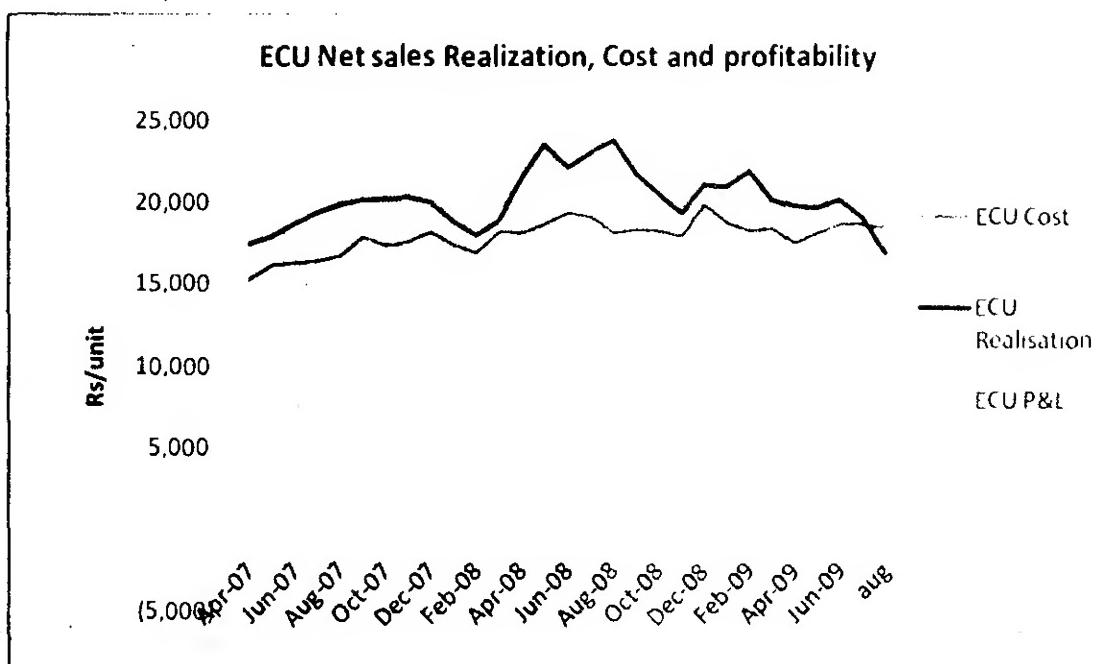
Table 21

Cost to sell at 0% profit (Rs. /DMT)				
Quarter	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
Q 1	18,007	15,542	15,215	19,627
Q 2	17,683	15,023	16,894	
Q 3	18,125	15,473	20,398	
Q 4	18,829	15,587	21,076	

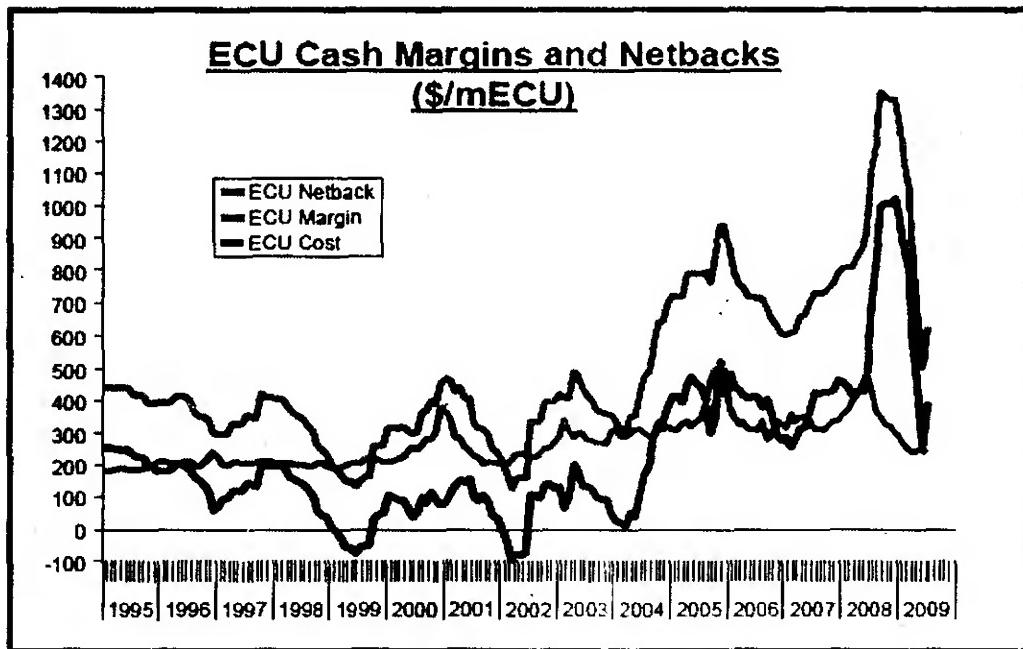
Table 21A

Cost to sell at 0% profit (Rs. /DMT)	
July 2009	17650
July 2008	17374

Graph 3

Graph 4

142. In order to compare the trend of ECU realization of industry in other countries, the ECU realization of North America has been studied, which is as follows;

Graph 5

143. The analysis of above tables and graph shows that the difference between net sales realization (NSR) and cost to sale in respect of both caustic soda and ECU has been narrowing down since January, 2009 and turned negative during June, 2009 in India.

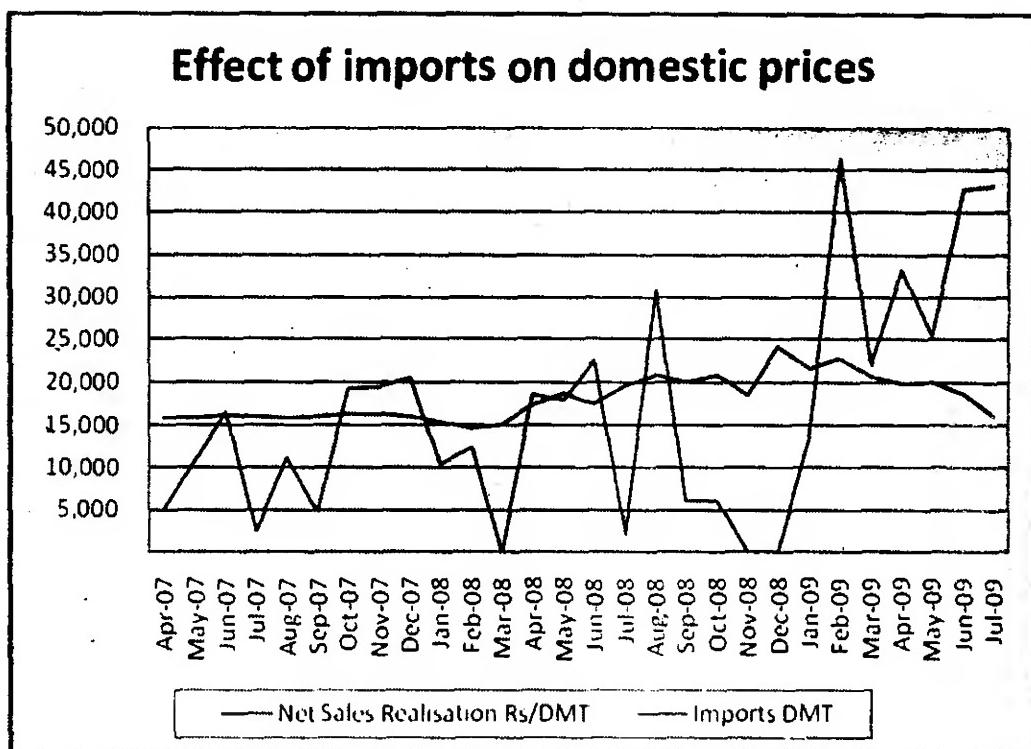
The NSR of caustic soda has been reasonably higher than the cost of sales during the entire period under examination except after January 2009 when the difference started narrowing down. Similar trend is also noticed in case of ECU realization which went to the level leading to negative difference. The Chlor-Alkali business is viable only if the ECU realization is at least equal to the cost to sale. The fall in ECU realization in July 2009 is Rs. 3999, which led to fall in ECU profitability by Rs 3531 compared to July 2008.

144. In contrast to ECU realization of India, the ECU margin (i.e the difference between net sales realization (NSR) and cost to sale in respect of both caustic soda and Chlorine) has remained positive In North America In fact, the ECU margin has been more than the ECU cost even when the prices of Caustic soda has seen steep fall. It implies that the Caustic Soda industry remained viable and profitable in North America and Europe, even at the fall of caustic soda price to near one tenth levels. This is possible on account of high realization in chlorine sales (Graph 9). Therefore, it is seen that Indian Caustic Soda Industry became unviable with fall in prices to such a low level, but the same industry in North America and Europe remained viable.
145. **Trend of domestic prices:** The table and graph below gives the relationship between imports, international prices and its effect on domestic prices.

Table 22

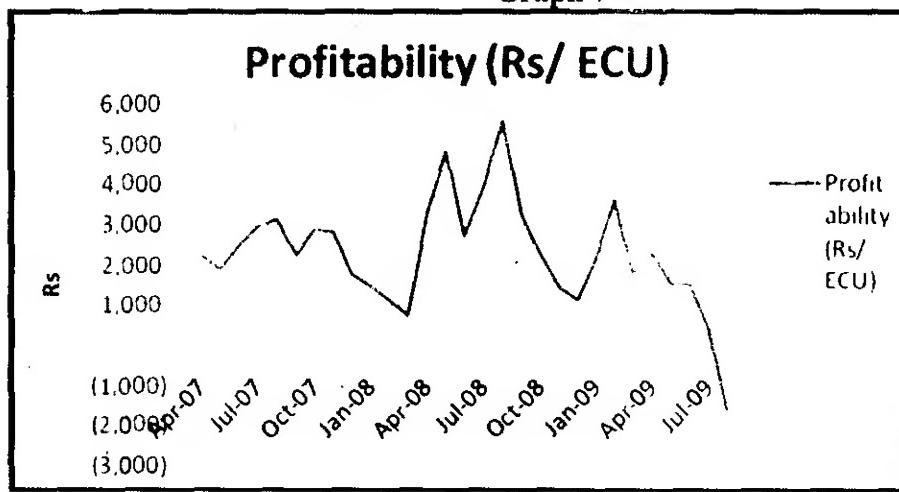
Period	Average Net Sales Realization (Rs/DMT)	Import Price(CIF) (Rs/DMT)	International Prices for Export (in US \$/DMT)		
	a		b	c	d
	(Rs/DMT)		(Rs/DMT)	North America	Europe
2005-06	14969	14142	-	-	-
2006-07	16097	15397	-	-	-
2007-08	16704	14593	-	-	-
April'08	17285	14449	550-560	420-440	365-387
May'08	18694	19079	580-600	465-485	420-450
June'08	17491	13656	-	-	-
July'08	19706	21108	830-850	620-650	500-550
August'08	20966	13691	830-850	700-740	580-635
September'08	20183	15016	830-850	710-750	490-580
October'08	20879	16479	830-850	710-750	450-470
November'08	18586	-	830-850	620-650	400-470
December'08	24283	-	830-850	600-640	400-470
January'09	21602	13544	830-850	600-640	360-450
February'09	22884	11681	820-850	600-640	310-390
March'09	20667	14297	775-810	540-560	200-310
April'09	19922	15180	225-325	200-250	200-250
May'09	20193	13932	130-160	170-200	200-240
June'09	18791	14421	90-110	90-120	170-200
July'09	16082	12375	35-75	50-60	130-150

Graph 6



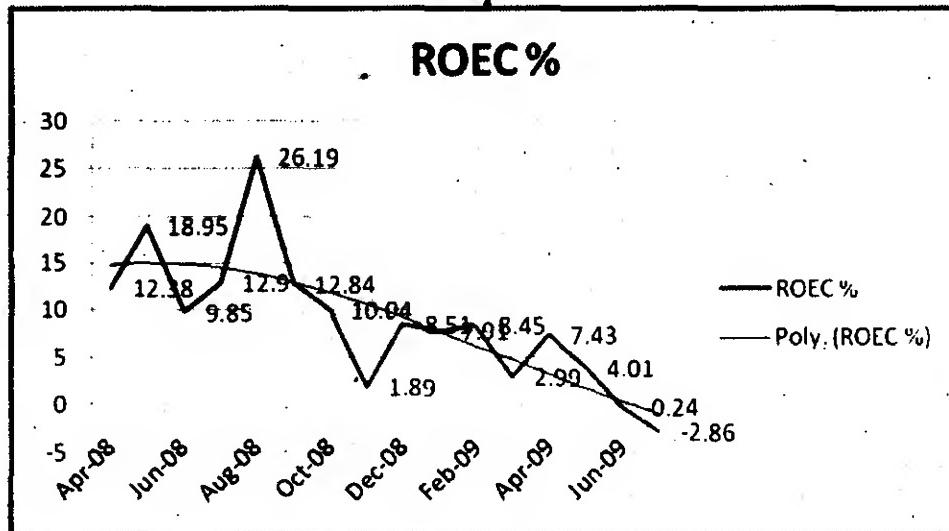
146. The table above clearly shows the existence of price difference between selling price in India and the price at which caustic soda is available in international market. As a result the landed cost of caustic soda in India went down. Besides these the caustic soda market continued to grow in India fuelling demand. The growth in demand would have had positive impact on net sales realization. But the graph above shows the depression in domestic prices of caustic soda from January 2009 when there is significant increase in imports. The fall in domestic price in July 2009 is Rs.3624 compared to price of July 2008. The domestic price in July, 2009 has gone down even below the prices of 2007-08.
147. In light of the above, it is noted that the imports have caused depression in prices in the domestic market.
148. **Profitability of ECU:** The Graph below gives profitability in terms of Rs/ECU.

Graph 7



149. It is noted that the production of caustic Soda and chlorine goes together, by virtue of Chemical reaction, which produces caustic soda and chlorine together in near fixed proportion. Therefore, analysis of profitability has been done on ECU basis, which takes price movement of both caustic soda and chlorine into consideration. The profitability of domestic industry has seen downward trend after February, 2009 to reach negative in August, 2009. The fall in profitability has been steady and steep after February, 2009, when increased import was noticed. The ECU profitability in July, 2009 fell by Rs.3531, This shows a continuous declining trend.
150. In light of the above it is noted that there is a steep downward trend in ECU realization after increase in imports.
151. **Return on Employed Capital:** The return on employed capital (ROEC) was 5.34% in 2006-07, 9.37 in 2007-08, and 10.96% in 2008-09. The ROEC fell down to 3.77% in Q1 of 2009-10. The monthly analysis the monthly ROEC is given in the graph below, which shows downward trend. The trend analysis of ROEC also shows steep declining trend after January, 2009.. The Return on Employed Capital went down by 15.76% in July, 2009. The ROEC has turned negative in June, 2009. The negative trend is found to be continuing even in August 2009.

Graph 8



152. Therefore, it is noted that there is a steep downward trend in ROEC, which has become negative after increase in imports.
153. **Analysis of fixed costs and variable costs:** The cost data of domestic industry shows that the fixed cost is approximately one fifth of total cost, and variable cost (only raw material and utility) is around four fifth. The domestic industry was able to recover the variable cost till the month of June, 2009 even after reduction in Net Sell Realization of ECU, and thus the natural response to deal with the increased import was to reduce prices and increase sales and production so that the fixed cost per unit is reduced. However, on account of increased imports at reduced prices the ECU realization got further depressed in the subsequent months (till August, 2009) to an extent that the variable cost is barely recoverable. Under these circumstances when the fixed cost is significant and depression in ECU realization of domestic industry is only to the extent of non recovery of fixed cost and reasonable profit, reduction in sales and production by refusal to respond to the falling international prices ,has not

been a prudent option. However, any further depression in ECU realization or continued depressed prices may force the domestic industries opt for reduction of sales and production or shutting down certain facilities to reduce losses.

154. In other words the option of reduction of price even to the level of incurring losses can be exercised only up to a limited period depending on the cash reserve available with the industry. Therefore, the first symptom of injury of the industry is witnessed on the profitability, followed by sales and production and then on employment. The adverse impacts of increased imports at lower prices are more visible on smaller units than on larger units on account of their competitive advantages on account of size. Further, difference between ECU realization and the cost to sale is the parameter, which alone can determine whether the industry is viable at the existing ECU realization. If ECU realization is less than the cost of sales, the production of caustic soda and chlorine cannot be on sustainable basis.
155. **Evaluation of overall position:** The analysis of individual parameters above shows that the most important indicator i.e the difference between ECU realization and cost of sale at 0% profit has turned negative after the same getting narrower post February, 2009. Therefore, the Chlor-Alkali industry has become non-viable. Further, the available surplus capacity and steep fall of caustic soda price for export in exporting nations causing wide arbitrage window shows that use of the surplus capacity for export to India is being done and is also imminent in foreseeable future. It is also noted that the exporting nations have capability to maintain such lower prices on sustainable basis as the ECU margin is positive even at a very low price on account of high realization of chlorine in their domestic market⁹. This fact also gets strength from the fact that the rate of increase in imports is also on rise.
156. The cumulative production and sales of Caustic Soda in India after January, 2009 has seen downward trend compared to the same quarters in previous year even after growth in demand and creation of capacity to meet the demand. The production and sales of the 13 units, which are relatively larger in size, have largely remained stagnant after January, 2009. This means the production and sales of smaller units have been adversely affected. The capacity utilization of Indian Industries has gone down to the minimum level in the fourth quarter of 2008-09 and first quarter of 2009-10, which clearly shows injury felt by Indian industry. The domestic prices have seen a steep fall¹⁰. The profitability and ROEC has turned negative¹¹. All these parameters show the extent of injury.
157. Based on the above, the preliminary determination is that accelerated growth of imports, loss of market share of Indian Industries to import , available capacity in the exporting nations to export caustic soda at a price much below the cost of sales has forced ECU realization by domestic producers, to a level, below the cost of sale of ECU. Also, falling sales, falling capacity utilization, falling trend in profits, profitability and ROEC are the factors showing a clear and imminent threat of serious injury.

⁹ Refer Graph 5 and para 145 in previous pages.

¹⁰ Graph 6 on previous page

¹¹ Graph 7 and Graph 8

Other factors:

158. **Exports:** The annual exports by India in 2006-07 were 17183 DMT, which is 0.86% of total domestic production. The export in 2007-08 and 2008-09 was 19311 DMT and 11573 DMT, which is 0.89% and 0.53% of domestic production respectively. The export in Q1 of 2009-10 is 1785DMT, which is 0.3 % of total domestic production. Thus, it is noticed that the export by domestic industry is quite insignificant to have any influence on performance of domestic industry.

Table 23

Year	Export Quantity (DMT)	Export as % of total production
2006-07	17183	0.86
2007-08	19311	0.89
2008-09	11573	0.53

159. **Demand of Caustic Soda and capacity of Indian producers to meet domestic demand:** The demand of caustic soda is growing. It was 5.53 Lac DMT against the capacity of 7.64 Lac DMT per quarter in the first quarter of 2009-10. The total demand in 2008-09 was 19.47 lacs DMT against the Indian capacity of 29.23 Lac DMT. This means, the Indian industry has sufficient capacity to meet the demand.

Table 24

Market Size of Domestic Industry (DMT){Total Domestic sales + Imports}				
Quarter	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
Q 1	4,83,895	4,69,885	4,96,067	5,53,500
Q 2	4,59,042	4,60,110	4,80,598	
Q 3	4,95,026	4,92,893	4,42,573	
Q 4	4,67,473	4,75,913	5,27,661	

160. **Demand and Price of Chlorine in India:** Chlorine is amongst the most active elements and is very difficult to transport. Therefore, it has negligible international trade. Hence, the prices of chlorine are more influenced by local factors than by the international factors. The consumption pattern of Chlorine, internationally, and in India is as follows;

SECTORWISE GLOBAL CHLORINE DEMAND

S.NO.	User Industry	% share in Total Chlorine consumption
1.	Vinyls	36
2.	Chloromethanes	5
3.	Chloroethanes	1
4.	Propylene Oxide	7
5.	Allylics/Epichlorohydrin	4
6.	Phosgene/Polycarbonates	10
7.	Others(CB,CPr,CPf)	5

3739 GI/09-14

8.	Inorganics, Others	32
----	--------------------	----

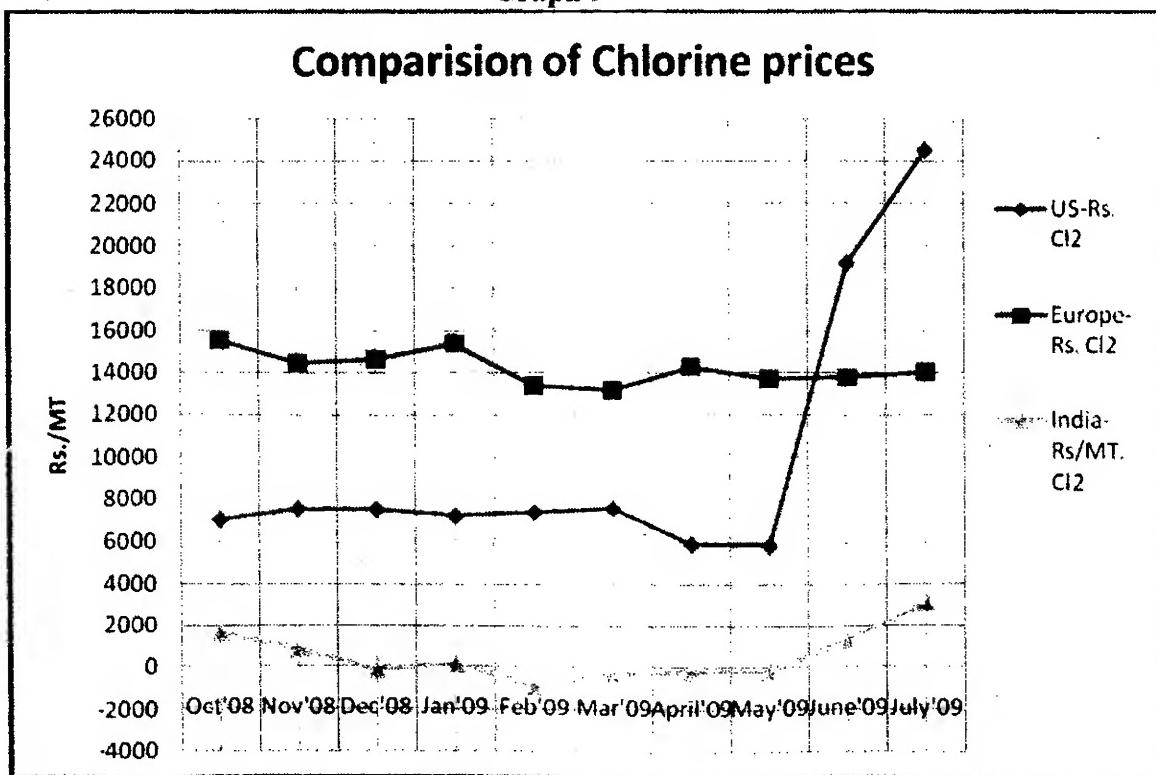
Source : Tecnon Orbichem (AMAI International Seminar on Growth of Cl2 Derivatives, May, 2008 Mumbai.)

SECTORWISE CHLORINE CONSUMPTION PATTERN IN INDIA DURING LAST THREE YEARS

S. NO.	END USER	PERCENT CONSUMPTION		
		2005-06	2007-08	2008-09
1	Vinyls (incl. PVC)	17.11	17.59	16.58
2	Organics	26.56	20.27	27.36
3	Inorganics	23.90	23.25	10.51
4	Pulp & Paper	10.29	8.27	8.32
5	CPW	7.00	11.12	14.46
6	Water Treatment	2.75	2.02	2.39
7	Pesticides / Insecticides / Weedicides	1.50	4.74	5.92
8	Pharmaceuticals	0.53	0.53	1.17
9	Dyes & Inks	0.55	0.39	0.53
10	Textiles	0.44	0.58	1.01
11	Others	9.38	11.25	11.76

161. The different consumption pattern of Chlorine in India compared to the global consumption pattern, results in its price variation. Hence, the prices of chlorine in North America, and Europe are different from that of the Indian market. The Chlorine price trend in India, Europe and North America is indicated below:

Graph 9



162. The graph above shows that there is wide difference in chlorine prices in different countries. This differential pricing of Chlorine is on account of inherent problems in their tradability and the nature of user industry of chlorine in these countries. As a result a situation is created where industries of certain countries can reduce the prices of caustic soda and still be viable by increasing the prices of chlorine. In India, it is not possible to increase the price of chlorine to a large extent because of different nature of chlorine consuming industry. The rise of chlorine prices above a level may cause increase in prices of derivatives of chlorine forcing imports of chlorine derivatives. Under these circumstances, the increased imports of caustic soda at lower prices cause depression in prices of caustic soda pushing the ECU realization below the cost, making the industry unviable.
163. **Causal Link:** The fall in sales, production, capacity utilization, profit, profitability, Return on Employed Capital, net sales realization coincide with the increase in imports. It is the increased import at lower price which caused depression in prices in India leading to loss of profitability, profit and return on employed capital. The increased import alone caused loss of market share. The entire growth of demand in Indian market has been taken by the increased imports. The increased import also took away the sales of domestic producers.
164. Therefore, the increased import is the significant cause of threat of serious injury.
165. **Critical Circumstances:** The fall in international prices of caustic soda, accompanied with the available capacities in the exporting nations to export caustic soda at a very low price, depressed the domestic prices to an extent that ECU realization is less than the cost¹². This has made Chlor-Alkali industry unviable in India. The increased imports at accelerated rate have also shown effects on sales, market share, production and capacity utilization besides pushing the domestic industry to losses. These factors are the critical circumstances. Any delay in imposition of safeguard duty in these circumstances would cause irreparable damage to domestic industries.
166. **Restructuring Plan:** The domestic industry has submitted a detailed restructuring plan. The summary of which is as follows;
- i. Conversion of mercury cells to membrane cells.
 - ii. Reduction of power consumption in membrane cells.
 - iii. Reduction in salt prices through increase in yield and productivity.
 - iv. Reduction in freight cost by use of rail transport and bulk shipment.
 - v. Reduction in finance cost through restructuring of loans.
 - vi. Productivity improvement by restructuring of work forces.
 - vii. Cost reduction through improvement in by product realizations - Hydrogen and Chlorine are by-products for the Indian producees, improvement in realization of by products would lead to reduction in cost of production of caustic soda. Efforts in this direction includes production of new or more Chlorine based product in medium & large scale, development of newer Chlorine based products; reduction in Chlorine packing and transportation cost. Further, Many Caustic Soda Industries are putting new / expanding capacities for Chloro-derivatives for

¹² Refer Graph 4

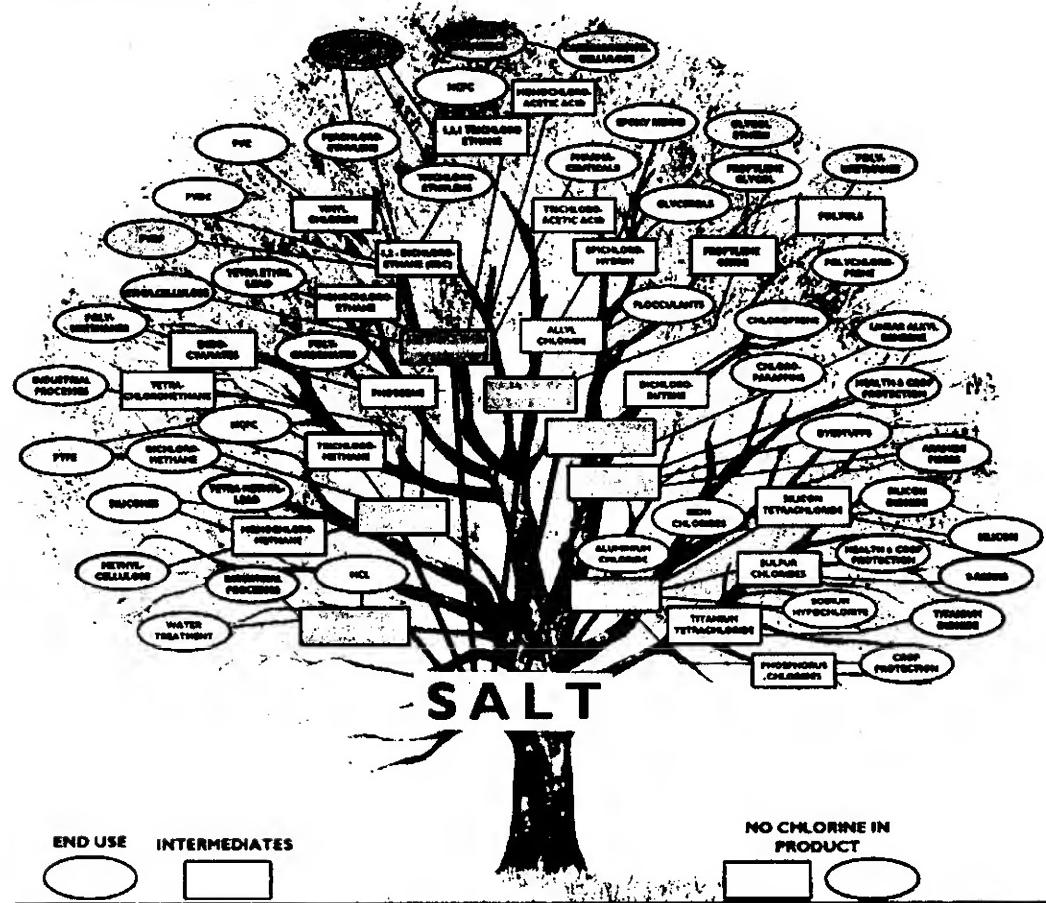
example GACL / Grasim / Kanoria / DSCL / DCW, etc. so as to increase captive demand and reduce emphasis on merchant sales for better realization.

- viii. Optimization of production capacities – With increasing demand there is scope of better production capacity utilization, which would reduce the fixed cost per MT. Further, the planned capacity expansion would result in cost saving.

167. On examination of the restructuring plan, the preliminary determination is that the restructuring plan is a viable plan.

168. **Public Interest:** The Chlor-Alkali industry provides input to a large number of industries. Caustic Soda is used in chemical, paper, soap and metal industry. It is also used as a cleaning agent. For the healthy growth of all these industries it is necessary that steady and reliable supply of caustic soda is available.

169. Chlorine is used as a disinfectant and purifier, in plastics and polymers, solvents, agrochemicals and pharmaceuticals, as well as an intermediate in manufacturing other substances where it is not contained in the final product. Chlorine is used worldwide to purify water supplies as the ultimate defense against waterborne microbiological infection. Modern day cholera and other water borne diseases in India exemplify the devastating consequences of contaminated water and poor sanitation. Chlorine also plays a critical role in the production of thousands of commercial products. Products reliant on unique properties of chlorine include everyday household items such as household bleach and swimming pool disinfectants, bullet-resistant vests, computer hardware, silicon chips and automotive parts. The uses of chlorine can be visualized from the chlorine tree as mentioned below:



Chlorine has diverse applications. About one-third of finished products are chlorine-free, although made with the help of chlorine.

170. The local availability of chlorine for these industries is crucial. It is necessary that India has a viable and healthy chlor-alkali industry for its economic development.
171. The contribution of cost of caustic soda in most of the user industry is not very high thus the impact of safeguard duty may also not be very high on the prices of final products. The impact analysis of safeguard duty on Aluminum industry and paper industry shows that 1% of safeguard duty would have effect of 0.03% (approx.) on selling price of Aluminum Metal price and about 0.06% (approx.) on selling price of paper and paper products. This is on presuming that the entire impact of safeguard duty is passed on to the consumers.
172. Further, while determining the safeguard duty, care has been taken to ensure that the tariff level is maintained only up to the limit where imports are still viable and can compete with domestic products on a level playing field. The existence of a healthy Chlor-Alkali industry is in the interest of manufacturers, end users and consumers. The Chlor-Alkali industry is the life line to chlorine based industries, as chlorine is supplied by the domestic producers only. In case, chlor-alkali industry becomes unviable, the chlorine based industries would be adversely affected on account of non supply of chlorine.
173. The preliminary determination is that there are various competing interests in economy with competing long term and short term goals. However, it is in the public interest that the Chlor-Alkali industry in India remains viable and vibrant to provide critical inputs for development of various industries in India. Under the existing circumstances, the chlor-alkali industry has become unviable. If no protection is granted at this juncture, the chlor-alkali industry, which has been providing inputs to various industries, may succumb to imports at low prices. This would also have an adverse impact on the downstream industries, especially, those which are dependent on chlorine. Therefore, imposition of safeguard duty is in the public interest.

Developing Nations:

174. The percentage of imports from developing nations has also been examined. Except China, Indonesia, Qatar, Saudi Arabia and Thailand who constitute 13%, 31%, 9%, 9% and 16% of total imports in India, other developing nations individually have less than 3% of total imports in India. Therefore, the import of product under consideration originating from developing nations except China, Indonesia, Qatar, Saudi Arabia and Thailand may not attract Safeguard Duty in terms of proviso to Section 8B of the Customs Tariff Act, 1975.

Summary of examination of submissions by Interested Parties:

175. All submissions made by the interested parties have been examined and dealt with at relevant places, while doing the analysis. A brief summary of issues raised and their analysis is as below:
- Domestic Industry:**
176. **Submission by Interested parties:** Most of the interested parties have submitted that Petitioners do not constitute domestic industry as the application is filed only on the basis of data provided by 35% of domestic production. The European Union has submitted that the investigation should be either on the basis of situation of sole applicant or the total industry.
177. **Analysis of submissions:** The submissions by interested parties have been considered and detailed analysis on the issue of 'domestic industry' is mentioned in the paragraph

87-90. Regarding the contention of the European Union that investigation should be done either on the basis of situation of the sole applicant or the total industry, it is noted that there is no provision in either the safeguard agreement or domestic law, which prescribes such a condition. In fact, in the case of 'Safeguard measures against import of certain steel products', the European Union has based its safeguard investigation on certain group of domestic producers, who were neither sole unit nor the total industry¹³. However, analysis of 13 units, which constitute more than 50% (65%) of domestic production as well as analysis of the total industry, has been done in the preliminary findings to evaluate overall position of the industry.

Period of investigation:

178. **Submission by Interested Parties:** Some of the interested parties have contended that the period of investigation should be frozen and no subsequent development should be analyzed.
179. **Analysis of submissions:** This issue has been discussed in detail in para 91-93. The contentions by the interested parties are without any legal base. It is more appropriate to consider the most recent information available so that the decision about imposition of safeguard duty is based on the most recent information.

Increased Imports:

180. **Submission by Interested Parties:** Some of the interested parties have contended that the increase in import is gradual. The Korean Government has contended that imports increased both recently and sharply since December 2008 after sudden decrease during the previous months. Similar increase was not found to be sufficient enough for imposing safeguard measures in the case of Argentina-Peach safeguard in 2003.
181. **Analysis of submissions:** The analysis of import data and trend analysis clearly shows that there has been steady growth in imports till December, 2008. After that, the imports increased at a pace which never existed in the past. The imports in the Q4 of 2008-09 and Q1 of 2009-10 increased by 263% and 71% respectively compared to the same quarters of previous year. This increase cannot be termed as gradual increase.

¹³ Excerpt from "COMMISSION REGULATION (EC) No 560/2002 of 27 March 2002 [imposing provisional safeguard measures against imports of certain steel products]"

"THE COMMUNITY PRODUCERS

(11) These industry associations are representative of a major proportion of total Community production of the like and/or directly competing products.

— Eurofer represents almost 95 % of Community production of iron and steel products. The associated industries are located in almost all Member States;

— ESTA represents about 50 % of the tube producers in the Community, including eleven major producers.

The associated industries are located in Greece, Italy, Luxembourg, the Netherlands, Spain, Sweden and the United Kingdom;

— FS represents about 50 % of Community production of carbon steel flanges. The associated industries are

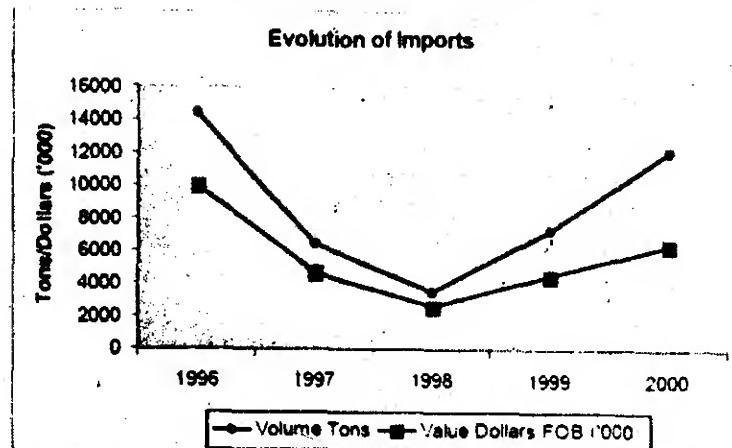
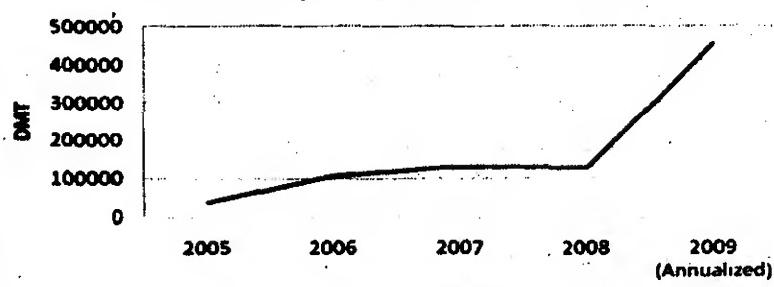
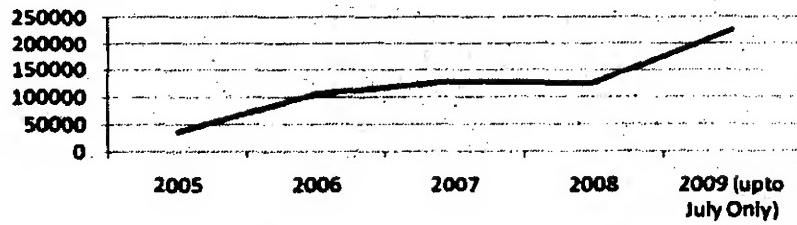
located in Germany, Italy, France, Spain and the United Kingdom;

— DCEU represents over 70 % of relevant Community production. The associated industries are located in

Austria, France, Germany, Italy and the United Kingdom.

182. Regarding the contention of the Korean Government about some decrease in import in the previous months, it is noted from the monthly analysis of imports that fluctuation in monthly import is a natural phenomenon. As far as the quoted test of increased imports as mentioned in the Argentina-Peach case is concerned, the similarity between the two cases have been studied by comparing the graph of increased imports in Caustic Soda and that of canned peach.

<Chart-3> Evolution of Imports

**Annual Imports of Caustic Soda****Annual Imports of Caustic Soda
(DMT)**

183. The comparison of the graph of import in the Argentina Peach Case and that in the instant case is different. In the Argentina Peach case the import in the recent period (year 2000) was less than the import four years ago (i.e 1996). In the current case, the import increased steadily in the past and saw a sharp increase in the recent period. The

- imports in the year 2009 (upto July) are more than the imports in any year in the past five years. Therefore, there is an increase in import.
184. **Submissions by Interested Parties:** Some of the interested parties have contended that there is increase in production and sales and thus there is no injury.
185. **Analysis of submissions:** The determination of serious injury cannot be based on analysis of one or two parameters. No parameter can be considered dispositive. The analysis has to be done based on over all evaluation of all related parameters. The analysis of all the parameters has been done and the preliminary findings are based on overall evaluation of all the parameters. The production and sales of all domestic producers taken together has declined.
186. **Submissions by Interested Parties:** Some of the interested parties have contended that the capacity utilization is more for the applicants than other Indian producers and also more than Indian industry as a whole.
187. **Analysis of submissions:** As applicants are fewer in number than the industry as a whole, the capacity utilization would be different for them. However, the analysis of the industry as a whole as well as that of 13 units has been done.
188. **Submissions by Interested Parties:** Some of the interested parties have contended that the capacity utilization, market share and profitability are showing improvement.
189. **Analysis of submissions:** The analysis of capacity utilization, market share of domestic producers and profitability shows that the all these factors are showing a negative trend.
190. **Submissions by Interested Parties:** One of the interested parties has contended that the number of employees has decreased since June'05-June 09. They have also contended that the applicants are not serious about the injury. The increase of inventories of domestic industry can be on account of lack of sufficient plan of inventory management.
191. **Analysis of submissions:** In this respect, it is noted that reduction in one parameter cannot be a ground of imposing safeguard duty nor can failure to seek government protection in the past be a ground for not warranting action in present. The industry has shown efforts and willingness to restructure their operations to get ready to face international competition.
192. **Submissions by Interested Parties:** Some of the interested parties have submitted that the sales volume of Indian industry is more than import sales, hence there is no injury.
193. **Analysis of submissions:** It is observed that it is not necessary for ‘serious injury’ or ‘threat of serious injury’ to be more import sales than sales by domestic industry. The detailed analysis of all relevant parameters relevant for determination ‘serious injury’ or ‘threat of serious injury’ has been done in the preliminary findings.
194. **Submissions by Interested Parties:** Another interested party has contended that the increase in imports in India is due to the fact that users of Caustic Soda in India are facing shortage of supply of caustic soda, especially, for the caustic soda lye. The production of Caustic Soda is fully dependent on production and sale volume of chlorine. Chlorine’s biggest end use is in the area of edc, vcm and pvc resins. Most of Indian Chlor-Alkali manufacturers are not integrated to edc, vcm and pvc and thus they have problem increasing their production of Caustic Soda because they are not expanding production to the edc, vcm and pvc. Majority of the Chlor-Alkali manufacturers in India only produce merchant chlorine which has very small end market all over world including India. Merchant Chlorine storage is very difficult, costly and dangerous. As a result chlorine production cannot be increased to support more production of Caustic Soda.

195. **Analysis of submissions:** The issue of market of chlorine and its pricing patterns has been studied. It is a fact that the consumption pattern of chlorine in India and other countries is different. The consumption pattern, in turn causes different pricing patterns in different countries. This issue has been discussed at length in para 160-162. As far as capability of market to absorb chlorine is concerned, India has sufficient capacity to absorb and consume chlorine. The price pattern of chlorine, which is dependent on demand and supply, shows that the prices of chlorine were negative when supply became more than the demand. But after December 2008, the price of chlorine is showing upward trends¹⁴ which shows that demand is more favorable than the supply. Therefore, India would have consumed all chlorine had it been produced along with caustic soda to meet increased demand in absence of increased imports.
196. **Submissions by Interested Parties:** Some of the interested parties have contended that the imposition is not in the public interest.
197. **Analysis of submissions:** No evidence has been submitted in support of the contention by the interested parties. The issue of public interest has been discussed in detail in para 168-173.
198. **Submissions by Interested Parties:** Various interested parties have submitted that there is no adjustment plan.
199. **Analysis of submissions:** It is seen that the applicants have submitted the restructuring plan, (non confidential version is available in Public File). The restructuring plan has been discussed in para 166-167.

Conclusion and Recommendation

200. In view of the findings above, the preliminary determination is that the increased imports of Caustic Soda in Lye form into India have threatened to cause serious injury to the domestic producers of Caustic Soda in Lye form. Further, there exist critical circumstances necessitating recording of preliminary findings. It will be in the public interest to impose provisional safeguard duty for a period of 200 days on imports of Caustic Soda in Lye form, into India. In arriving at the amount of safeguard duty which would be adequate to prevent threat of serious injury to the domestic industry and to facilitate positive adjustment, weighted average cost of sales at reasonable return on employed capital and average landed cost of import (taking basic customs duty, cess and anti-dumping duty, if any, into account) have been considered. Further, the calculated safeguard duty has been moderated downward to allow imports to maintain competition in domestic market in the interest of end users and consumers. Accordingly, safeguard duty at the rate of 20% ad valorem, is considered to be the minimum requirement to protect the interest of domestic industry. The same is recommended to be imposed on imports of Caustic Soda lye falling under subheading 28151200 of the First Schedule of the Customs Tariff Act, 1975.
201. As the imports from developing nations except China, Indonesia, Qatar, Saudi Arabia and Thailand do not exceed 3% individually, the import of product under

¹⁴ Refer Graph 9

consideration originating from developing nations except China, Indonesia, Qatar, Saudi Arabia and Thailand may not attract Safeguard Duty in terms of proviso to Section 8B of the Customs Tariff Act, 1975.

[F. No. D-22011/47/2009]

PRAVEEN MAHAJAN, Director General

Further Process:

- I. The information provided by various parties may be subjected to verification where ever necessary, for which they will be informed separately.
- II. A public hearing will be held in due course before making a final determination, for which the date will be indicated separately. The interested parties may offer their comments on preliminary findings during public hearing or prior to that.